संवाद

अंक: 2022/1 जनवरी-जून 2022

स्मार्ट सिटीज और महिलाएँ

राष्ट्रीय नगर कार्य संस्थान

NIUA
रा न का स

संवाद

अंक : 2022/1, जून, 2022
राष्ट्रीय नगर कार्य संस्थान

संरक्षक
हितेश वैद्य, निदेशक

संपादक
नवीन माथुर

उप-संपादक
पूनम मल्होत्रा

हिंदी अनुवादक
पूनम मल्होत्रा

सहायक अनुवादक
नवीन कुमार

डिजानर
राष्ट्रीय नगर कार्य संस्थान डिजाइन टीम

अभिन्यासकार
दीप पाहवा

टंकक
मौ. शाकिब

राष्ट्रीय नगर कार्य संस्थान
पता: प्रथम एवं द्वितीय तल, कोर 4बी,
भारत पयार्वास केंद्र, लोधी रोड, नई दिल्ली – 110003
टेलीफोन 24617517, 24617543, 24617595, 24617769
ई-मेल- niua@niua.org वेबसाइट- www.niua.in

विषय सूची

निदेशक की कलम से v

सम्पादक की कलम से vii

कार्यकारी संपादक की कलम से 1

महिलाएँ और स्मार्ट सिटीज 2

स्वास्थ्य और कल्याण को बढ़ावा देने के लिए शहरी अर्थव्यवस्थाओं का विकास करना 4

स्मार्ट सिटीज मिशन में रा.न.का.सं. की बहुआयामी भूमिका 6

सूरत स्मार्ट सिटी (गुजरात) 9

“लीडर्स इन क्लाइमेट चेंज मैनेजमेंट” (एलसीसीएम) 12

सैनिटेशन कैपिसिटी बिल्डिंग प्लेटफॉर्म (एससीबीपी) 14

सैनिटेशन कैपिसिटी बिल्डिंग प्लेटफॉर्म (एससीबीपी) की गतिविधियाँ और प्रगति (2021-22) 16

रा.न.का.सं. सुर्खियों में 18

गतिविधियाँ 20

राजभाषा गतिविधियाँ 24

लेख 31

यात्रा प्रसंग 44

कहानी संग्रह 50

कविता संग्रह 64

श्रद्धांजलि 70

सेवानिवृत्त कार्मिक 72

पत्रिका हेतु योगदान 74

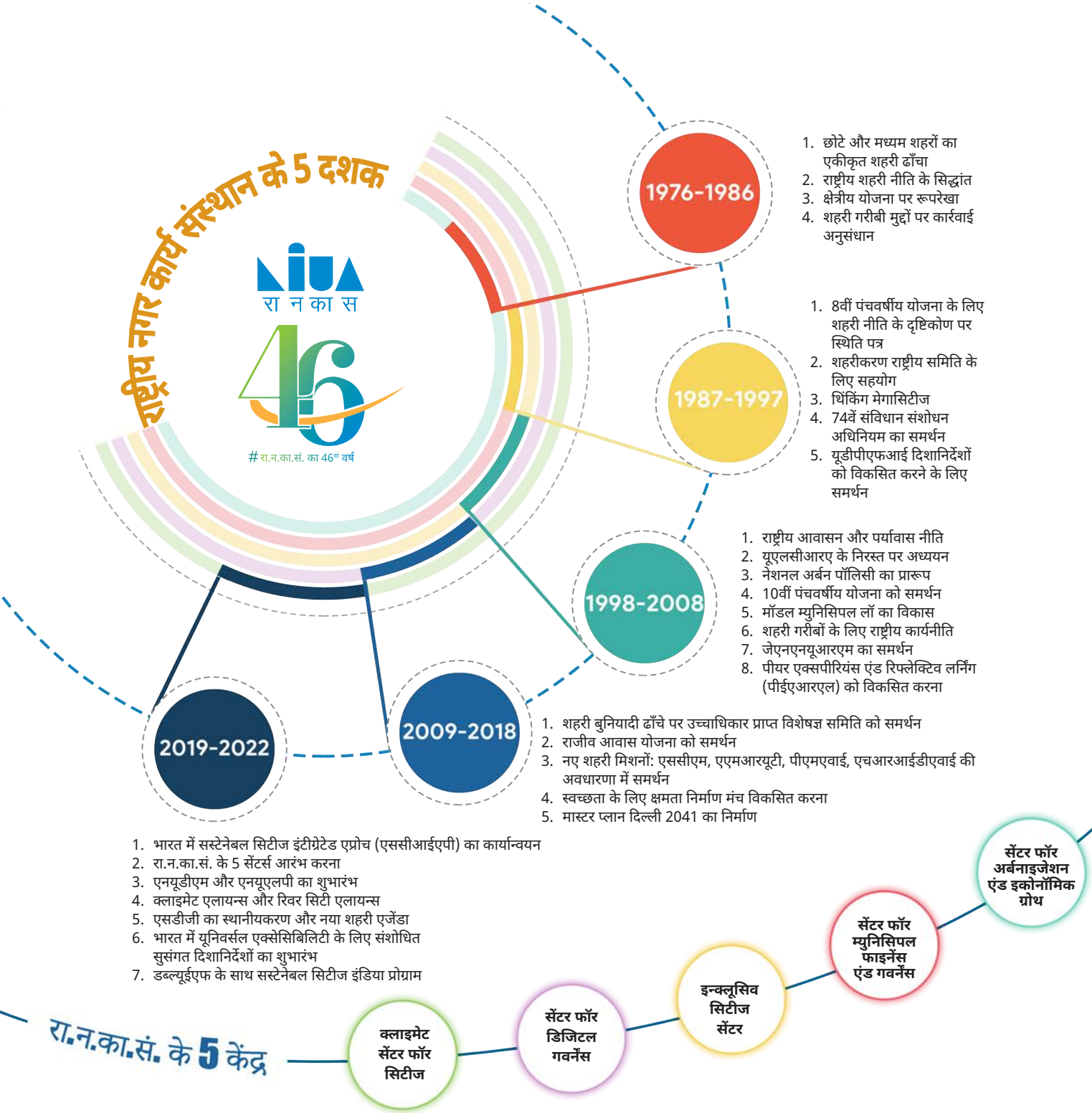
राष्ट्रीय नगर कार्य संस्थान के 5 दशक
NIUA
रा न का स
46
#रा.न.का.सं. का 46वां वर्ष
1976-1986
1. छोटे और मध्यम शहरों का एकीकृत शहरी ढाँचा
2. राष्ट्रीय शहरी नीति के सिद्धांत
3. क्षेत्रीय योजना पर रूपरेखा
4. शहरी गरीबी मुद्दों पर कार्रवाई अनुसंधान
1987-1997
1. 8वीं पंचवर्षीय योजना के लिए शहरी नीति के दृष्टिकोण पर स्थिति पत्र
2. शहरीकरण राष्ट्रीय समिति के लिए सहयोग
3. थिंकिंग मेगासिटीज
4. 74वें संविधान संशोधन अधिनियम का समर्थन
5. यूडीपीएफआई दिशानिर्देशों को विकसित करने के लिए समर्थन
1998-2008
1. राष्ट्रीय आवासन और पर्यावास नीति
2. यूएलसीआरए के निरस्त पर अध्ययन
3. नेशनल अर्बन पॉलिसी का प्रारूप
4. 10वीं पंचवर्षीय योजना को समर्थन
5. मॉडल म्युनिसिपल लॉ का विकास
6. शहरी गरीबों के लिए राष्ट्रीय कार्यनीति
7. जेएनएनयूआरएम का समर्थन
8. पीयर एक्सपीरियंस एंड रिफ्लेक्टिव लर्निंग (पीईएआरएल) को विकसित करना
2009-2018
1. शहरी बुनियादी ढाँचे पर उच्चाधिकार प्राप्त विशेषज्ञ समिति को समर्थन
2. राजीव आवास योजना को समर्थन
3. नए शहरी मिशनों: एससीएम, एएमआरयूटी, पीएमएवाई, एचआरआईडीएवाई की अवधारणा में समर्थन
4. स्वच्छता के लिए क्षमता निर्माण मंच विकसित करना
5. मास्टर प्लान दिल्ली 2041 का निर्माण
2019-2022
1. भारत में सस्टेनेबल सिटीज इंटीग्रेटेड एप्रोच (एससीआईएपी) का कार्यान्वयन
2. रा.न.का.सं. के 5 सेंटर्स आरंभ करना
3. एनयूडीएम और एनयूएलपी का शुभारंभ
4. क्लाइमेट एलायन्स और रिवर सिटी एलायन्स
5. एसडीजी का स्थानीयकरण और नया शहरी एजेंडा
6. भारत में यूनिवर्सल एक्सेसिबिलिटी के लिए संशोधित सुसंगत दिशानिर्देशों का शुभारंभ
7. डब्ल्यूईएफ के साथ सस्टेनेबल सिटीज इंडिया प्रोग्राम
रा.न.का.सं. के 5 केंद्र
क्लाइमेट सेंटर फॉर सिटीज
सेंटर फॉर डिजिटल गवर्नेंस
इन्क्लूसिव सिटीज सेंटर
सेंटर फॉर म्युनिसिपल फाइनेंस एंड गवर्नेंस
सेंटर फॉर अर्बनाइजेशन एंड इकोनॉमिक ग्रोथ

निदेशक की कलम से

प्रिय साथियों,

नमस्कार।

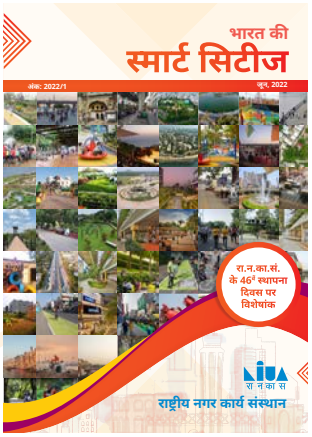

मेरा सदैव यह प्रयास रहा है कि राजभाषा का प्रचार-प्रसार एवं कार्यांवयन एक अनूठे एवं व्यवहारिक ढंग से हो, जिससे संस्थान के प्रत्येक कार्मिक को हिंदी भाषा से जुड़ाव का अनुभव हो। उनको यह अनुभव न हो कि हिंदी में कार्य करना असहज है। संस्थान की कार्य प्रक्रिया शहरी अनुसंधान से संबंधित है, अतः संस्थान की परियोजनाओं से संबंधित जानकारी को भी गृहपत्रिका 'संवाद" में शामिल किया जाता रहा है। जिसके परिणामस्वरुप "संवाद" पत्रिका का हिंदी विभाग एवं हिंदी भाषा की जानकारी रखने वालों के साथ-साथ परियोजना विशेषज्ञ भी बेहद रुचिपूर्वक अध्ययन करते हैं।

जनवरी-जून 2022 की गृहपत्रिका का विषय है-"स्मार्ट सिटीज और महिलाएँ । इस पत्रिका में आपको भारत की स्मार्ट सिटीज के विषय में रोचक जानकारी को सचित्र शामिल किया गया है। इसके साथ ही संस्थान के कार्मिकों द्वारा रचित लेख, कहानियाँ, कविताएँ एवं सचित्र यात्रा संस्मरण भी शामिल किए गए हैं। मैं उन सभी कार्मिकों को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। संस्थान में जारी परियोजनाओं से संबंधित जानकारी भी इस अंक में उपलब्ध करवाई गई है।

इसके साथ ही संस्थान की स्थापना दिवस के अवसर पर 25 जून 2022 को "भारत की स्मार्ट सिटीज" पत्रिका का प्रकाशन किया गया, जिसे भारत की 100 स्मार्ट सिटीज को प्रेषित किए जाने का लक्ष्य है। इस पत्रिका को प्रकाशित करने का उद्देश्य शहर को स्मार्ट बनाने के लिए किए गए प्रयासों की सचित्र जानकारी जन-जन तक पहुँचाना है। इसके प्रथम अंक में 9 शहरों के प्रयासों को शामिल किया गया है। इसका अगला अंक भी शीघ्र ही प्रकाशित किया जाएगा।

गृहपत्रिका का उद्देश्य संस्थान के कार्मिकों में राजभाषा में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करना एवं हिंदी में काम करने के संकोच को समाप्त करना है। मुझे आप सबको जनवरी-जून 2022 की गृहपत्रिका -"स्मार्ट सिटीज और महिलाएँ" सौंपते हुए अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। आशा है कि आपको 'संवाद" पत्रिका का यह अंक अवश्य ज्ञानवर्धक और रोचक लगेगा। 'संवाद' पत्रिका के आकर्षक साज-सज्जा एवं सामग्री हेतु "संवाद टीम" बधाई की पात्र है।

मैं ईश्वर से आप सभी की सपरिवार खुशहाल, रोगमुक्त जीवन की कामना करता हूँ ।

हितेश वैद्य
निदेशक, रा.न.का.सं.

National Institute of Urban Affairs
RESEARCH
ADVOCACY
CAPACITY DEVELOPMENT
DATA & TECHNOLOGY
PARTNERSHIPS
I believe our cities require new thinking.
CONNECTING
THE GLOBAL WITH
THE LOCAL

सम्पादक की कलम से

नमस्कार पाठकों !

जैसा कि आपको ज्ञात है, संस्थान का राजभाषा विभाग वर्ष में दो बार गृह पत्रिका "संवाद" का प्रकाशन करता है। इस छमाही जनवरी- जून 2022 संवाद का विषय "स्मार्ट सिटीज़ और महिलाएँ" है। चूंकि संस्थान में 'स्मार्ट सिटीज़' परियोजना से संबंधित कार्य जारी है, और आधुनिक शहरी भारत में महिलाओं की भागीदारी एवं उनका सशक्तिकरण अत्यंत आवश्यक है, अतः इस विषय का चयन किया गया है। हमारा संस्थान महिला-पुरुष समानता के मूल सिद्धांतों पर चलता है, इसलिए इस अंक में संस्थान की महिला कार्मिकों के लेखों को प्रमुखता दी गई है।

25 जून, 2022 को संस्थान के 46 वर्ष पूरे होने के अवसर पर संस्थान में एक समारोह का आयोजन किया गया तथा इसी माह में पोलैंड में 26-30 जून, 2022 को आयोजित "विश्व अर्बन फ़ोरम" में संस्थान की भागीदारी का सचित्र वर्णन इस अंक में किया गया है। संस्थान की परियोजना कार्यो और अन्य गतिविधियों का लेखाजोखा भी शामिल है। इस अंक में संस्थान के कार्मिकों के लेख, कहानियाँ, यात्रा प्रसंग, कविताएँ भी शामिल हैं। चूंकि हमारा संस्थान भारत सरकार के आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय का स्वायत निकाय है, इसलिए गणतंत्र दिवस, महिला दिवस, योग दिवस आदि जैसे कार्यक्रम संस्थान में आयोजित किए गए थे जिनका इस अंक में विवरण है।

हमारा संस्थान भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा जारी सभी नियमों का पूर्णरूप से पालन करता है और हमारा सदैव प्रयास रहेगा, कि राजभाषा को सदा प्राथमिकता मिलती रहे। पाठकों से अनुरोध है कि हमारी इस गृह पत्रिका "संवाद" को और बेहतर बनाने में हमारा सहयोग दें।

आपके सुझाव आमंत्रित है।

धन्यवाद, सदा स्वस्थ रहे!!

नवीन माथुर
कार्यकारी अधिकारी (राजभाषा प्रभारी)

SCHOOL
PLASTIC
SHREDDER
Dry Wast
Materials

कार्यकारी संपादक की कलम से

प्रिय पाठकों,

संस्थान की गृहपत्रिका "संवाद" के जनवरी-जून 2022 का अंक आपके अध्धयन हेतु प्रस्तुत है। हमारा सदैव यह प्रयास रहता है कि इसके प्रत्येक अंक को रोचक एवं विषयानुरूप बनाया जाए। इस अंक का विषय है-" स्मार्ट सिटीज और महिलाएँ"। गृहपत्रिका की सफलता इसके कार्मिकों की अधिकाधिक भागीदारी पर ही निर्भर करती है। संस्थान के बहुत से कार्मिकों का इस पत्रिका में सदैव ही सक्रिय योगदान रहता है। संस्थान के समस्त कार्मिकों से आग्रह है कि वे इस पत्रिका में रचना रुपी योगदान देकर इस पत्रिका की सफलता के भागीदार बनें।

वैसे तो गृहपत्रिका का प्रकाशन राजभाषा नियमों के अंतर्गत किया जाता है परंतु हमारा उद्देश्य नियम का पालन करने के साथ-साथ अपना संवैधानिक और राष्ट्रीय दायित्व को भी निभाना है। संस्थान के निदेशक श्री हितेश वैद्य के नेतृत्व में राजभाषा नियमों का शत-प्रतिशत अनुपालन किया जाता है। उनके नेतृत्व में संस्थान में अनेक हिंदी पत्रिकाओं का प्रकाशन किया गया जिनमें से "भारत की स्मार्ट सिटीज" पत्रिका का प्रकाशन विशेष रुप से उल्लेखनीय है। इस पत्रिका के प्रकाशन का उद्देश्य भारत के शहरों को स्मार्ट सिटीज बनाने के लिए किए गए प्रयासों की जानकारी राजभाषा हिंदी में प्रस्तुत करना है, जिससे भारत सरकार की इस बड़ी परियोजना की प्रगति को आम जन तक पहुँचाया जा सके है। इसके प्रथम अंक में 9 शहरों को स्मार्ट सिटीज बनाने की यात्रा का वर्णन है।

'संवाद" के इस अंक में आपको कार्मिकों द्वारा रचित कहानी, लेख, कविता एवं यात्रा संस्मरण पढ़ने को मिलेंगें। गृहपत्रिका को केवल राजभाषा के नियमों, उपनियमों तक ही सीमित न रखकर हमने इस संस्थान के कार्यकलापों से भी जोड़ने का प्रयास किया है। अत: इस पत्रिका में संस्थान में जारी परियोजनाओं से संबंधित जानकारी भी उपलब्ध करवाई गई है, जिससे संस्थान के गैर-परियोजना कार्मिकों को भी यह जानकारी उपलब्ध हो सके। इसके अतिरिक्त, जनवरी-जून 2022 की अवधि में रा.न.का.सं. में आयोजित की गई कुछ विशेष गतिविधियों तथा संबंधित सुर्खियों की भी जानकारी दी गई है।

आशा है कि आपको 'संवाद" का यह अंक उपयोगी एवं रोचक लगेगा। आपके सुझावों एवं रचनाओं का स्वागत है।

शुभकामनाओं सहित।

पूनम मल्होत्रा
कार्यकारी संपादक एवं हिंदी अनुवादक

महिलाएँ और स्मार्ट सिटीज

इला सिंह और मल्लिका नाँबीयार
हिंदी अनुवाद: पूनम मल्होत्रा एवं नवीन कुमार

तेजी से शहरीकरण के आगमन के साथ, सरकार और नागरिकों ने समान रूप से चल रही चुनौतियों का समाधान करने के लिए बेहतर समाधानों की ओर देखा है। भारत सरकार द्वारा शुरू किया गया स्मार्ट सिटीज मिशन (एससीएम) इसी दिशा में एक पहल है। यह स्मार्ट शहरों को विकसित करने के लक्ष्य के साथ एक शहरी नवीनीकरण और रेट्रोफिटिंग कार्यक्रम है जो नागरिकों के लिए जीवन की आसानी को बढ़ाता है और प्रकृति में सतत है।

शहरी परिवर्तन अपने साथ बेहतर आर्थिक अवसरों का विचार लेकर आता है, जिसके परिणामस्वरूप शहरों और शहरों में प्रवासियों का प्रवाह होता है, जिनमें से एक महत्वपूर्ण अनुपात महिलाओं का है। यह संख्या विद्यमान महिला नौकरी चाहने वालों के पहले से ही बड़े पूल में जुड़ जाती है। भले ही महिलाएँ हमारे समाज के विविध स्पेक्ट्रम का प्रतिनिधित्व करती हैं, फिर भी, वे समाज के एक संवेदनशील वर्ग का गठन करती हैं।

तो महिलाएँ स्मार्ट सिटी से क्या चाहती हैं? हर किसी की तरह, वे भी पानी की आपूर्ति, स्वास्थ्य, बिजली, स्वच्छता सुविधाएँ, कचरा प्रबंधन, कम भीड़-भाड़ वाली सड़कों जैसी बुनियादी सुविधाएँ चाहती हैं। लेकिन सार्वजनिक सुरक्षा महिलाओं के लिए सबसे महत्वपूर्ण कारक रही है, खासतौर पर जब वे सूर्यास्त के बाद बाहर निकल रही हों। अंधेरी गलियाँ और खराब रोशनी वाले क्षेत्र डराने वाले हैं, जिससे महिलाओं को रात में काम या घूमने के लिए बाहर जाने से बचना पड़ता है।

हमारे शहरों में महिलाओं के खिलाफ अपराध आज भी चिंता का विषय है। महिलाओं को लगातार अन्य सामाजिक बुराइयों के साथ बलात्कार, मारपीट, उत्पीड़न, छेड़खानी, डकैती और चोरी का शिकार होना पड़ता है। यह केवल हिंसा मात्र नहीं है, बल्कि 'भय कारक' भी है जिससे उनके मन पर और अंततः उनके द्वारा व्यतीत किए जाने वाले जीवन की गुणवत्ता पर बुरा प्रभाव पड़ता है। असुरक्षित वातावरण के संपर्क में आने का यह मनोवैज्ञानिक संकट एक महिला में स्थायी चिंता, आत्म-सम्मान में कमी, अविश्वास, आत्मविश्वास की कमी हो सकती है और इसके परिणामस्वरूप महिलाएँ निरंतर स्वयं की निगरानी करने लग जाती हैं। हिंसा को समाप्त करना महत्वपूर्ण है लेकिन पर्याप्त नहीं है। अंतर्निहित भय को भी दूर करना होगा। महिलाओं के लिए संरक्षण और सुरक्षा बढ़ाना महत्वपूर्ण है। महानगरों में केवल महिला कोच, केवल महिला विशेष बसें, और सार्वजनिक स्थानों पर पुलिस कर्मियों की तैनाती जैसे तंत्रों ने सार्वजनिक डोमेन में महिला भागीदारी को बढ़ाने में भूमिका निभाई है। लेकिन सुरक्षित शहरों के लिए हमें और अधिक की आवश्यकता होगी। अधिक स्ट्रीट लाइट, सुलभ बुनियादी ढाँचा, सुरक्षित सार्वजनिक परिवहन और इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि महिलाओं को लिंग-विशिष्ट नीतियों को चलाने के लिए सार्वजनिक योजना और कार्यान्वयन कार्यों में शामिल किया जाना है। स्मार्ट शहरों को प्रकृति में समावेशी बनाने के लिए महिलाओं के अनूठे अनुभवों को ध्यान में रखना होगा। जबकि एससीएम दिशानिर्देश 'महिलाओं, बच्चों और बुजुर्गों की सुरक्षा' को अपने मुख्य फोकस में से एक के रूप में उल्लेख करते हैं और उस दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं, इस क्षेत्र में अभी भी बहुत कुछ हासिल करने की आवश्यकता है। हाल के वर्षों में, हमने जनता की भलाई के लिए प्रौद्योगिकी के परिवर्तनकारी प्रभावों का उपयोग किया है। निगरानी और संचार तकनीक संभावित रूप से महिलाओं की सुरक्षा में काम आ सकती है। हालाँकि, हर महिला को इसका उपयोग करने का सौभाग्य प्राप्त नहीं है।

कोई भी यह पहचानने में विफल रहता है कि निगरानी संस्कृति में भी नकारात्मक पहलू है तथा नियंत्रण व शोषण करने के लिए यह एक और स्रोत बन सकता है। निगरानी और सुरक्षा किस हद तक साथ-साथ चल सकती है? इसका कोई एक-एक उत्तर नहीं है, यही कारण है कि महिलाओं को एक समरूप समूह के रूप में व्यवहार करने की अपनी समस्याएँ हैं।

ऐसी महिलाएँ हैं जो एक ओर सुशिक्षित एवं स्पष्ट हैं और दूसरी ओर वंचित महिलाएँ हैं। 'महिलाओं' के समूह के भीतर ही वर्ग, जाति या धर्म में भिन्नता एक आदर्श शहरी-जीवन पर उनके विचारों में परिलक्षित होगा। इन अलग-अलग अनुभवों को हमारे शहरों के डिजाइन में एक आवाज और जगह खोजने की आवश्यकता है। समावेशी बुनियादी ढाँचा शहर में महिलाओं को अधिक अवसर प्रदान करने में मदद कर सकता है। समावेशी बुनियादी ढाँचे वाले स्मार्ट शहर अब एक विकल्प नहीं हैं, बल्कि सतत विकास के लिए एक आवश्यकता है।

एससीएम में प्रौद्योगिकी, आईओटी, डेटा संग्रह पर भारी निर्भरता अपरिहार्य है। हालाँकि, इसमें यह सहायता ली जा सकती है कि, प्रौद्योगिकी को अंतिम साधन के रूप में नहीं माना जाए, बल्कि एक उद्देश्य को प्राप्त करने का एक साधन माना जाए अन्यथा हम सामाजिक असमानता को बढ़ाने के चक्कर में पड़ जाएँगे। विद्यमान डिजिटल विभाजन को समाप्त करना समावेशिता प्राप्त करने के लिए आवश्यक एक कदम है।

प्रौद्योगिकी, बुनियादी ढाँचा और इंटरनेट का उपयोग इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आवश्यक समाधान ला सकता है, बशर्ते विभिन्न समूहों जैसे महिलाओं को समरूप ईकाइयों के रूप में व्यवहार करने के विपरीत, कई अनुभवों को शामिल किया जाए, जिन्हें समरूप समाधानों की आवश्यकता होती है।

स्वास्थ्य और कल्याण को बढ़ावा देने के लिए शहरी अर्थव्यवस्थाओं का विकास करना

देबोलीना कुंडू, स्वास्तिका चक्रवर्ती
हिंदी अनुवाद: पूनम मल्होत्रा एवं नवीन कुमार

समग्र कल्याण सुनिश्चित करने के लिए स्वास्थ्य को सबसे महत्वपूर्ण कार्यक्षेत्रों में से एक माना जाता है। भारत में, राष्ट्रीय नीतियों और कार्यक्रमों के रूझान को ग्रामीण स्वास्थ्य प्रणाली में सुधार की दिशा में शामिल किया गया है और शहरी स्वास्थ्य से संबंधित असंख्य मुद्दों की अक्सर अनदेखी की गई है। हालाँकि, हाल के दिनों में, विशेष रूप से महामारी के बाद, सभी के लिए स्वास्थ्य क्षेत्र को मजबूत करने की आवश्यकता और भी अधिक गंभीरतापूर्वक महसूस की गई है। इसके अलावा, एक शहरी पारिस्थितिकी तंत्र बनाने का कार्य जो अपने सभी निवासियों को उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति के बावजूद गुणवत्तापूर्ण, वहन करने योग्य और समय पर स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करता है, इस तथ्य के कारण चुनौतीपूर्ण हो जाता है कि शहरी वातावरण बहुआयामी, विविध, गतिशील, जटिल और विकसित हो रहा है, जैसा कि स्वास्थ्य और कल्याण के लिए अंतर्निहित विशेषताएँ हैं।

शहरी स्वास्थ्य के संबंध में सबसे निकटस्थ मुद्दों में से एक शहरी आबादी के विभिन्न क्षेत्रों के अंतर्गत बहु स्वास्थ्य मुद्दों के उद्भव में एक साथ वृद्धि है। शहरों में बढ़ती उम्र की आबादी की बढ़ती संख्या भी शहरी क्षेत्रों में विशेष वृद्धावस्था स्वास्थ्य देखभाल समाधान के प्रावधानों के संबंध में चुनौतियों का सामना करती है। शहरी क्षेत्रों को अपनी जनसंख्या की जनसांख्यिकीय और पर्यावरणीय विशेषताओं में भिन्नता, अक्षम स्वास्थ्य सेवा वितरण प्रणाली और अनियोजित शहरीकरण की उच्च दर दोनों के कारण एक बहुआयामी रोग का सामना करना पड़ता है।

यद्यपि शहरी स्वास्थ्य प्रणाली में अक्सर स्वास्थ्य चिकित्सक और सुविधाएँ व्यापक रूप से शामिल होती है, लेकिन विभिन्न सामाजिक-आर्थिक वर्गों के बीच इनकी पहुँच एक समान नहीं होती है। उदाहरण के लिए, भौगोलिक पहुँच के बावजूद, शहरी गरीब, ट्रांसजेंडर, विशेष रूप से दिव्यांगों और बुजुर्गों जैसे कमजोर वर्गों को अक्सर सुविधाओं और निजी स्वास्थ्य सुविधाओं की उच्च लागत, माध्यमिक और तृतीयक जनता में भीड़भाड़, सार्वजनिक प्राथमिक स्वास्थ्य सुविधाओं में पर्याप्त सेवाओं और कर्मियों की कमी के कारण स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँचने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है (मूर्ति, 2000 स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, 2014)। स्वास्थ्य के सामाजिक निर्धारकों की भूमिका, यानी रहने की स्थिति, पोषण और स्वास्थ्य की स्थिति में सुधार, स्वास्थ्य परिणामों में असमानताओं को निर्धारित करने और स्वास्थ्य सेवाओं के उपयोग पर अन्य व्यवहारिक कारक अब भलीभांति स्वीकृत हैं। इसके अलावा, खुले में शौच और दूषित पानी का सेवन जैसी अस्वच्छ प्रथाएँ शहरी गरीबों (लैंसेट, 2014; डब्ल्यूएचओ, 2018) जैसी असमानता की पॉकेट में केंद्रित हैं। पर्याप्त शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं (एमओएचएफडब्ल्यू, 2013) के अभाव के कारण शहरी गरीबों के बीच स्वास्थ्य

देखभाल की माँग करने वाला अधिकांश व्यवहार निजी क्षेत्र के अंतर्गत होता है। साथ ही, ग्रामीण स्वास्थ्य सांख्यिकी 2018-19, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के अनुसार, शहरी जनसंख्या मानदंडों के अनुसार यू-पीएचसी में लगभग 44.4% की कमी है। इसलिए, सार्वजनिक क्षेत्र की शहरी स्वास्थ्य वितरण प्रणाली विशेष रूप से शहरी गरीबों के बीच छिटपुट, अपर्याप्त और अपनी पहुँच में सीमित रही है। कई एजेंसियाँ शहर और राज्य स्तर पर सार्वजनिक स्वास्थ्य, शहरी नियोजन, कार्यान्वयन और बुनियादी ढाँचे के विकास में शामिल हैं। मौजूदा संस्थागत ढाँचा जटिल है, जो अक्सर कार्यों के अतिव्यापी होने, जवाबदेही और समन्वय की कमी, समय की देरी, संसाधन की बर्बादी आदि की ओर जाता है। शहरी नियोजन और सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यों का राज्यों से शहर की सरकारों को हस्तांतरण नहीं हुआ है, जैसा कि 74वें संविधान संशोधन अधिनियम 1992 के माध्यम से उल्लिखित किया गया था।

स्वस्थ शहरी पर्यावरण पर अनुसंधान को बढ़ावा देने में रा.न.का.सं. की भूमिका

रा.न.का.सं. भारत के प्रमुख थिंक टैंक के रूप में सतत शहरीकरण और शहरी जनसंख्या के कल्याण से संबंधित मुद्दों पर अनुसंधान और अभ्यास के बीच के अन्तराल को समाप्त करता है। इसलिए, स्वास्थ्य और इसके अन्य निर्धारक रा.न.का.सं. के लिए कार्य का एक प्रमुख क्षेत्र रहे हैं। संस्थान, अन्य बातों के साथ-साथ, विभिन्न शहरी स्तरों पर स्वास्थ्य और कल्याण को बढ़ावा देने से संबंधित मामलों के प्रमुख क्षेत्रों को सामने लाने के लिए सक्रिय रूप से कार्य कर रहा है। कई परियोजनाओं द्वारा अपने कार्य के माध्यम से, रा.न.का.सं. शहरी विकास के विभिन्न पहलुओं को स्पर्श करता है जो बेहतर भविष्य के लिए भारत के शहरी परिदृश्य को बदलने के संस्थान के दृष्टिकोण का समर्थन और संवर्धन करता है। स्वस्थ शहरी पर्यावरण को बढ़ावा देने के लक्ष्य को शामिल करते हुए विभिन्न अनुसंधान परियोजनाएँ शुरू की गई हैं। सतत, स्वस्थ और सीखने वाले शहर और नेवरहुड एक सतत नेवरहुड की अवधारणा को समझने के लिए शहरी, स्वास्थ्य और शिक्षा चुनौतियों के परस्पर संबंध की जाँच करते हैं। हाल के दिनों में, यूनिसेफ ने देश में स्वास्थ्य परिदृश्य में सुधार के लिए कई अध्ययनों का समर्थन किया है। "चिल्ड्रन एंड एडोलसेंस इन अर्बन इंडिया – स्केल एंड नेचर ऑफ डेपरिवेसन" शीर्षक से एक अनुसंधान अध्ययन ने अस्तित्व और स्वास्थ्य, पोषण, पानी, स्वच्छता और स्वच्छ(वॉश), शिक्षा, रोजगार, हिंसा और अपराध, मास मीडिया के संपर्क में जैसे विभिन्न विषयगत क्षेत्रों में बच्चों और किशोरों की स्थिति का आकलन करने की कोशिश की। कोविड-19 उपयुक्त व्यवहार पर एक राष्ट्रव्यापी क्रॉस-सेक्शनल अध्ययन ने विभिन्न स्थानों, सामाजिक-आर्थिक और जनसांख्यिकीय कारकों में COVID-19 उपयुक्त व्यवहार के ज्ञान, दृष्टिकोण और अभ्यास के बारे में अंतराल को समाप्त करने की कोशिश की। राज्यों की न्यायपरस्ता रूपरेखा और राज्यों की व्यापक न्यायपरस्ता रूपरेखा विकसित करने के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्रों को उजागर करना स्वास्थ्य और अस्तित्व सहित विभिन्न विषयगत क्षेत्रों पर बच्चों, किशोरों और महिलाओं की समग्र स्थिति पर ध्यान केंद्रित करने वाला एक सतत अनुसंधान कार्यक्रम है। अर्बन इंडिया में प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल, पोषण और वाश सेवाओं के संबंध में शासन, संस्थागत और वित्तीय चुनौतियों का आकलन भी प्रक्रियारत है। यह अध्ययन स्वास्थ्य सेवाओं के वितरण और उपयोग में क्रमशः सीमावर्ती स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं और शहरी गरीबों के अनुभवों से अनुमान लगाएगा। यूपीएचसी की क्षमता और दक्षता बढ़ाने के लिए एनयूएचएम में प्रस्तावित बड़े पैमाने पर संरचनात्मक परिवर्तनों के दृष्टिकोण से, अध्ययन के निष्कर्ष शहरी गरीबों के बीच बेहतर स्वास्थ्य परिणामों के लक्ष्य की प्राप्ति के संबंध में समय पर मूल्यांकन प्रदान करेंगे।

संदर्भ

- की-मून, यू.एन.एस.बी. (2014)। जल और स्वच्छता: असमानताओं को दूर करना। लैंसेट, 383, 1359।
- https://www.thelancet.com/journals/lancet/article/PIIS0140-6736(14)60665-6/fulltext
- स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय (2014)। योजनाकारों, कार्यान्वयनकर्ताओं और साझेदारों के लिए राष्ट्रीय नगर स्वास्थ्य मिशन दिशानिर्देश मापांक से लिया गया।
- https://nhm.gov.in/images/pdf/NUHM/Orientation_module_for_planners_implementers_and_partners.pdf
- स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय। (2013)। राष्ट्रीय नगर स्वास्थ्य मिशन: कार्यान्वयन के लिए रूपरेखा।
- मूर्ति, आर.एस. (2000)। अगम्य तक पहुँचना। द लैंसेट, 356, S39।
- नेशन्स, यू। (2018)। विश्व शहरीकरण की संभावनाओं का संशोधन। संयुक्त राष्ट्र: न्यूयॉर्क, एनवाई, यूएसए।
- कार्यालय महापंजीयक और जनगणना आयुक्त, भारत, महत्वपूर्ण सांख्यिकी प्रभाग। भारत में मृत्यु के कारण, 2015-17। गृह मंत्रालय।
- रिची, एच। और रोजर, एम। (2018) - "शहरीकरण"। OurWorldInData.org पर ऑनलाइन प्रकाशित 'https://ourworldindata.org/urbanization' [ऑनलाइन संसाधन] से लिया गया।
- विश्व स्वास्थ्य संगठन। स्वच्छ भारत पहल, 2019 से स्वास्थ्य लाभ।

स्मार्ट सिटीज मिशन में रा.न.का.सं. की बहुआयामी भूमिका

नईम केरुवाला, राधा कर्मकार और पॉलोमी पॉल
हिंदी अनुवाद: पूनम मल्होत्रा एवं नवीन कुमार

शहर आर्थिक विकास के प्रमुख इंजन हैं और तेजी से शहरीकरण करने वाले देश के रूप में भारत के पास आगे बढ़ने के लिए बहुत कुछ है। 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत की 31% आबादी शहरी क्षेत्रों में निवास कर रही थी – जिसमें वर्ष 2030 तक 40% और 2050 तक 50% तक वृद्धि होने का अनुमान है। शहरी आबादी में इस वृद्धि के कारणों में आर्थिक अवसरों के लिए प्रवासन और जनसंख्या वृद्धि है। हालाँकि, भारत के शहरों में अभी भी अपने नागरिकों को जीवन की अच्छी गुणवत्ता प्रदान करने के लिए आवश्यक बुनियादी ढाँचे की कमी है। शहरों में भीड़भाड़, अपर्याप्त भौतिक बुनियादी ढाँचे, बुनियादी सुविधाओं की कमी, प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन से संबंधित समस्याएँ बढ़ रही हैं। भारत में शहरी स्थानीय निकायों (यूएलबी) में भी संसाधनों की कमी है और शहरों की बदलती आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नियमित क्षमता निर्माण की आवश्यकता होती है।

शहरी क्षेत्रों और सीमित संसाधनों में जनसंख्या के घनत्व से उत्पन्न होने वाली समस्याओं का मुकाबला करने के लिए सरकार ने उपाय किए हैं और सुविधाएँ प्रदान करने और शहरी बुनियादी ढाँचे में सुधार पर ध्यान केंद्रित करते हुए विभिन्न मिशन शुरू किए हैं। इसमें तीन स्तरीय कार्यनीति शामिल है। पहले स्तर पर, स्वच्छ भारत मिशन और प्रधानमंत्री आवास योजना जैसी सरकारी योजनाएँ गरीबी उपशमन, स्वच्छता और किफायती आवास को लक्षित कर रही हैं। दूसरे स्तर का उद्देश्य पानी, सीवरेज, जल निकासी और परिवहन जैसी बुनियादी सुविधाएँ प्रदान करना है। कायाकल्प और शहरी परिवर्तन के लिए अटल मिशन (एएमआरयूटी) भारत के 500 शहरों को ये सुविधाएँ प्रदान करने पर केंद्रित है। तीसरे स्तर पर, डिजिटल बुनियादी ढाँचे के उपयोग और संसाधनों के इष्टतम उपयोग के माध्यम से जीवन को आसान बनाने के लिए स्मार्ट शहरों का विकास किया जा रहा है। इस संबंध में, स्मार्ट सिटीज मिशन ने 100 शहरों का चयन किया है जिनके पास पहले से ही अपने नागरिकों के लिए एक निश्चित स्तर की सुविधाएँ हैं। इस मिशन के तहत कार्यान्वित की जा सकने वाली परियोजनाओं के मामले में मिशन का दायरा बड़ा है।

हालांकि शहरों को रहने योग्य और सतत बनाने के लिए सरकारी हस्तक्षेप महत्वपूर्ण हैं, यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि स्थानीय सरकारें उन्हें लागू करने की क्षमता रखती हैं।

इसके अतिरिक्त, योजनाओं के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए सरकार के अलावा अन्य संस्थानों की आवश्यकता होती है ताकि लोगों के जीवन पर उनका दीर्घकालिक प्रभाव हो सके। चौगुनी हेलिक्स समाज के चार स्तंभों - सरकार, शिक्षा, उद्योग और नागरिक समाज के बीच प्रभावी सहयोग के महत्व पर जोर देती हैं। राष्ट्रीय नगर कार्य संस्थान (रा.न.का.सं.) का उद्देश्य इन क्षेत्रों के विशेषज्ञों और अन्य कार्यकर्ताओं को शामिल करना और सहयोग बनाना है जो आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय (आ. और श.का.मं.) को प्रभावी नीतिगत निर्णय लेने और यूएलबी की क्षमताओं का निर्माण करने में सहायता करेगा।

रा.न.का.सं., भारत सरकार के अधीन एक स्वायत्त निकाय, एक प्रमुख राष्ट्रीय स्तर का थिंक टैंक है जो भारत के शहरी क्षेत्रों में लोगों के सामने आने वाली गतिशील समस्याओं का समाधान प्रदान करता है। 1976 से, रा.न.का.सं. अपनी शहरी विकास योजनाओं में भारत सरकार का मार्गदर्शन करने वाला शीर्ष निकाय रहा है। इन वर्षों में, अनुभवी वास्तुकार, शहरी योजनाकारों, अर्थशास्त्रियों और विभिन्न क्षेत्रों के पेशेवरों के अपने पूल के साथ, रा.न.का.सं. ने मुख्य रूप से टूलकिट, क्षमता निर्माण उपायों और अनुकूलित प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से शहर और राज्य स्तर की परियोजनाओं के लिए तकनीकी सहायता प्रदान की है। रा.न.का.सं. जिन प्रमुख विषयगत क्षेत्रों पर कार्य करता है उनमें शहरीकरण और आर्थिक विकास, शहरी शासन और नगरपालिका वित्त, शहरी बुनियादी ढाँचा और निर्मित पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन और लचीलापन, और सामाजिक विकास शामिल हैं। रा.न.का.सं. के पाँच केंद्रों में से प्रत्येक, अर्थात् शहरों के लिए जलवायु केंद्र, डिजिटल शासन केंद्र, समावेशी शहर केंद्र, नगर वित्त और शासन केंद्र, और शहरीकरण और आर्थिक विकास केंद्र, अपने संबंधित कार्यक्षेत्र के तहत परियोजनाओं को लागू और प्रदान करता है। संपूर्ण भारत के शहरों के लिए सेवाओं की एक श्रृंखला प्रदान करता है। रा.न.का.सं. ने विश्व आर्थिक मंच जैसे उद्योग विशेषज्ञों और विज्ञान पीओ जैसे शैक्षणिक संस्थानों के साथ अनुसंधान, नीति और अभ्यास के बीच के अंतराल को समाप्त करने के लिए प्रभावी सहयोग भी बनाया है।

शहरी क्षेत्र में विशेषज्ञों की क्षमता बनाने और ज्ञान के भंडार बनाने के उपाय करने के अलावा, रा.न.का.सं. आ. और श.का.मं. की कुछ प्रमुख पहलों को लागू करने के लिए नोडल एजेंसी के रूप में भी कार्य करता है। उनमें से एक इंडिया स्मार्ट सिटीज मिशन (एससीएम) है, जिसे 2015 में शुरू किया गया था, जिसका उद्देश्य शहरों में जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिए क्षेत्र-आधारित विकास और प्रौद्योगिकी का उपयोग करके शहरों में आर्थिक विकास को बढ़ाना है। 2015 से, देश के चयनित 100 स्मार्ट शहरों में इस मिशन के हिस्से के रूप में कई परियोजनाएँ शुरू की गई हैं। 100 शहरों को एक लंबी लेकिन कठोर चयन प्रक्रिया के माध्यम से चुना गया था, जिसे एक सर्वोत्तम अभ्यास के रूप में प्रोत्साहित किया गया है। अब तक, मिशन ने 100 स्मार्ट शहरों में 5,151 परियोजनाएँ शुरू की हैं। ये परियोजनाएँ कुशल शहरी गतिशीलता, गैर-मोटर चालित परिवहन, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, डिजिटल बुनियादी ढाँचे, सतत पर्यावरण, नागरिकों की सुरक्षा और सुरक्षा, ई-गवर्नेंस और नागरिक भागीदारी जैसे फोकस क्षेत्रों में फैले कई कार्य कर रही हैं।

इंडिया स्मार्ट सिटीज फेलोशिप प्रोग्राम 2019 में स्मार्ट सिटीज मिशन के तहत शुरू किया गया था। रा.न.का.सं. इसके कार्यान्वयन के लिए नोडल कार्यालय के रूप में कार्य करता है। कार्यक्रम में तीन बैचों में फैले करीब 120 फेलो का सामूहिक समूह है। फेलोशिप कार्यक्रम भारत के शहरी क्षेत्र में रुचि रखने वाले युवा व्यक्तियों को 100 स्मार्ट शहरों में स्थापित विशेष प्रयोजन वाहनों (एसपीवी) के साथ अनुसंधान और विकास करने के लिए एक मंच प्रदान करता है। विविध पृष्ठभूमि से आने वाले इन युवा साथियों ने अभिनव डिजिटल समाधानों के माध्यम से भारत में शहरी समस्याओं को संबोधित किया है, जो अन्य शहरों के लिए अनुकरणीय और स्केलेबल हैं और स्मार्ट सिटीज मिशन के कार्यान्वयन में सहायता करते हैं। शहरी परिवहन, अर्थव्यवस्था, नागरिक जुड़ाव, अपराध, पर्यावरण और शहरी विक्रेताओं जैसे विषयों से संबंधित ये समाधान, आ. और श.का.मं. द्वारा बनाए गए स्मार्ट कोड रिपॉजिटरी में एक ओपन-सोर्स फॉर्म में उपलब्ध हैं और इसका उपयोग किसी भी शहर द्वारा किया जा सकता है।

रा.न.का.सं. नवीनता लाने के लिए सिटी इन्वेस्टमेंट टू इनोवेट, इंटीग्रेट और सस्टेन (सीआईटीआईआईएस) में भी साझेदार हैं, जो 12 भारतीय स्मार्ट शहरों को शहरी बुनियादी ढाँचा परियोजनाओं को लागू करने में सहायता करने के लिए शुरू किया गया एक कार्यक्रम है जो नवाचार-संचालित और सतत हैं। सिटीज परिवहन, सार्वजनिक खुले स्थान, ई-गवर्नेंस और सामाजिक नवाचार जैसे क्षेत्रों में स्मार्ट सिटी एसपीवी के माध्यम से परियोजनाओं को लागू करने के लिए वित्तीय सहायता और तकनीकी विशेषज्ञता का विलय करता है। रा.न.का.सं. कार्यक्रम प्रबंधन इकाई का भी होम है, जो एसपीवी के साथ-साथ आ. और श.का.मं. के साथ मिलकर कार्य करता है।

रा.न.का.सं. भारतीय शहरों में जलवायु परिवर्तन के कारण उत्पन्न होने वाली समस्याओं से निपटने के लिए ज्ञान और क्षमता निर्माण सेवाएँ भी प्रदान करता है। शहरी बुनियादी ढाँचे को डिजाइन करने के लिए शहरी बुनियादी ढाँचे को

डिजाइन करने के लिए यूएलबी की क्षमताओं को मजबूत करने के लिए रा.न.का.सं. में क्लाइमेट सेंटर फॉर सिटीज (सी-क्यूब) की स्थापना की गई है, जो आज शहरी विकास के क्षेत्र में एक आवश्यकता है। भारत में जलवायु कार्यों को संस्थागत बनाने के लिए आ. और श.का.मं. और सी-क्यूब के बीच साझेदारी के तहत क्लाइमेट स्मार्ट सिटीज असेसमेंट फ्रेमवर्क (सीएससीएएफ) विकसित किया गया है। फ्रेमवर्क भारत में 128 शहरों के जलवायु प्रदर्शन और जलवायु तैयारी का आकलन करता है, जिनमें से 100 स्मार्ट सिटीज मिशन के तहत स्मार्ट सिटी हैं। सीएससीएएफ ने जलवायु डेटा वेधशाला विकसित करने में मदद की है, जिसे सी-डॉट के रूप में भी जाना जाता है, जो 128 शहरों से प्रमुख जलवायु-संबंधी डेटा संकलित करता है।

इसके अतिरिक्त, रा.न.का.सं. ने नेशनल अर्बन इनोवेशन स्टॉक (एनयूआईएस) के विकास के लिए आ. और श.का.मं. और स्मार्ट सिटीज मिशन के साथ साझेदारी की है। इसका उद्देश्य डिजिटल बुनियादी ढाँचा तैयार करना है जो गैर सरकारी संगठनों, उद्योग विशेषज्ञों, प्रशासकों, नागरिक समाज और नागरिकों द्वारा उपयोग के लिए उपलब्ध होगा। रा.न.का.सं. ने स्मार्ट सिटी मिशन वेबिनार श्रृंखला में भी योगदान दिया है, जिसे शहरी क्षेत्र में विभिन्न विशेषज्ञों के बीच पीयर-टू-पीयर सीखने को बढ़ावा देने के लिए डिज़ाइन किया गया है। आगे बढ़ते हुए, रा.न.का.सं. ने ईज ऑफ लिविंग इंडेक्स, म्यूनिसिपल परफॉर्मेंस इंडेक्स, सीएससीएएफ और डेटा मैच्योरिटी असेसमेंट फ्रेमवर्क के लिए शहरों से डेटा एकत्र करने के लिए एक एकीकृत प्लेटफॉर्म बनाने की योजना बनाई है, जिसका उपयोग आ. और श.का.मं. द्वारा शहरों को रैंक करने के लिए किया जाता है। रा.न.का.सं. इन सूचकांकों में उपयोग किए गए सभी संकेतकों को संकलित करने के लिए एक एकीकृत डेटा विश्लेषण ढाँचा तैयार करेगा, जिसके लिए शहर एक एकीकृत प्लेटफॉर्म पर डेटा एकत्र और जमा कर सकते हैं।

सार्वजनिक नीति को सूचित करने और क्षमता निर्माण और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से नीति को क्रियान्वित करने के लिए रा.न.का.सं. उद्योग के विशेषज्ञों और शिक्षाविदों के साथ कार्यरत है। इसका एक उदाहरण नेशनल अर्बन लर्निंग प्लेटफॉर्म (एनयूएलपी) है, जो रा.न.का.सं. पर आधारित है, जो स्थानीय स्तर पर सरकारी अधिकारियों के लिए पाठ्यक्रमों के माध्यम से ज्ञान के प्रसार के लिए महत्वपूर्ण है। इस मंच में शामिल कुछ शहर स्मार्ट सिटीज हैं।

स्मार्ट सिटीज मिशन के तहत कुछ प्रमुख कार्यक्रमों के लिए नोडल एजेंसी या परियोजना प्रबंधन इकाई के रूप में कार्य करके रा.न.का.सं. ने एक थिंक टैंक से एक संस्थान तक अपनी भूमिका का विस्तार किया है जो जमीनी परियोजना कार्यान्वयन के माध्यम से सक्रिय रूप से ज्ञान पैदा कर रहा है और स्थानीय अभिनेताओं के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के साथ प्रभावी और प्रभावशाली साझेदारियाँ बना रहा है। स्मार्ट सिटीज मिशन के तहत रा.न.का.सं. के नेतृत्व वाली परियोजनाओं ने संस्थान को भारतीय शहरों और स्थानीय पदाधिकारियों के साथ सीधे जुड़ने, अर्बन इंडिया की आवश्यकताओं पर गहरी, विश्वसनीय अंतर्दृष्टि प्राप्त करने, उपयुक्त समाधान तैयार करने और अपनी विशेषज्ञता के साथ दूसरों का मार्गदर्शन करने के लिए एक प्लेटफॉर्म प्रदान किया है।

सूरत स्मार्ट सिटी (गुजरात)

- दिनांक 25 जून, 2015 को भारत में स्मार्ट सिटीज मिशन की योजना घोषित की गई थी। जिसके अंतर्गत सम्पूर्ण देश से चयनित कुल 100 शहरों में से पहले चरण में श्रेष्ठ 20 शहरों की सूची में सूरत शहर को चुना गया था।

- सूरत शहर में स्मार्ट सिटी मिशन के अंतर्गत एरिया डेवलपमेंट, इकोनॉमिक डेवलपमेंट, रिन्युएबल एनर्जी, एनवायरन्मेंट डेवलपमेंट, हेरिटेज रिस्टोरेशन, एफोर्डेबल हाउसिंग, आई.टी.कनेक्टिविटी और डिजिटलाइजेशन, नैनो मोटरराइड्ज ट्रान्सपोर्ट, सिवरेज, सॉलिड वेस्ट मेनेजमेन्ट, स्ट्रॉम-वॉटर मैनेजमेन्ट, अर्बन ट्रांसपोर्ट, वॉटर सप्लाई सेक्टर के अंतर्गत कुल अनुमानित 3003.29 करोड़ ₹ के उप-घटकों सहित 82 प्रोजेक्ट्स की योजनाऐं बनाई गई थी। जिनके अंतर्गत एमसीएम 1000 करोड़ ₹, पीएमएवाई 249.05- करोड़ ₹, अमरूत रू. 111.24 करोड़ ₹, पीपीपी 816.63 करोड़ ₹, एमएनआरई 0.77 करोड़ ₹, एमबीएम 36.25 करोड़ ₹ एमजेएमएमएसवीवाई 361.27 करोड़ ₹ एसएमसी को 428.08 करोड़ रूपयों का बजट उपलब्ध कराया गया है।

- स्मार्ट सिटी मिशन के अंतर्गत सूरत स्मार्ट सिटी को कुल 1000 करोड़ ₹ प्राप्त होंगे। जिसमें अब तक 500 करोड़ ₹ की केंद्रीय सहायता में से रू. 490 करोड़ ₹ यहाँ के लिए आवंटित किए जा चुके हैं, जिनका पूरा सदुपयोग किया गया है। साथ ही गुजरात सरकार की ओर से 250 करोड़ ₹ की सहायता में से अब तक 242.50 करोड़ ₹ मिल चुके हैं, जिसमें से 158 करोड़ ₹ विभिन्न योजनाओं में खर्च किए जा चुके हैं।

पूर्ण हुए प्रोजेक्टस

अभी तक 1717.60 करोड़ ₹ के कुल 66 प्रोजेक्टस पूरे किए जा चुके हैं, जिनमें से कुछ महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट्स निम्नलिखित हैं।

- सूरत म्युनिसिपल एडमिनिस्ट्रेटिव कंट्रोल सेंटर (एसएमएस सेंटर)
- इंटेलिजेंट ट्रांझिट मैनेजमेंट सिस्टम (आईटीएमसी)
- ऑटोमेटिक फेयर कलेक्शन सिस्टम (एएफसीएस)
- सूरत किले का रिस्टोरेशन और डेवलपमेंट (भाग-
- ए.आई.सी. सूरती आईलैब-इनोवेशन इनक्यूबेशन स्टार्ट-अप और ट्रेड फैसिलिटेशन सेंटर
- एलईडी स्मार्ट सट्रीट लाइटिंग और स्मार्ट मॉनिटरिंग सिस्टम
- 1.0 मेगावाट सौर ऊर्जा प्लान्ट

सूरत फोर्ट

सूरत फोर्ट

कैनल कोरिडोर

कैनल कोरिडोर

परियोजनाएँ

एआईसी सूरत आई लैब

एआईसी सूरत आई लैब

अफोर्डेबल हाउसिंग

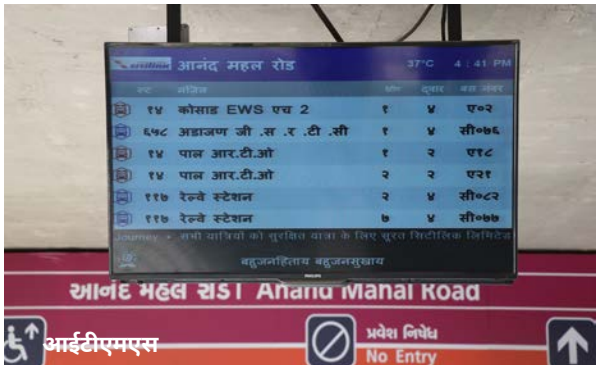

आईटीएमएस

सोलर पावर प्लांट

टेरटिएरी ट्रीटमेंट प्लांट

- विंड पावर जनरेशन (2.1 मेगावाट)
- बायोगैस प्लान्ट (पीपीपी)
- स्मार्ट सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट वाहन ट्रैकिंग
- आई पार्क-इंटेलिजेंट पार्किंग मैनेजमेंट सिस्टम
- सीटीझन एंगेजमेंट पोर्टल (सोशयल मीडिया के लिए डिजिटल मीडिया एजेंसी) और ऐप डेवलपमेंट
- कॉमन सिटी पेमेन्ट कार्ड
- सुमन आई (सीसीटीवी नेटवर्क)
- कनेक्टेड सूरत वाई-फाई (बीआरटीएस फाइबर टू होम-लीज लाइन के लिए ओएफसी नेटवर्क का निर्माण)
- ओपन सूरत ओपन डेटा पोर्टल
- स्मार्ट वेस्ट कलेक्शन सिस्टम
- डिंडोली में दूषित पानी रिसायकल और रियूझ
- सरथाणा में 60 लाख क्षमता के अंडरग्राऊंड टैंक का निर्माण
- सरथाणा में 60 लाख क्षमता के अंडरग्राऊंड टैंक के निर्माण का मैकेनिकल और इलेक्ट्रिकल कार्य
- पब्लिक बाइसिकल शेयरिंग
- हवा और पानी क्वालिटी मॉनिटरिंग सिस्टम
- एफोर्डेबल हाउसिंग (पीएमएवाई) दृ 3298यूनिट (5 लोकेशन)
- आँजणा एवं डिंडोली में सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट का नवीनीकरण
- 24x7 वोटर सप्लाई स्कीम स्मार्ट वॉटर मीटर
- 120 एमएलडी क्षमता केवॉटर ट्रीटमेंट प्लांट और शून्य लिक्विड डिस्चार्ज
- रेन वॉटर रिचार्जिंग
- वीआईपी मॉडल रोड (4.85 किमी)

एलईडी स्ट्रीट लाइट

डेडीकेटेड साईकिल ट्रैक

डेडीकेटेड साईकिल ट्रैक

डेडीकेटेड साईकिल ट्रैक

विंड पावर प्लांट

एएफसी एस के साथ सूरत मनी कार्ड

- अनुव्रत द्वार कैनाल रोड डेवलपमेंट
- स्मार्ट वेस्ट कलेक्शन सिस्टम
- विजुअल इम्प्रूवमेंट
- इस्टैब्लिशमेंट ऑफ प्लास्टिक वेस्ट मैनेजमेंट
- क्लोजर ऑफ एक्यूमलेटेड वेस्ट एंड रेलेवेंट इंफ्रास्ट्रक्टर डेवेलपमेंट वर्क

कार्यरत प्रोजेक्ट्स

वर्तमान में अनुमानित 1235.79 करोड़ ₹ के कुल 15 प्रोजेक्ट्स प्रगति पर है।

जिसमें इंटीग्रेटेड ट्रांसपोर्ट मोबिलिटी एडमिनिस्ट्रेशन सेंटर (आईटी-एमएसी), इंटेलिजेट ट्रैफिक कंट्रोल सिस्टम (आईटीसीएम) और एरिया सर्विलांस नेटवर्क, कॉमन ट्रांसमिशन लाइन, अफोर्डेबल हाउसिंग (पीएमएवाई) दृ 660 यूनिट्स (1 लोकेशन), आँजणा टेनामेंट री-डेवलपमेंट, अलथाण टेनामेंट रीकेवलपमेंट, डुंभाल टेनामेंट री-डेवलपमेंट, सूरत किले का रिस्टोरेशन और डेवलपमेंट (भाग-2), कोयली खाड़ीका पुनर्निर्माण और री-मॉडलिंग (2.85 किमी), ओटोमेशन एण्ड स्काडा वर्क्स फॉर वेरियस डब्ल्यूडब्लयू एण्ड डब्ल्यूडीएस, फ्रेंचवेल, डेटा सेंटर स्टेंथनिंग एण्ड डीआर साइट और डेवलमेंट ऑफ ईआरपी विद जीआईएस, फ्रेंचवेल, प्लेटफार्म एण्ड एडवांस ग्रेविएशन रिड्रेसल सिस्टम के साथ ओ.एन.जी.सी.पुल से हवाई अडडे तक की सड़क में आइकॉनिक डेवलपमेंट जैसे प्रोजेक्ट्स समाविष्ट है।

- अनुमानित 49.90 करोड़ ₹ का 01 प्रोजेक्ट टेंडर प्रक्रिया में है।
- स्मार्ट सिटी प्रस्ताव की कुल लागत 3003.29 करोड़ ₹ में से अब तक कुल 2002.28 करोड़ ₹ खर्च किए गए हैं जिसमें से स्मार्ट सिटी मिशन के तहत प्राप्त कुल अनुदान 982.50 करोड़ ₹ में से कुल 648.00 करोड़ ₹ खर्च हुए हैं।

आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय (आ. और श.का.मं.) द्वारा सूरत स्मार्ट सिटी को स्मार्ट सिटीज मिशन के अंतर्गत 'सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन' के लिए वर्तमान वर्ष सहित लगातार तीन वर्षों से 'सिटी अवार्ड' मिलने के साथ इस साल तीन प्रोजेक्ट अवार्डस भी प्राप्त हुए है।

"लीडर्स इन क्लाइमेट चेंज मैनेजमेंट" (एलसीसीएम)

सुश्री ईला सिंह, संचार प्रमुख
हिंदी अनुवाद: पूनम मल्होत्रा

नई दिल्ली, 5 जून, 2022 - पचास साल पहले, स्टॉकहोम में मानव पर्यावरण पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन में वैश्विक एजेंडे में सतत विकास को शामिल करने के लिए "केवल एक पृथ्वी" का नारा प्रस्तुत किया था। भारत के माननीय प्रधानमंत्री ने कोप 26 में 1.5 डिग्री सेल्सियस के लक्ष्य को पूरा करने के लिए विश्व को सहयोग देने के लिए पाँच सूत्रीय कार्यनीति "पंचामृत" का प्रस्ताव दिया। शहरी जलवायु लक्ष्यों को प्राप्त करने की ओर आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय की प्रमुख पहलों को चिह्नित करने के लिए, माननीय केंद्रीय मंत्री श्री हरदीप सिंह पुरी व्यावहारिक शिक्षण कार्यक्रम - 'लीडर्स इन क्लाइमेट चेंज मैनेजमेंट' की शुरुआत करेंगे। इसे स्मार्ट सिटीज मिशन के सहयोग से राष्ट्रीय नगर कार्य संस्थान (रा.न.का.सं.), वर्ल्ड रिसोर्सेज इंस्टीट्यूट इंडिया (डब्ल्यूआरआई), यूनाइटेड नेशन्स इन्वायरमेंट प्रोग्राम (यूएनईपी) और इंडियन स्कूल ऑफ बिजनेस (आईएसबी) द्वारा संयुक्त रूप से डिजाइन किया गया है।

कार्यक्रम के पहले चरण में एक ऑनलाइन शिक्षण मॉड्यूल है जिसे आठ सप्ताह में पूरा करना आवश्यक है। दूसरा चरण चार से छह दिनों की फेस-टू-फेस शिक्षण है जिसे भारत के प्रशासनिक प्रशिक्षण संस्थानों द्वारा आयोजित और समर्थित किया गया। तीसरे चरण में प्रतिभागियों को एक्सपोजर यात्राओं में भाग लेने के साथ-साथ छह से आठ महीने की

- इण्डिया हैबीटेट सेंटर, नई दिल्ली में 5 जून, 2022 को आयोजित सेंटर लीडर्स इन क्लाइमेंट चेंज मैनेजमेंट (एल.सी.सी.एम.) की कार्यालशाला में श्री कुणाल कुमार, संयुक्त निदेशक, आ. और श.का.मं., श्री हितेश वैद्य, निदेशक रा.न.का.सं., श्री हरदीप सिंह पुरी मंत्री (आ. और श.का.मं.), सुश्री वी. मंजुला, उप महानिदेशक, ए.टी.आई. मैसूर, और ओ.पी. अग्रवाल सी.ई.ओ. डब्ल्यू. आर.आई.- भारत।

अवधि में एक परियोजना करने के लिए अनिवार्य किया गया था। कार्यक्रम का चौथा और अंतिम चरण नेटवर्किंग और 'अभ्यास के समुदाय' की स्थापना करना था। ऑनलाइन लर्निंग को नेशनल अर्बन लर्निंग प्लेटफॉर्म (एनयूएलपी) पर आयोजित किया गया।

इस आयोजन में, राष्ट्रीय नगर कार्य संस्थान, वर्ल्ड रिसोर्सेज इंस्टीट्यूट इंडिया और प्रशासनिक प्रशिक्षण संस्थान (एटीआई), मैसूर के बीच एक त्रिपक्षीय समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर भी हस्ताक्षर किए गए। यह फेस-टू-फेस शिक्षण के मॉड्यूल को सुविधाजनक बनाने और एलसीसीएम कार्यक्रम के वितरण साझेदारों में से एक बनने के लिए एक समझौता स्थापित करेगा। श्रीमती वी मंजुला, आईएएस, अपर मुख्य सचिव, कर्नाटक सरकार और महानिदेशक, प्रशासनिक प्रशिक्षण संस्थान मैसूरु, ने समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए और कार्यक्रम के साथ प्रशासनिक प्रशिक्षण संस्थान मैसूरु के अनुबंध पर सभा को संबोधित किया।

माननीय केंद्रीय मंत्री श्री हरदीप सिंह पुरी ने अन्य प्रमुख मील के पत्थर जैसे क्लाइमेट डेटा ऑब्जर्वेटरी 2.0 वेबसाइट, 75 सार्वजनिक स्थानों का एक संग्रह, शहरी परिणाम फ्रेमवर्क 2022 - डेटा संग्रह पोर्टल और शहरी परिवहन संग्रह के लिए नागरिक अनुबंध का भी शुभारंभ किया । माननीय केंद्रीय मंत्री ने राष्ट्रीय जलवायु फोटोग्राफी पुरस्कार विजेताओं और "ट्रांसपोर्ट 4 ऑल इनोवेशन चैलेंज" चरण-1 के सफल शहरों के नाम भी घोषित किया।

माननीय केंद्रीय मंत्री ने भारत की जलवायु प्रतिबद्धता, एलसीसीएम कार्यक्रम के महत्व और राष्ट्रीय नगर कार्य संस्थान की महत्वपूर्ण भूमिका पर एक मुख्य भाषण दिया। श्री मनोज जोशी, आईएएस, सचिव, आ. और श.का.मं. राष्ट्रीय मिशनों की उपलब्धियों और जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्य योजना के साथ अपने संबंध स्थापित करने के बारे में बताया। श्री कुनाल कुमार, आईएएस, संयुक्त सचिव, आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय, रा.न.का.सं. में शहरों के लिए जलवायु केंद्र, स्मार्ट सिटीज मिशन के योगदान पर विस्तार और मंत्रालय के दृष्टिकोण से भारत की जलवायु प्रतिबद्धताओं के अंतराल के साथ भारतीय शहरी संवाद के लिए सिटीज कार्यक्रम को पूरा करेंगें।

डॉ. ओम प्रकाश अग्रवाल, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, वर्ल्ड रिसोर्स इंस्टीट्यूट इंडिया और श्री नईम केरुवाला, प्रोग्राम डायरेक्टर- सिटीज, रा.न.का.सं., भारत में शहरी जलवायु नेतृत्व की स्थापना से इसकी संरचना और योगदान, लीडर्स इन क्लाइमेट चेंज मैनेजमेंट (एलसीसीएम) कार्यक्रम, पर एक प्रस्तुति बनाएँगे। कार्यशाला का समापन श्री हितेश वैद्य, निदेशक, रा.न.का.सं. के संबोधन से किया गया, जो शहरी क्षेत्र में क्षमता निर्माण प्रशिक्षण का संचालन कर रहे हैं।

कार्यशाला में "कैपेसिटीज फॉर क्लाइमेट लीडरशिप इन इंडियन सिटीज" विषय पर एक पैनल चर्चा भी की गई। कुछ सम्मानित उद्योग विशेषज्ञ (सार्वजनिक और निजी), जैसे- डॉ. बी आर ममता, आईएएस, संयुक्त महानिदेशक, एटीआई-मैसूर; श्री हितेश वैद्य, निदेशक, राष्ट्रीय नगर कार्य संस्थान; श्री नईम केरुवाला, कार्यक्रम निदेशक- सिटीज, रा.न.का.सं.; श्री अतुल बगई, देश प्रमुख, यूनाइटेड नेशन्स इन्वायरमेंट प्रोग्राम, इंडिया; श्री अंशु भारद्वाज, सीईओ, शक्ति सस्टेनेबल एनर्जी फाउंडेशन; डॉ. संजीव चड्ढा, प्रोफेसर- प्रमुख, महात्मा गाँधी स्टेट इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेसन और सुश्री रजीत मैथ्यूज, कार्यक्रम निदेशक, डब्ल्यूआरआई इंडिया पैनल में शामिल थे। चर्चा का संचालन डॉ. ओपी अग्रवाल (सेवानिवृत्त आईएएस), सीईओ, डब्ल्यूआरआई इंडिया द्वारा किया गया।

लीडर्स इन क्लाइमेट चेंज मैनेजमेंट (एलसीसीएम) के बारे में

एलसीसीएम एक क्षमता-निर्माण कार्यक्रम है जो सभी क्षेत्रों और भौगोलिक क्षेत्रों में चैंपियन और जलवायु कार्रवाई का नेतृत्व करने के लिए लीडर्स का एक पूल बनाने का प्रयास करता है। कार्यक्रम को मुख्य साझेदारों, रा.न.का.सं., डब्ल्यूआरआई इंडिया, यूएनईपी और आईएसबी के माध्यम से डिजाइन और कार्यान्वित किया गया है।

डब्ल्यूआरआई इंडिया के बारे में

डब्ल्यूआरआई इंडिया एक स्वतंत्र गैर-लाभकारी वैश्विक शोध संगठन है, जो कानूनी रूप से इंडिया रिसोर्स ट्रस्ट के रूप में पंजीकृत है। यह पर्यावरण की दृष्टि से स्वस्थ और सामाजिक रूप से समान विकास को बढ़ावा देने के लिए वस्तुनिष्ठ जानकारी और व्यावहारिक प्रस्ताव प्रदान करता है। यह सतत और रहने योग्य शहरों के निर्माण और अल्प कार्बन अर्थव्यवस्था की ओर कार्य करने पर केंद्रित है। अनुसंधान, विश्लेषण और सिफारिशों के माध्यम से, डब्ल्यूआरआई इंडिया पृथ्वी का संरक्षण, आजीविका को बढ़ावा देने और मानव कल्याण को बढ़ाने के लिए परिवर्तनकारी समाधान निर्मित करने के लिए विचारों को क्रियान्वित करता है। अधिक जानकारी के लिए देखें: Wri-india.org

सैनिटेशन कैपिसिटी बिल्डिंग प्लेटफॉर्म (एससीबीपी)

युवाओं के लिए अर्बन स्वच्छता पर राष्ट्रीय फोटो-स्टोरी प्रतियोगिता

एस.सी.बी.पी. टीम : सुश्री मेहरीन मट्टू, सुश्री उमरा अनीस
हिंदी अनुवाद : पूनम मल्होत्रा

आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय के सहयोग से राष्ट्रीय नगर कार्य संस्थान (रा.न.का.सं.) में सैनिटेशन कैपिसिटी बिल्डिंग प्लेटफॉर्म (एससीबीपी) ने युवाओं के लिए "अर्बन सैनिटेशन" पर फोटो-कहानी प्रतियोगिता की घोषणा की गई। प्रतियोगिता का उद्देश्य शहरी विकास के लिए इसका महत्व और शहरी स्वच्छता की जागरूकता को बढ़ाना है। यह प्रतियोगिता कक्षा 9 से 12 तक के छात्रों और किसी भी विषय में स्नातक या स्नातकोत्तर करने वाले सभी छात्रों (आयु सीमा 25 वर्ष) के लिए आयोजित की गई थी। फोटो-कहानियों को प्रस्तुत करने के लिए यह प्रतियोगिता तीन विषयगत क्षेत्रों का प्रस्ताव करती है:

1. स्वच्छता और जलवायु परिवर्तन
2. स्वच्छता में सर्कुलर अर्थव्यवस्था प्राप्त करने के लिए नवाचारी अभिनव अभ्यास
3. समावेशी स्वच्छता

विषयों का वर्णन

विषय 1 - स्वच्छता और जलवायु परिवर्तन (स्वच्छता को प्रभावित करने वाली प्राकृतिक आपदाएँ)

जलवायु परिवर्तन के प्रभाव स्वच्छता प्रणाली के सभी घटकों - शौचालय से लेकर सेप्टिक टैंक तक और यहाँ तक कि शोधन संयंत्रों पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं। उदाहरण के लिए, बाढ़ का पानी शौचालयों को नुकसान पहुँचा सकता है और मानव अपशिष्ट का जल आपूर्ति, खाद्य फसलों और लोगों के घरों में प्रवेश का कारण बन सकता है। जिसके कारण सार्वजनिक स्वास्थ्य आपात स्थिति उत्पन्न होती है और पर्यावरण को नुकसान होता है जैसे जल जनित रोग या जल निकायों का दूषित होना।

बेहतर स्वच्छता के कार्य करने के लिए सुविधाओं और ज्ञान के साथ सतत स्वच्छता प्रणाली और कार्य, कोविड-19 जैसी

बीमारियों और भविष्य में होने वाली बीमारी के प्रकोप के खिलाफ एक मजबूत बचाव है।

विषय 2 - स्वच्छता में वृत्तीय अर्थव्यवस्था प्राप्त करने के लिए अभिनव प्रथाएँ। (कम करें, पुन: उपयोग और पुनर्चक्रण)

स्वच्छता प्रणाली में वृत्तीय अर्थव्यवस्था संपूर्ण स्वच्छता मूल्य श्रृंखला पर केंद्रित है। प्रवृत्तियों के कुछ उदाहरण विकेंद्रीकृत समाधान (स्रोत पर अपशिष्ट का उपचार), गैर-पेयजल उद्देश्य के लिए शोधित जल का उपयोग जैसे बागवानी उद्देश्यों, कम या बिना फ्लश वाले शौचालयों, और मल कीचड़ को ऊर्जा में परिवर्तित करना है। ये वैकल्पिक नवाचार कई विकास चुनौतियों का समाधान करने की विशाल क्षमता दिखाते हैं।

उदाहरण के लिए: बरहामपुर नगर निगम (बीईएमसी) ने स्वच्छता उद्यमी योजना के तहत मशीनीकृत नाली और सेप्टिक टैंक सफाई उपकरण प्राप्त करने में 16 महिला सफाई कर्मचारियों के एक समूह को उनकी सुरक्षा और सम्मान सुनिश्चित करने के साथ-साथ नवाचार और समावेशिता दोनों को बढ़ावा देते हुए उन्हें आजीविका के अवसर प्रदान करने में मदद और समर्थन किया है।

विषय 3: समावेशी स्वच्छता (सभी के लिए स्वच्छता)

समावेशी स्वच्छता सुलभ और सतत स्वच्छता प्राप्त करने के लिए शहर में रहने वाले विभिन्न हितधारकों (जैसे बुजुर्ग, महिलाएँ, ट्रांसजेंडर, स्वच्छता कार्यकर्ता, आदि) को एक साथ लाने पर केंद्रित है। समावेशिता सभी को निर्णय लेने में समान अवसर प्रदान करती है। सार्वजनिक स्वास्थ्य और व्यक्तियों की भलाई की रक्षा के लिए सभी के लिए स्वच्छता तक पहुँच में सुधार करना एक आवश्यक कार्य है।

कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं:

1. मैनहोल से मशीन-होल में जाना ताकि सफाई कर्मचारियों को उनके स्वास्थ्य और सम्मान की रक्षा करके उन्हें सशक्त बनाया जा सके।
1. विभिन्न भारतीय राज्यों में निर्मित " पिंक टॉयलेट" लड़कियों और महिलाओं के लिए स्वच्छता की स्थिति में सुधार करने में योगदान करते हैं, जिससे यह एक समावेशी पहल बन जाता है।

प्रतिभागियों को व्यक्तियों, समुदायों या शहर के अधिकारियों द्वारा स्वच्छता सहित और लिंग संवेदनशील या स्वच्छता में सर्कुलर अर्थव्यवस्था को प्राप्त करने के लिए नवाचारी कार्य, जलवायु परिवर्तन पर स्वच्छता अभ्यासों के प्रभावों को केंद्रित करके एक सार (100 शब्दों से अधिक नहीं) के साथ 5 तस्वीरों तक प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया गया था। विजेता प्रविष्टियों को विषय संरचना और प्रयुक्त तकनीक के आधार पर चुना जाएगा।

प्रतियोगिता के नियम इस प्रकार थे:

1. प्रति विषयगत क्षेत्र में प्रविष्टियों की संख्या प्रत्येक श्रेणी के तहत प्रति व्यक्ति, एक तक सीमित है।
2. प्रतियोगिता केवल व्यक्तियों के लिए है (अपेशेवर और पेशेवर)।
3. फोटोग्राफ केवल भारतीय शहरों के होने चाहिए।
4. प्रस्तुत करने से पहले सार की साहित्यिक चोरी की जाँच की जानी चाहिए। यदि यह पाया जाता है कि मूलपाठ की प्रतिलिपि बनाई गई है, तो प्रविष्टि को अयोग्य घोषित कर दिया जाएगा।
5. पुरस्कार राशि केवल भारतीय बैंक खातों में स्थानांतरित की जाएगी।
6. प्रत्येक प्रविष्टि .jpeg या .png प्रारूप में होनी चाहिए जिसमें कम से कम 8 X 12 इंच का 300 डीपीआई (डॉट्स प्रति इंच) न्यूनतम आकार हो।
7. प्रस्तुत फाइल का आकार 30 एमबी से अधिक नहीं होना चाहिए।
8. प्रविष्टियों का मूल्यांकन क्षेत्र के विशेषज्ञों और फोटोग्राफरों, कहानी-लेखकों / कहानीकारों के एक प्रतिष्ठित पैनल द्वारा किया जाएगा।
9. फोटो-कहानियों से किसी भी व्यक्ति/समुदाय की आस्थाओं की भावनाओं को ठेस नहीं पहुँचने चाहिए।

सभी विजेताओं को नकद पुरस्कार और प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया जाएगा। पुरस्कार विजेता तस्वीरें और चयनित नामांकन रा.न.का.सं. की ई-गवर्नेंस पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे और इंडिया हैबिटेट सेंटर, लोधी रोड पर प्रदर्शित किए जाएँगे।

रा.न.का.सं. के निदेशक, श्री हितेश वैद्य ने कहा, "अर्बन स्वच्छता फोटो-स्टोरी प्रतियोगिता छात्रों के लिए भारतीय शहरों में स्वच्छता अभ्यास को कैपचर और उनके प्रभावों का अध्ययन करने का एक अनूठा अवसर है। प्रतियोगिता का उद्देश्य भारत के युवाओं के बीच सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) 2030 के तहत लक्ष्य हासिल करने के लिए स्वच्छता सुविधाओं के महत्व पर बातचीत शुरू करना है।"

सैनिटेशन कैपिसिटी बिल्डिंग प्लेटफॉर्म (एससीबीपी) की गतिविधियाँ और प्रगति (2021-22))

- सेप्टेज प्रबंधन प्रोटोकॉल के अनुसार, प्रत्येक यूएलबी को एफएसएसएम गतिविधियों के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए एक सेप्टेज प्रबंधन प्रकोष्ठ बनाना चाहिए। रा.न.का.सं. के समर्थन और कड़ी अनुवर्ती कार्रवाई के साथ, सभी 92 यूएलबी ने मार्च 2022 तक सेप्टेज प्रबंधन प्रकोष्ठ का गठन किया है।
- यूडीडी ने सभी यूएलबी को एफएसएसएम गतिविधियों के उचित प्रबंधन को सुनिश्चित करने के लिए अपने संबंधित यूएलबी के लिए सेप्टेज प्रबंधन उपनियमों को अधिसूचित करने का निर्देश दिया। मई 2022 तक, 92 यूएलबी में से 17 ने अपने एफएसएसएम उपनियम राजपत्र को अधिसूचित किया और इसे 70 यूएलबी के बोर्ड द्वारा अनुमोदित किया गया है।
- रा.न.का.सं. ने छोटे यूएलबी में सेप्टेज के सुरक्षित निपटान के लिए एक अंतरिम विकल्प के रूप में डीप रो एंट्रेंचमेंट को लागू करने के लिए दिशानिर्देश तैयार किए।
- रा.न.का.सं. ने उत्तराखंड पेयजल निगम के सहयोग से एसटीपी में सेप्टेज के सह-उपचार पर राज्य सलाहकार नोट तैयार किया है।
- रा.न.का.सं. उत्तराखंड के यूडीडी अन्य प्रमुख विभागों के परामर्श से उत्तराखंड के लिए राज्य एफएसएसएम कार्यनीति और निवेश योजना (एसआईपी) विकसित कर रहा है। क्लस्टर आधारित दृष्टिकोण के माध्यम से सेप्टेज प्रबंधन को कारगर बनाने के लिए उपयुक्त दृष्टिकोण अपनाने के लिए एसआईपी राज्य के सभी 102 यूएलबी को संबोधित करेगा।
- रा.न.का.सं. ने उत्तराखंड के गंगा शहरों में अपशिष्ट जल प्रबंधन पर एक स्थिति पत्र भी तैयार किया और प्रस्तुत किया। इसका उपयोग सभी गंगा शहरों में एफएसएसएम को सुव्यवस्थित करने के लिए आवश्यक विभिन्न गतिविधियों की योजना बनाने के लिए किया जाएगा।
- उत्तरकाशी शहर में स्वच्छता की स्थिति की स्थितिजन्य मूल्यांकन रिपोर्ट तैयार की।
- यूएओए नैनीताल के सहयोग से 3 ओरिएंटेशन प्रशिक्षण आयोजित किए गए। 102 में से 81 यूएलबी को एफएसएसएम पर कुल मिलाकर 7 ऑनलाइन/ऑफलाइन ओरिएंटेशन प्रशिक्षणों में प्रशिक्षित किया गया।

2022-23 के लिए लक्ष्य

- 2022-23 के लिए योजना के अनुसार, रा.न.का.सं. ने गंगा शहरों और मौजूदा/प्रस्तावित एसटीपी वाले अन्य शहरों के इंजीनियरों के लिए 2 उन्नत सह-उपचार प्रशिक्षण आयोजित किए हैं।
- 2022-23 का एक और लक्ष्य यूडीडी, पेयजल निगम, जल संस्थान और एटीआई नैनीताल के वरिष्ठ अधिकारियों के लिए भुवनेश्वर एफएसटीपी और पुरी ओडिशा में सेप्टेज के सीओ-उपचार के लिए एक प्रदर्शन दौरा आयोजित करके पूरा किया गया।
- गंगा शहरों और सीडब्ल्यूआईएस को प्राथमिकता के साथ विभिन्न यूएलबी में आवश्यकता और नियोजित गतिविधियों के अनुसार विभिन्न हितधारकों के लिए कुछ और प्रशिक्षण आयोजित किए जाएँगे।
- रा.न.का.सं. उत्तरकाशी में ओएसएस के डेटाबेस विकसित करने के लिए घरेलू सर्वेक्षण करने में यूडीडी/उत्तरकाशी एनपीपी को तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान करेगा।
- रा.न.का.सं. उत्तराखंड के पहाड़ी शहरों के लिए व्यवहार्य कीचड़ रहित करने के विकल्पों का पता लगाने के लिए तीसरे पक्ष के सेवा प्रदाताओं के साथ यूडीडी के शामिल होने की सुविधा प्रदान कर रहा है।

शहरी स्वच्छता फोटोस्टोरी प्रतियोगिता

इन विषयों में से किसी एक का वर्णन अधिकतम 100 शब्दों मे (अंग्रेजी में) लघु निबंध के रुप मे अधिकतम 5 फोटोग्राफ के साथ भेजें।

विषयों की सूची

1. **स्वच्छता और जलवायु परिवर्तन**
   (प्राकृतिक आपदाओं का स्वच्छता पर प्रभाव)
2. **स्वच्छता क्षेत्र में चक्रीय अर्थव्यवस्था प्राप्त करने हेतु अभिनव अभ्यास।**
   (कम करना, पुन: उपयोग, पुन: चक्रण)
3. **समावेशी स्वच्छता**
   (सबके लिए स्वच्छता)

कौन भाग ले सकते है?

श्रेणी 1: कक्षा 9वीं से 12वीं के छात्र।

श्रेणी 2: ग्रेजुएट और पोस्ट-ग्रेजुएट छात्र जो अभी अपनी पढ़ाई कर रहे हो और उनकी उम्र 25 वर्ष से कम होनी चाहिए।

पुरस्कार और प्रमाण पत्र

श्रेणी 1
(प्रत्येक विषय के लिए)

प्रथम पुरस्कार: ₹10,000/-
द्वितीय पुरस्कार: ₹7,000/-
तृतीय पुरस्कार: ₹5,000/-

श्रेणी 2
(प्रत्येक विषय के लिए)

प्रथम पुरस्कार: ₹25,000/-
द्वितीय पुरस्कार: ₹15,000/-
तृतीय पुरस्कार: ₹10,000/-

भाग लेने के लिए यहां स्कैन करें या क्लिक करें https://scbp.niua.org/?q=Urban-Sanitation-Photostory-Competition

सभी पुरस्कार विजेता फोटो-कहानियों और चयनित नामांकनों को एक प्रमाण पत्र प्रदान किया जाएगा और उन्हें इंडिया हैबिटेट सेंटर, लोधी रोड, दिल्ली में प्रदर्शित किया जाएगा I

केवल प्रथम पुरस्कार विजेता की फोटो-कहानियों को रा.न.का.सं. की eGov पत्रिका में प्रकाशित की जाएगी।

चयन पैनल

श्री एस विश्वनाथ
निदेशक,
बॉयोमी एनवायरमेंटल सॉल्युशंस

श्रीमती कविता वानखड़े
एसोसिएट डीन- स्कूल ऑफ सिस्टम्स और इंफ्रास्ट्रक्चर और हेड- प्रैक्टिस,
भारतीय मानव बस्ती संस्थान

श्री तमसील हुसैन
सीईओ, पीपल लाइक अस क्रिएट

श्री अर्नब प्रतिम दत्ता
वरिष्ठ संपादक,
डाउन टू अर्थ, सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरनमेंट

जमा करने की अंतिम तिथि:
17 जून 2022

परिणाम की घोषणा
15 जुलाई 2022

पुरस्कार वितरण एवं प्रदर्शनी
29 जुलाई 2022

सत्यमेव जयते
Ministry of Housing and Urban Affairs
Government of India

Smart City
MISSION TRANSFORM-NATION

National Institute of Urban Affairs

Azadi Ka Amrit Mahotsav

SCBP
Sanitation Capacity Building Platform

किसी भी जानकारी के लिए, कृपया सुश्री उमरा अनीस, कार्यक्रम अधिकारी, एस.सी. बी.पी-एन.आई.यू.ए uanees@niua.org से संपर्क करें।

राष्ट्रीय नगर कार्य संस्थान के निदेशक को कर्नाटक के पूर्व सीएम ने किया सम्मानित

विश्व आर्थिक मंच और राष्ट्रीय नगर कार्य संस्थान का समझौता ज्ञापन

विश्व आर्थिक मंच और राष्ट्रीय नगर कार्य संस्थान (रा.न.का.सं.) ने संयुक्त रूप से डिजाइन किए गए 'सस्टेनेबल सिटीज इंडिया प्रोग्राम' पर सहयोग करने के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए, जिसका उद्देश्य शहरों के लिए डीकार्बोनाइजेशन समाधान उत्पन्न करने के लिए ऊर्जा, परिवहन और निर्मित पर्यावरण क्षेत्र का एक सक्षम वातावरण बनाना है।

रा.न.का.सं. के निदेशक श्री हितेश वैद्य ने कहा, "भारत तेजी से शहरीकरण कर रहा है, इसका पैमाना और गति अभूतपूर्व है। संस्थानों के लिए शहरी विकास प्रक्रिया में जलवायु लचीलापन को प्राथमिकता देना और लागू करना अनिवार्य है। इस संबंध में, क्रॉस-सेक्टर और अंतर-संगठनात्मक साझेदारी ज्ञान के आदान-प्रदान को बढ़ावा देने और सर्वोत्तम प्रथाओं की पहचान करने के लिए महत्वपूर्ण है जिन्हें भारतीय संदर्भ में प्रभावी ढंग से लागू किया जा सकता है। मैं विश्व आर्थिक मंच के साथ रा.न.का.सं. के सहयोग में बहुत महत्व देखता हूँ क्योंकि यह न केवल सिटी स्प्रिंट कार्यशालाओं के माध्यम से भारत में शहरी व्यवसायों की क्षमता का निर्माण करेगा, बल्कि उन्हें समाधानों के वैश्विक टूलबॉक्स तक पहुँच प्रदान करेगा और हमारी दृष्टि में अन्य संभावित साझेदारों के साथ जुड़ जाएगा। भारतीय शहर भविष्य के लिए तैयार हैं।"

समझौता ज्ञापन हस्ताक्षर समारोह में श्री कुनाल कुमार, संयुक्त सचिव और मिशन निदेशक (स्मार्ट सिटीज मिशन), आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय, भारत सरकार ने कहा, "भारत 2070 तक नेट जीरो बनने के लिए प्रतिबद्ध है, ग्लासगो में कोप 26 शिखर सम्मेलन के दौरान माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा निर्धारित 'भविष्य के लिए तैयार' भारत को अपने दृष्टिकोण के साथ संरेखित करना। स्वच्छ ऊर्जा संक्रमण में तेजी लाने के लिए इस दृष्टि को साकार करने में, बातचीत और अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि चौगुनी हेलिक्स के सभी अभिनेताओं के बीच कार्रवाई महत्वपूर्ण है। रा.न.का.सं. और विश्व आर्थिक मंच के बीच यह साझेदारी उस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह सहयोग भारत के शहरों और विश्व स्तर पर शहरों को एक दूसरे से सीखने और सतत विकास और जलवायु लचीलापन की ओर कार्य करने में मदद करेगा।

'सस्टेनेबल सिटीज इंडिया प्रोग्राम' का उद्देश्य शहरों को व्यवस्थित और सतत तरीके से डीकार्बोनाइज करने में सक्षम बनाना है जो उत्सर्जन को कम करेगा और लचीला और न्यायसंगत शहरी पारिस्थितिक तंत्र प्रदान करेगा। विश्व आर्थिक मंच और रा.न.का.सं. दो वर्षों में पाँच से सात भारतीय शहरों के संदर्भ में विश्व आर्थिक मंच की सिटी स्प्रिंट प्रक्रिया और समाधान के टूलबॉक्स को डीकार्बोनाइजेशन के लिए अनुकूलित करेंगे।

सिटी स्प्रिंट प्रक्रिया बहु-क्षेत्रीय, बहु-हितधारक कार्यशालाओं की एक श्रृंखला है जिसमें व्यवसाय, सरकार और नागरिक समाज के नेताओं को शामिल किया जाता है, ताकि विशेष रूप से स्वच्छ, विद्युतीकरण और परिपत्र के माध्यम से डीकार्बोनाइजेशन को सक्षम किया जा सके।

विशेषज्ञ पूर्वोत्तर में एसडीजी के स्थानीयकरण पर ध्यान देते हैं

सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) पर दो सप्ताह के अनुसंधान क्षमता निर्माण कार्यक्रम का पहला चरण विकासशील देशों के लिए अनुसंधान और सूचना प्रणाली (आरआईएस) और उत्तर पूर्व प्रशिक्षण, अनुसंधान और वकालत फाउंडेशन (नेत्रा) के तहत आरआईएस, नई दिल्ली में 14-18 मार्च तक युवा उत्तर पूर्वी शोधार्थी के लिए आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम में आठ अलग-अलग पूर्वोत्तर राज्यों के 15 शोधार्थियों ने भाग लिया। सभी प्रतिभागियों ने आरआईएस द्वारा आयोजित स्वदेशी लोगों और भारत पर अंतर्राष्ट्रीय चर्चा में भी भाग लिया।

डॉ. पूर्वा, वरिष्ठ शोधकर्ता, रा.न.का.सं. ने अपने भाषण में बताया कि सभी लक्ष्यों और उद्देश्यों को वैश्विक ढाँचे के साथ संरेखित करना आसान नहीं था, इसलिए शहर स्तर (एसडीजी-11) पर ध्यान देना सभी की जिम्मेदारी थी और इन संकेतकों को विकसित करें और उन संकेतकों को समझें।

सस्टेनेबल सिटीज इंडिया प्रोग्राम

विश्व आर्थिक मंच और राष्ट्रीय नगर कार्य संस्थान का समझौता ज्ञापन

विश्व आर्थिक मंच और राष्ट्रीय नगर कार्य संस्थान (रा.न.का.सं.) ने संयुक्त रूप से डिजाइन किए गए 'सस्टेनेबल सिटीज इंडिया प्रोग्राम' पर सहयोग करने के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए, जिसका उद्देश्य शहरों के लिए डीकार्बोनाइजेशन समाधान उत्पन्न करने के लिए ऊर्जा, परिवहन और निर्मित पर्यावरण क्षेत्र का एक सक्षम वातावरण बनाना है।

रा.न.का.सं. के निदेशक श्री हितेश वैद्य ने कहा, "भारत तेजी से शहरीकरण कर रहा है, इसका पैमाना और गति अभूतपूर्व है। संस्थानों के लिए शहरी विकास प्रक्रिया में जलवायु लचीलापन को प्राथमिकता देना और लागू करना अनिवार्य है। इस संबंध में, क्रॉस-सेक्टर और अंतर-संगठनात्मक साझेदारी ज्ञान के आदान-प्रदान को बढ़ावा देने और सर्वोत्तम प्रथाओं की पहचान करने के लिए महत्वपूर्ण है जिन्हें भारतीय संदर्भ में प्रभावी ढंग से लागू किया जा सकता है। मैं विश्व आर्थिक मंच के साथ रा.न.का.सं. के सहयोग में बहुत महत्व देखता हूँ क्योंकि यह न केवल सिटी स्प्रिंट कार्यशालाओं के माध्यम से भारत में शहरी व्यवसायों की क्षमता का निर्माण करेगा, बल्कि उन्हें समाधानों के वैश्विक टूलबॉक्स तक पहुँच प्रदान करेगा और हमारी दृष्टि में अन्य संभावित साझेदारों के साथ जुड़ जाएगा। भारतीय शहर भविष्य के लिए तैयार हैं।"

समझौता ज्ञापन हस्ताक्षर समारोह में श्री कुनाल कुमार, संयुक्त सचिव और मिशन निदेशक (स्मार्ट सिटीज मिशन), आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय, भारत सरकार ने कहा, "भारत 2070 तक नेट जीरो बनने के लिए प्रतिबद्ध है, ग्लासगो में कोप 26 शिखर सम्मेलन के दौरान माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा निर्धारित 'भविष्य के लिए तैयार' भारत को अपने दृष्टिकोण के साथ संरेखित करना। स्वच्छ ऊर्जा संक्रमण में तेजी लाने के लिए इस दृष्टि को साकार करने में, बातचीत और अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि चौगुनी हेलिक्स के सभी अभिनेताओं के बीच कार्रवाई महत्वपूर्ण है। रा.न.का.सं. और विश्व आर्थिक मंच के बीच यह साझेदारी उस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह सहयोग भारत के शहरों और विश्व स्तर पर शहरों को एक दूसरे से सीखने और सतत विकास और जलवायु लचीलापन की ओर कार्य करने में मदद करेगा।

'सस्टेनेबल सिटीज इंडिया प्रोग्राम' का उद्देश्य शहरों को व्यवस्थित और सतत तरीके से डीकार्बोनाइज करने में सक्षम बनाना है जो उत्सर्जन को कम करेगा और लचीला और न्यायसंगत शहरी पारिस्थितिक तंत्र प्रदान करेगा। विश्व आर्थिक मंच और रा.न.का.सं. दो वर्षों में पाँच से सात भारतीय शहरों के संदर्भ में विश्व आर्थिक मंच की सिटी स्प्रिंट प्रक्रिया और समाधान के टूलबॉक्स को डीकार्बोनाइजेशन के लिए अनुकूलित करेंगे।

सिटी स्प्रिंट प्रक्रिया बहु-क्षेत्रीय, बहु-हितधारक कार्यशालाओं की एक श्रृंखला है जिसमें व्यवसाय, सरकार और नागरिक समाज के नेताओं को शामिल किया जाता है, ताकि विशेष रूप से स्वच्छ, विद्युतीकरण और परिपत्र के माध्यम से डीकार्बोनाइजेशन को सक्षम किया जा सके।

राष्ट्रीय नगर कार्य संस्थान का 46वाँ स्थापना दिवस, 25 जून 2022

वर्ल्ड अर्बन फोरम ग्यारहवाँ सत्र

केटोवाइस, पोलैंड/ 26-30 जून 2022

वर्ल्ड अर्बन फोरम के बारे में

वर्ल्ड अर्बन फोरम 2002 से यूनाइटेड नेशन्स ह्यूमन सेटलमेंट्स प्रोग्राम (यूएन-हैबिटेट) द्वारा संचालित एक गैर-विधायी तकनीकी वैश्विक फोरम है। इसे सतत शहरी विकास और मानव आबादी के क्षेत्र में अग्रणी वैश्विक क्षेत्र के रूप में मान्यता प्राप्त है। फोरम का ग्यारहवाँ सत्र, डब्ल्यूयूएफ11, पोलैंड के विकास कोष और क्षेत्रीय नीति मंत्रालय और केटोवाइस के नगर कार्यालय द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया है।

राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और स्थानीय सरकारों के प्रतिनिधि, शिक्षाविद, व्यवसाय प्रमुख, सामुदायिक नेताओं, शहरी योजनाकार और नागरिक समाज के प्रतिनिधि उन हजारों लोगों में शामिल होंगे, जिनके डब्ल्यूयूएफ11 में भाग लेने की उम्मीद है।

डब्ल्यूयूएफ11 का विषय 'ट्रॉंसफॉर्मिंग ऑवर सिटीज फॉर ए बेटर अर्बन फ्यूचर' है।

डब्ल्यूयूएफ11 में साझेदारी को बढ़ावा देने, जागरूकता बढ़ाने और एक आम आवाज को सुदृढ़ करने के लिए, राष्ट्रीय नगर कार्य संस्थान (रा.न.का.सं.) विभिन्न नेटवर्किंग सत्रों में भाग ले रहा है। आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय, भारत सरकार के थिंक टैंक के रूप में, रा.न.का.सं. भी क्षमता निर्माण, अनुसंधान और एडवोकेसी के लेंस के माध्यम से भारतीय शहरों की परिवर्तन कहानी को प्रदर्शित करने के लिए एक प्रदर्शनी आयोजित कर रहा है। इसका व्यापक उद्देश्य यह प्रदर्शित करना है कि कैसे रा.न.का.सं. एक पारिस्थितिक दृष्टिकोण को अपना रहा है और एक समग्र शहरी दृष्टि और संरचनाओं के निर्माण में मदद करने के लिए लंबवत और क्षैतिज दोनों तरह से कई हितधारकों को आकर्षित कर रहा है। यह न केवल प्रभावी ढंग से शहरी कार्यों की योजना और प्रबंधन में मदद करेगा, बल्कि यह भी सुनिश्चित करेगा कि भारतीय शहर स्थानिक, सामाजिक और आर्थिक रूप से समावेशी बनने की दिशा में आगे बढ़ें।

इस प्रदर्शनी में भारत के प्रयासों को प्रदर्शित किया जाएगा:

1. बहु और विविध दृष्टिकोणों के माध्यम से शहरों को बदलना;
2. जलवायु परिवर्तन, सतत विकास और शहरीकरण की ओर समाधान और दृष्टिकोण;
3. नवाचारों और ज्ञान प्रबंधन के लिए सहयोगात्मक अवसरों की खोज करना, जिसमें दक्षिण-दक्षिण सहयोग के अवसरों को बढ़ाना शामिल है।

रा.न.का.सं. की प्रदर्शनी के बारे में

राष्ट्रीय नगर कार्य संस्थान (रा.न.का.सं.) पहली बार इस पैमाने के वैश्विक अर्बन फोरम पर स्वयं का पवेलियन स्थापित कर रहा है।

रा.न.का.सं. के पवेलियन डब्ल्यूयूएफ11 की थीम 'ट्रॉंसफॉर्मिंग ऑवर सिटीज फॉर ए बेटर अर्बन फ्यूचर' के अनुरूप है।

प्रदर्शनी स्थल के अंदर स्थित पवेलियन का शुभारंभ 27 जून, 2022 को होगा और यह 30 जून, 2022 को समाप्त होने तक खुला रहेगा।

पवेलियन वर्तमान प्रभावों, भविष्य के रुझानों, चुनौतियों और अवसरों के आधार पर शहरों के भविष्य पर अंतर्दृष्टि और स्पष्टता प्रदान करेगा।

पवेलियन के बाहर, रा.न.का.सं. तीन अलग-अलग कार्यक्रमों को आयोजित करेगा जो दूसरों के बीच नेटवर्किंग कार्यक्रम और पैनल चर्चाएँ हैं।

पवेलियन का उद्देश्य 2070 तक नेट जीरो हासिल करने के लिए हरित, समावेशी और सतत बदलाव के लिए मार्ग सुझाना है।

यह एक वृक्ष संरचना के माध्यम से दर्शाया गया है जो भारत सरकार के अर्बन थिंक टैंक के विकास, विकास पथ, मार्गदर्शक सिद्धांतों, उपकरणों और भविष्य के दृष्टिकोण के बारे में बात करता है।

यह हमारे कार्य को साक्ष्य-आधारित अनुसंधान, क्षमता निर्माण, प्रणालीगत योजना, डेटा और प्रौद्योगिकी और कार्य के हमारे वैश्विक दृष्टिकोण में भी सामने रखता है। क्लाइमेट डाटा ऑबजरवेटरी (सीडीओटी) को एक सबसे बड़े शहर के जलवायु डेटाबेस तक पहुँचने के लिए एक पारस्परिक अनुभव के रूप में स्थापित किया जाएगा।

दूसरी दीवार में वीडियो के साथ एक मॉडल शहर का एक रंगीन, हस्तचित्रित चित्रण दिखाई देगा, जहाँ रा.न.का.सं. के कार्यक्षेत्र और शहरों में हम जो प्रभाव देखते हैं, उसे दर्शाया जाएगा।

इसमें लिंग-समावेशी क्षेत्र, बच्चों के अनुकूल शहर, स्थान निर्माण, शहरी नदी प्रबंधन और योजना, और जलवायु कार्रवाई, अन्य परिवर्तन कार्रवाईयाँ शामिल हैं।

हम साझेदारी, सहयोग और ज्ञान साझा करने के अवसरों के माध्यम से भारतीय शहरों को रूपांतरित के इस भव्य मिशन पर हमारे साथ कार्य करने और सहयोग करने के लिए प्रतिनिधियों को आमंत्रित करते हैं। यह एक इंटरेक्टिव गेम के माध्यम से किया जाएगा जहाँ उन्हें अपनी महत्वाकांक्षाओं को एक चित्र 'डायवर्सी ट्री' पर पोस्ट करने का अवसर मिलेगा।

पैनल चर्चा, एमओयू पर हस्ताक्षर और रिपोर्ट रिलीज सहित कई कार्यक्रम 4-दिवसीय कार्य डब्ल्यूयूएफ11 का हिस्सा हैं।

योग दिवस का आयोजन

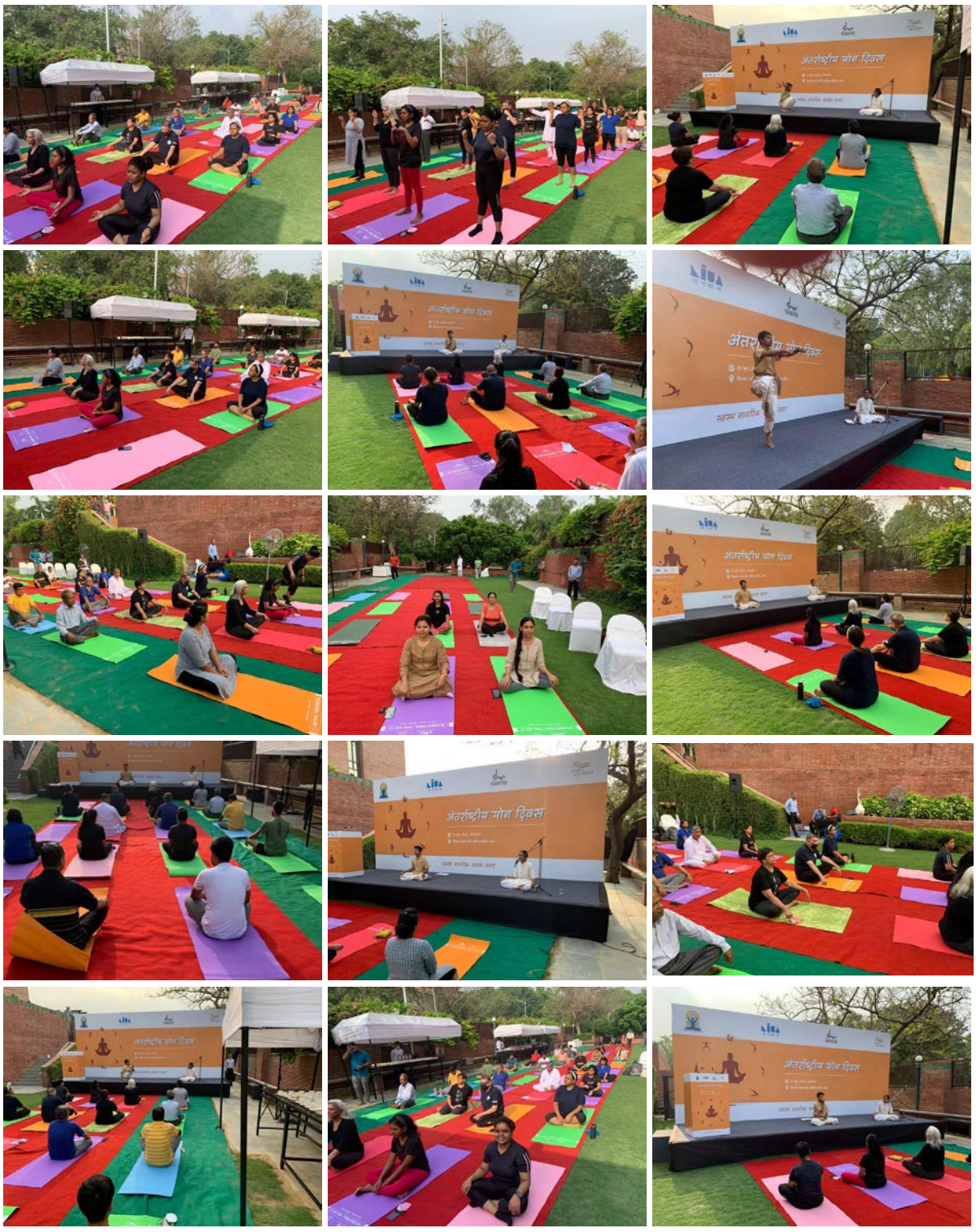

गीतांजलि श्री : बुकर के लिए नामित हिंदी की पहली रचनाकार

जनसत्ता संवाद, नई दिल्ली

इस साल पहली बार हिंदी की एक कृति को बुकर पुरस्कार के लिए नामित किया गया है। हर साल इन दिनों में इस पुरस्कार के लिए नामित होने वाले दुनियाभर के लेखकों की सूची जारी की जाती है। इस बार इस सूची में भारत की गातांजलि श्री के अनूदित उपन्यास "टोंब ऑफ सैंड" को शामिल किया गया है। पहली बार किसी हिंदी रचना को इस सूची में स्थान मिला है।

गीतांजलि श्री का अनूदित हिंदी उपन्यास "टोंब ऑफ सैंड" अंतर्राष्ट्रीय बुकर पुरस्कार के लिए सूचीबद्ध 13 पुस्तकों में से एक है। "रेत समाधि" शीर्षक से लिखे गए मूल हिंदी उपन्यास का डेजी राकवैल ने अंग्रेजी में अनुवाद किया है। यह एक 80 वर्षीय महिला की कहानी है जो अपने पति की मृत्यु के बाद बेहद उदास रहती है। आखिरकार, वह अपने अवसाद पर काबू पाती है और विभाजन के दौरान पीछे छूट गए अतीत की कड़ियों को जोड़ने के लिए पाकिस्तान जाने का फैसला करती है।

प्रारंभिक सूची में जिन 13 उपन्यासों की घोषणा की गई है, उनमें 11 भाषाओं से अंग्रेजी में अनूदित रचनाएं शामिल की गई हैं। वे प्रविष्ठियां चार महाद्वीपों के 12 देशों से हैं- जिनमें पहली बार हिंदी की रचना शामिल की गई है। निर्णायक मंडल ने गीतांजलि श्री को रचना का चयन करने की वजह बताते हुए कहा, उनका भाषा प्रवाह हमें आश्चार्यजनक रूप से सहज ही 80 वर्ष की महिला और उसके अतीत की ओर ले जाता है। गीताजलि श्री का जन्म 12 जून, 1957 को उत्तर-प्रदेश के मैनपुरी में हुआ। उनकी प्रारंभिक शिक्षा यूपी के विभिन्न शहरों में हुई। बाद में उन्होंने दिल्ली के लडी श्रीराम कालेज से स्नातक और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से इतिहास में एम.ए. किया। उन्होंने महाराज सयाजी राव विवि, वडोदरा से प्रेमचंद और उत्तर भारत के औपनिवेशिक शिक्षित वर्ग विषय पर शोध किया। कुछ दिनों तक जामिया मिल्लिया इस्लामिक में अध्यापन के बाद उन्होंने सूरत के सेंटर फॉर सोशल स्टडीज में पोस्ट-डाक्टरल शोध किया और वहीं रहते हुए उन्होंने साहित्य सृजन की शुरुआत की।

उनकी कहानी बेलपत्र 1987 में हंस में प्रकाशित हुई थी। उसके बाद उनकी दो और कहानियां हंस में प्रकाशित हुई और उसके बाद यह सिलसिला चल निकला। उनकी रचनाओं में 'माई' हमारा शहर उस 'बरस' 'तिरोहित' 'खाली जगह''रेत-समाधि' (उपन्यास) 'अनुगूंज' 'वैराग्य' 'मार्च, मां और साकूरा', 'यहां हाथी रहते थे' कहानी संग्रह शामिल हैं। गीताजलि श्री के उपन्यास 'माई' का अंग्रेजी अनुवाद 'क्रासवर्ड अवार्ड' के लिए नामित किया गया था और अवार्ड की दौड़ में शामिल अंतिम चार किताबों में था। उनकी रचना 'खाली जगह' का अनुवाद अंग्रेजी, फ्रेंच और जर्मन भाषा में हो चुका है। हिंदी अकादमी ने उन्हें 2000-2001 का साहित्यकार सम्मान दिया। 1994 में उन्हें उनके कहानी संग्रह अनुगूंज के लिए यूके कथा सम्मान से सम्मानित किया गया। इसके अलावा वह इंदु शर्मा कथा सम्मान, द्विजदेव सम्मान के अलावा जापान फाउंडेशन, चार्ल्स वालेस ट्रस्ट, भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय से सम्मान प्राप्त कर चुकी हैं। अपनी विविध और सशक्त कृतियों से गातांजलि श्री ने पिछले साढ़े तीन दशक में अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई।

संयुक्त राष्ट्र के प्रस्ताव में पहली बार हिंदी अपनाने का जिक्र, जानें क्या हैं इसके मायने, भारत के लिए कितनी बड़ी सफलता?

एक फरवरी, 1946 को पहले सत्र में यूएनएससी ने एक प्रस्ताव पास किया था। यूएन ने कहा था, संयुक्त राष्ट्र अपने उद्देश्यों को तब तक प्राप्त नहीं कर सकता जब तक दुनिया के लोगों को इसके उद्देश्यों और एक्टिविटीज के बारे में पूरी जानकारी नहीं हो। बहुभाषावाद पर भारत कई वर्षों से यूएन में हिंदी को मान्यता दिलाने का प्रयास कर रहा था। इसी क्रम में भारत की ओर से एक प्रस्ताव पेश किया गया था। संयुक्त राष्ट्र के कामकाज में हिंदी व अन्य भाषाओं को भी बढ़ावा देने का पहली बार जिक्र किया गया है। शुक्रवार को पारित प्रस्ताव में कहा गया है कि संयुक्त राष्ट्र हिंदी भाषा सहित आधिकारिक और गैर-आधिकारिक भाषाओं में महत्वपूर्ण संचार और संदेशों का प्रसार जारी रखने के लिए प्रोत्साहित करता है। इस साल पहली बार प्रस्ताव में हिंदी भाषा का उल्लेख है। इस संकल्प में पहली बार बांग्ला और उर्दू का भी उल्लेख है।

संयुक्त राष्ट्र महासभा की ओर से बहुभाषावाद पर भारत के प्रस्ताव को पारित किया गया है। संयुक्त राष्ट्र ने अपनी भाषाओं में हिंदी को शामिल कर लिया है। प्रस्ताव में संयुक्त राष्ट्र के कामकाज में हिंदी व अन्य भाषाओं को भी बढ़ावा देने का पहली बार जिक्र किया गया है।

संयुक्त राष्ट्र महासभा की छह आधिकारिक भाषाएं हैं। इनमें अरबी, चीनी(मैंडरिन), अंग्रेजी, फ्रेंच, रूसी और स्पेनिश शामिल है। इसके अलावा अंग्रेजी और फ्रेंच संयुक्त राष्ट्र सचिवालय की कामकामी भाषाएं हैं। लेकिन, अब इसमें में हिंदी को भी शामिल किया गया है। इसका साफ मतलब यह है कि संयुक्त राष्ट्र के कामकाज, उसके उद्देश्यों की जानकारी यूएन की वेबसाइट पर अब हिंदी में भी उपलब्ध होगी।

हिंदी को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार लंबे समय से प्रयास कर रही है। कई हिंदी सम्मेलनों में संयुक्त राष्ट्र में हिंदी को आधिकारिक मान्यता दिलाने की मांग उठ चुकी है। इन सबके बीच पिछले महीने ही भारत सरकार की ओर से संयुक्त राष्ट्र में हिंदी भाषा के उपयोग को बढ़ावा देन के लिए आठ लाख अमेरिकी डॉलर का सहयोग दिया गया था।

संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी प्रतिनिधि टीएस तिरुमूर्ति ने बताया कि यूएन में हिंदी को बढ़ावा के लिए 2018 में 'हिंदी @ यूएन' परियोजना आरंभ की गई थी। इसका उद्देश्य संयुक्त राष्ट्र की सार्वजनिक सूचनाएँ हिंदी में देने को बढ़ावा देना और दुनियाभर के करोड़ों हिंदी भाषी लोगों के बीच वैश्विक मुद्दों के बारे में अधिक जागरूकता लाना है। मिशन के तहत भारत 2018 से यूएन के वैश्विक संचार विभाग (डीजीसी) के साथ साझेदारी कर रहा है।

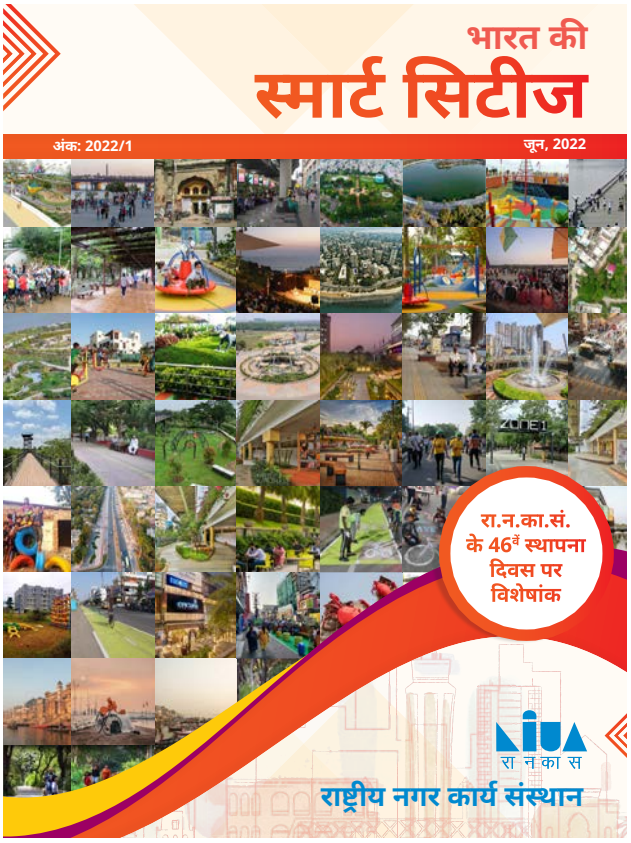
भारत की
स्मार्ट सिटीज
अंक: 2022/1
जून, 2022
रा.न.का.सं. के 46वें स्थापना दिवस पर विशेषांक
NIUA
रा न का स
राष्ट्रीय नगर कार्य संस्थान

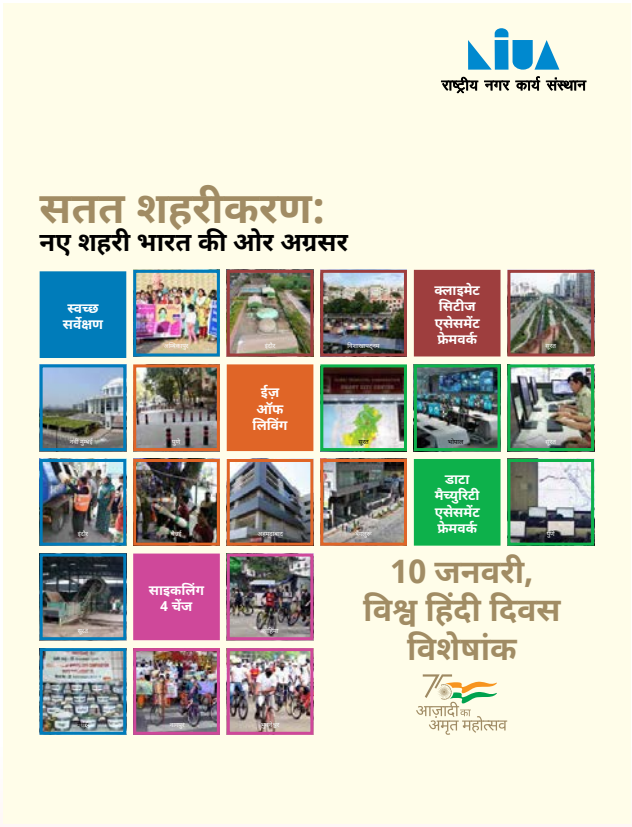
NIUA
राष्ट्रीय नगर कार्य संस्थान
सतत शहरीकरण:
नए शहरी भारत की ओर अग्रसर
स्वच्छ सर्वेक्षण
क्लाइमेट सिटीज एसेसमेंट फ्रेमवर्क
ईज़ ऑफ लिविंग
डाटा मैच्युरिटी एसेसमेंट फ्रेमवर्क
साइकलिंग 4 चेंज
10 जनवरी,
विश्व हिंदी दिवस
विशेषांक
आज़ादी का अमृत महोत्सव

संस्थान में जनवरी, 2022 से जून, 2022 के दौरान राजभाषा नीति के कार्यावयन एवं प्रोत्साहन संबंधित गतिविधियाँ

- संस्थान में 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाया गया। संस्थान में विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर विश्व हिंदी दिवस विशेषांक का प्रकाशन भी किया गया। जिसका विषय "सतत शहरीकरण: नए शहरी भारत की ओर अग्रसर" था।
- संस्थान में इस तिमाही की कार्यशाला का आयोजन दिनांक 22.03.2022 को पूर्वाह्न 11:00 बजे किया गया है । जिसमें संस्थान के कार्मिकों ने भाग लिया। कार्यशाला का विषय – "सरकारी काम काज में तकनीकी शब्दावली का प्रयोग" था। इस कार्यशाला को वर्चुअल कान्फ्रेसिंग के माध्यम से भी किया गया जिसमें व्याख्यान हेतु श्री प्रेम सिंह तोमर, वरिष्ठ हिंदी अनुवाद अधिकारी, एम्स को आमंत्रित किया गया था। इस बैठक का आयोजन कोविड-19 महामारी के कारण सामाजिक दूरी के नियमों का पालन करते हुए किया गया।
- जनवरी-मार्च, 2022 की तिमाही के दौरान संस्थान की राजभाषा के प्रगामी प्रयोग संबंधी तिमाही प्रगति रिपोर्ट भाग-। तथा भाग-।। राजभाषा विभाग के पोर्टल पर अपडेट कर दी गई।
- संस्थान में जनवरी-मार्च, 2022 के दौरान किए गए राजभाषा कार्यावयन संबंधित कार्यों की समीक्षा करने के लिए राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन 29.03.2022 को श्री हितेश वैद्य, निदेशक, रा.न.का.सं. की अध्यक्षता में किया गया।
- अप्रैल-जून, 2022 के दौरान संस्थान में तिमाही की कार्यशाला का आयोजन दिनांक दिनांक 20.06.2022 को अपराह्न 03:00 बजे निदेशक (रा.न.का.सं.) की अध्यक्षता में किया गया। कार्यशाला का विषय – 'सरकारी काम काज में हिंदी में टिप्पणियों का प्रयोग' है। कार्यशाला में व्याख्यान हेतु श्रीमती चित्रा वधवा, सहायक निदेशक (राजभाषा) भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, धरोहर भवन, 24 तिलक मार्ग, सिकंदरा रोड़ नई दिल्ली - 110001 को व्याख्यान हेतु आमंत्रित किया गया था।
- अप्रैल-जून, 2022 के दौरान संस्थान की राजभाषा के प्रगामी प्रयोग संबंधी तिमाही प्रगति रिपोर्ट राजभाषा विभाग के पोर्टल पर अपडेट कर दी गई।
- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की राजभाषा प्रगामी प्रयोग संबंधी छमाही अवधि 1 अक्टूबर, 2021 से 31 मार्च, 2022 तक की छमाही रिपोर्ट भर कर भेज दी गई थी।
- संस्थान में 'संवाद' हिंदी पत्रिका का जुलाई से दिसंबर, 2021 के अंक को प्रकाशन कर लाभार्थियों में वितरण किया जा चुका है। जिसका विषय "सतत शहरीकरण : नए शहरी भारत की ओर बढ़ते कदम" था। जिसे संस्थान की वेबसाइट और राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर भी अपलोड कर दिया गया है।
- निदेशक महोदय ने इस महत्वपूर्ण मद पर प्रतिक्रिया करते हुए कहा कि संस्थान की अंग्रेजी वेबसाइट पुनः विकसित की गई है, और वेबसाइट को द्विभाषी करने के संबंध में कार्य प्रगति पर हैं।
- संस्थान में 8 मार्च, 2022 को विश्व महिला दिवस मनाया गया तथा एक आकर्षक पोस्टर भी तैयार किया गया।
- श्री नवीन माथुर, कार्यकारी अधिकारी (कार्यवाहक) ने बताया कि गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा जारी वर्ष 2022-2023 के वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु संस्थान के समस्त अधिकारियों के लिए वार्षिक कार्यक्रम परिचालित गया जिसे संस्थान के इन्टरानेट एवं राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की वेबसाइट : www.rajbhasha.gov.in पर भी देख सकते हैं।
- संस्थान में "भारत की स्मार्ट सिटीज" पत्रिका का प्रकाशन किया गया है। जिसे 25 जून, 2022 को संस्थान के 46वें स्थापना दिवस पर जारी किया गया है। पत्रिका का ड्राफ्ट भी प्रस्तुत किया गया। बैठक में उपस्थित समस्त सदस्यों ने सराहना की। इस पत्रिका को 100 स्मार्ट सिटीज एवं अन्य पाठकों को वितरित किया जाएगा। इस पत्रिका को संस्थान की वेबसाइट पर भी देखा जा सकता है। इस पत्रिका का शीघ्र ही गृहमंत्रालय की वेबसाइट पर भी अपलोड किया जाएगा।
- संस्थान में 21 जून, 2022 को 'अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस' मनाया गया। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस में संस्थान सभी कार्मिकों को योग करने हेतु आंमत्रित किया गया। तथा इस अवसर पर एक आकर्षण पोस्टर एवं संदेश भी जारी किया गया।

▪ संस्थान में हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन

प्रशासनिक शब्दावली

Framework	ढाँचा	शहरी आधारभूत ढाँचा विकास परियोजना राज्य के अनेक शहरों में कार्यांवित है।
Franchise	मताधिकार, नामाधिकार	महिलाओं ने भी बढ़-चढ़कर मताधिकार का प्रयोग किया।
Free competition	मुक्त स्पर्धा, खुली प्रतियोगिता	हजारों खिलाड़ी इस मुक्त स्पर्धा में किस्मत आजमाते हैं, लेकिन सिर्फ कुछ खिलड़ियों को पात्र घोषित किया जाता है।
Freelance	स्वच्छंद	प्रत्येक नागरिक को नियत समय पर होने वाले चुनावों में स्वच्छंद रूप से मतदान करने का अधिकार है।
Frictional unemployment	अस्थाई बेरोजगारी	वर्तमान पूँजीवादी उद्योगों में स्थायी और अस्थायी बेरोजगारी निहित है।
Fundamental rules	मूल नियमावली	संगठन अपनी मूलभावना व मूल नियमावली से भटकेगा नहीं।
Further action	अगली कार्रवाई	इसके बाद ही अगली कार्रवाई होगी।
Gate pass	प्रवेश-पत्र	अभ्यर्थी अपना प्रवेश-पत्र आयोग की वेबसाइट से डाउनलोड करें।
Gazetted holiday	राजपत्रित अवकाश	वर्ष 2022 में केंद्र सरकार के राजपत्रित अवकाश की सूची प्रस्तुत है।
General meetings	साधारण सभा	नगर पालिका की साधारण सभा की बैठक हुई।
General practice	सामान्य पद्धि	बारकोड-पहचान प्रौद्योगिकी का प्रयोग करना एक सामान्य पद्धति है।
Geo- chemist	भू-रसायनज्ञ	वह एक भू-रसायनज्ञ के पद पर कार्यरत है।
Glaring	सुस्पष्ट	फाइलों पर लिखी टिप्पणियाँ सुस्पष्ट होनी चाहिए।
Global tender	वैश्विक निविदा	मेट्रो रेल निगम वैश्विक निविदा प्रक्रिया के द्वारा ही सामान खरीदेगा।
Governing body	शासी निकाय	निदेशक को हाल ही में शासी निकाय द्वारा नियुक्त किया गया था।
Government of India Undertaking	भारत सरकार उपक्रम	स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद रेलवे पूरी तरह से भारत सरकार उपक्रम बन गया।
Graduate trainee	स्नातक प्रशिक्षु	इन सभी छात्रों में से कोई भी स्नातक प्रशिक्षु नहीं है।
Grant-in-aid	सहायता अनुदान	हमारे संस्थान को मंत्रालय से सहायता अनुदान मिलता है।
Gratuity	उपदान	कार्यमुक्ति / सेवानिवृति पर उपदान मद में किया गया भुगतान।
Grid Structure	ग्रिड संरचना	ग्रिड संरचना की विस्तृत जानकारी उपलब्ध करानी चाहिए।
Grievance redressal	शिकायत निवारण	कार्यालय ने कर्मचारियों के लिए शिकायत निवारण प्रकोष्ठ की स्थापना की।
Growth rate	संवृद्धि दर	इन चारों घटकों के मेल से ही जीडीपी संवृद्धि दर में वृद्धि और लोगों की आय बढ़ाई जा सकती है।
Guardian	अभिभावक	छात्रों के अभिभावक संतुलित वातावरण बनाने में पहल करें।
Guidance	मार्गदर्शन	इसका उद्देश्य पाठकों का मार्गदर्शन करना है।
Half-holiday	आधी छुट्टी	शनिवार को आधी छुट्टी होती है।
Handbook	पुस्तिका	गीता प्रेस में धर्म प्रचार के उद्देश्य से कई धार्मिक पुस्तिकाएँ छपती हैं
Hand-operated	हस्त चालित	यह हस्त-चालित रूप से नियंत्रित था।
Hand-over	सौंपना	कविताओं की एक किताब मैं तुम्हें स्वयं सौंपना चाहता था।
Handwritten	हस्तलिखित	संग्रहालय में कई गणमान्य लोगों के हस्तलिखित पत्र सुरक्षित हैं।
Heading	शीर्षक	आपको अपनी प्रविष्टि के लिए एक शीर्षक निर्दिष्ट करना चाहिए।

वाक्यांश और अभिव्यक्तियाँ

Corrections and Alterations	शोधन और परिवर्तन
Damage and Deficiency report	क्षति और कमी की रिपोर्ट
Day to Day Administrative work	नित्य का प्रशासनिक कार्य, दैनंदिन प्रशासनिक कार्य
Departmental action is in progress	विभागीय कार्रवाई की जा रही है
Deputation of Officers on short term contract	अल्पकालिक संविदा पर अधिकारियों की प्रतिनियुक्ति
Detailed enquiry	व्यापक जाँच, ब्यौरेवार जाँच
Disposal of cases	मामलों का निपटारा
Disregarding the facts	तथ्यों की उपेक्षा करते हुए
Do the needful	आवश्यक कार्रवाई करें
Draft, as amended, may be issued	यथासंशोधित मसौदा/प्रारूप जारी किया जाए
Draft as amended is put up	यथासंशोधित प्रारूप प्रस्तुत है
Draft for approval	अनुमोदनार्थ प्रारूप, अनुमोदनार्थ मसौदा
Duly complied	विधिवत पालन किया गया
Early action in the matter is requested	अनुरोध है कि इस मामले में शीघ्र कार्रवाई करें
Early orders are solicited	शीघ्र आदेश देने का अनुग्रह करें
Effective steps should be taken to clear the arrears	बकाया कार्य के निबटारे के लिए
Empowered to sanction	मंजूरी देने का अधिकार है
Exigencies of administrative work	प्रशासनिक कार्य की तात्कालिक आवश्यकताएँ
Expedite action	कार्रवाई शीघ्र करें
Expedite in your letter	आपके पत्र में स्पष्ट किया गया
Expedite submission of report	रिपोर्ट शीघ्र प्रस्तुत करने की व्यवस्था करें
Facilities are not available	सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हैं
Failing which	ऐसा न करने पर
Figures for the corresponding period of the last year are not readily available	तदनुरूपी अवधि के पिछले वर्ष के आँकड़े तत्काल उपलब्ध नहीं हैं
Final concurrence is accorded	अंतिम सहमति दी जाती है
Final settlement of accounts	अंतिम लेखा निपटारा
For action	कार्रवाई के लिए
For advice	परामर्श के लिए
For approval	अनुमोदनार्थ, अनुमोदन के लिए
For concurrence, Please	सहमति के लिए

राष्ट्रीय नगर कार्य संस्थान की 46 वर्ष की गौरव यात्रा

पूनम मल्होत्रा, हिंदी अनुवादक

राष्ट्रीय नगर कार्य संस्थान (रा.न.का.सं.) आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय, भारत सरकार का शीर्ष थिंक टैंक तथा अनुसंधान, क्षमता निर्माण, नीति समर्थन और ज्ञान प्रसार के लिए एक प्रमुख राष्ट्रीय संस्थान है, जिसकी शहरी क्षेत्र में विशेषज्ञता है। इसकी स्थापना 1976 में भारत सरकार के आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय के अधीन एक स्वायत्त निकाय के रूप में की गई थी। संस्थान की स्थापना अनुसंधान और व्यवहार के बीच के अंतराल को पाटने तथा शहरी विकास के लिए प्रवृत्तियों और संभावनाओं के आलोचनात्मक और वस्तुपरक विश्लेषणों को पूरा करने के लिए की गई थी। इस संस्थान ने आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय, राज्य सरकारों और शहरों को नीति निर्माण और कार्यक्रम के मूल्यांकन तथा निगरानी के लिए सहायता प्रदान की है। रा.न.का.सं. पाँच व्यापक विषयगत क्षेत्रों के माध्यम से भारत के शहरी संवाद को परिवर्तित करने की दिशा में कार्यरत है जैसे: (i) शहरीकरण एवं आर्थिक वृद्धि (ii) शहरी शासन एवं वित्त (iii) शहरी बुनियादी ढांचा एवं निर्मित पर्यावरण (iv) पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन एवं रेसिलिएंस एवं (v) सामाजिक विकास।

राष्ट्रीय नगर कार्य संस्थान (रा.न.का.सं.) भारत में शहरी विकास के लिए एक विचारशील अग्रणी और ज्ञान केंद्र के रूप में उभरा है। संस्थान का विजन है: शहरी भारत के लिए एकीकृत समाधानों को बढ़ावा देना है। संस्थान का लक्ष्य है: शहरी क्षेत्र में प्रभावी नवाचारों का समर्थन करने के लिए नए शोध एवं विशेषज्ञता विकसित करना और ज्ञान विनिमय, प्रशिक्षण व क्षमता विकास के माध्यम से उनका प्रसार करना है। रा.न.का.सं. ने आवासन एवं शहरी कार्य मंत्रालय, राज्य सरकारों और शहरों को नीति निर्माण और कार्यक्रम के मूल्यांकन तथा निगरानी के लिए सहायता प्रदान की है।

रा.न.का.सं. की उपलब्धियों में सबसे उल्लेखनीय है शहरीकरण पर राष्ट्रीय आयोग तथा 1992 के 74 वें संवैधानिक संशोधन के प्रारूप तैयार करने में और हाल ही में राष्ट्रीय शहरी नीति के मसौदे, मास्टर प्लान-2041 के मसौदे में योगदान। संस्थान ने विभिन्न शहरी मिशनों और कार्यक्रमों के परिणामों को आकार देने और लक्ष्यों को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है: जे.एन.एन.यू.आर.एम., स्मार्ट सिटीज मिशन, अमृत, हृदय, एन.यू.एल.एम., पीएम.ए.वाई., एन.यू.एल.एम. और एस.बी. एम.।

वर्तमान में यह संस्थान 4000 से अधिक शहरों और कस्बों, 3000 से अधिक नगर निकायों, 100 स्मार्ट शहरों और 500 अमरुत शहरों में राष्ट्रीय शहरी मिशनों को लागू करने में आ.एवं श.का.मं. का समर्थन करने के लिए निरंतर सहयोग कर रहा है। स्वच्छ गंगा के राष्ट्रीय अभियान के अंतर्गत गंगा नदी बेसिन में नदी स्वास्थ्य के शहरी कारकों पर कार्य करना मंत्रालय के नेतृत्व वाली परियोजनाओं के पुष्प गुच्छ में एक नया पुष्प है। रा.न.का.सं., आत्मनिर्भर भारत अभियान के अंतर्गत एक आत्मनिर्भर राष्ट्र के लिए विकासशील नीतियों की दिशा में भी काम कर रहा है। संस्थान शहरी भारत को एक डिजिटल, सुलभ, सतत, रेसीलिएंट और समावेशी राष्ट्र में बदलने की दृष्टि से अनुसंधान और प्रचार- प्रसार के क्षेत्र में आगे बढ़ रहा है। अन्य क्षेत्रों के साथ-साथ इसका प्रमुख फोकस शहरीकरण, शहरी शासन और नीति, नगर निगम वित्त, भूमि अर्थशास्त्र, शहरी नियोजन तथा निर्मित पर्यावरण, पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन तथा रेसीलिएंस, व्यवसाय करने में आसानी, शहरी डाटा तथा सूचना प्रणाली तथा ज्ञान नेटवर्क, स्मार्ट शहर, जल तथा स्वच्छता, शहरी आजीविका तथा रहने योग्य शहर शामिल हैं।

रा.न.का.सं. द्वारा भविष्य की तैयारी के लिए अपने अतीत से छलांग लगाते हुए, पाँच नए केंद्रों जैसे शहरों के लिए जलवायु केंद्र, डिजिटल शासन केंद्र, नगर वित्त और शासन केंद्र, समावेशी विकास केंद्र और शहरीकरण और आर्थिक विकास केंद्र के अंतर्गत अपने कार्य क्षेत्रों में विविधता लाया है। ये केंद्र राज्यों और शहरों को संस्थान के पाँच प्रमुख उपकरणों- नीति और योजना, कार्य अनुसंधान और प्रसार, ज्ञान प्रबंधन और क्षमता निर्माण, प्रौद्योगिकी, डेटा समाधान, नवाचार और भागीदारी के साथ सहायता प्रदान करते हैं। रा.न.का.सं. ने अपने विभिन्न कार्यों के साथ-साथ शहरी प्रशासन और नीति, नगरपालिका वित्त, शहरी नियोजन और निर्मित पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन एवं रेसीलिएंस, व्यवसाय करने को सरल बनाने, शहरी डेटा और सूचना प्रणाली, जल और स्वच्छता के फोकस क्षेत्रों को पृथक करने के लिए इन समर्पित केंद्रों की स्थापना की है। ये केंद्र संस्थान की रीढ़ बनेंगे और सरकारी नीतियों के कार्यान्वयन और नए शहरी भारत की नींव रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। इसके अलावा, संस्थान अपनी सभी पहलों और कार्यक्रमों के माध्यम से सतत विकास लक्ष्यों (एस.डी.जी.) को प्राप्त करने की दिशा में प्रयास करने के लिए प्रतिबद्ध है। एस.डी.जी. 11.1 हासिल करने के लिए भारत का दृष्टिकोण प्रधान मंत्री आवास योजना में निहित है। राष्ट्रीय नगर कार्य संस्थान व्यापक अनुसंधान और नीति परामर्श, डेटा समाधान, प्रौद्योगिकी और क्षमता निर्माण के माध्यम से राज्यों और शहरों को एस.डी.जी. के साथ संरेखित करने और भारत में आवास क्षेत्र में सुधार पर भविष्य के निर्देशों के लिए एक नए सिरे से चर्चा शुरू करने के लिए प्रतिबद्ध है।

25 जून 2022 को राष्ट्रीय नगर कार्य संस्थान ने संस्थान के समस्त कार्मिकों के साथ अपनी स्थापना की 46वीं वर्षगांठ मनाई।

- 25 जून, 2022 को राष्ट्रीय नगर कार्य संस्थान के 46 वें स्थापना दिवस का आयोजन

महिला सशक्तिकरण

श्री प्रविन ग्रोवर, सहायक लेखाकार

महिला सशक्तिकरण' के बारे में जानने से पहले हमें ये समझ लेना चाहिये कि हम 'सशक्तिकरण' से क्या समझते है। 'सशक्तिकरण' से तात्पर्य किसी व्यक्ति की उस क्षमता से है जिससे उसमें ये योग्यता आ जाती है जिसमें वो अपने जीवन से जुड़े सभी निर्णय स्वयं ले सके। महिला सशक्तिकरण में भी हम उसी क्षमता की बात कर रहे है जहाँ महिलाएँ परिवार और समाज के सभी बंधनों से मुक्त होकर अपने निर्णयों की निर्माता खुद हो।

पंडित जवाहर लाल नेहरु द्वारा कहा गया मशहूर वाक्य "लोगों को जगाने के लिये", महिलाओं का जागृत होना जरुरी है। एक बार जब वो अपना कदम उठा लेती है, परिवार आगे बढ़ता है, गाँव आगे बढ़ता है और राष्ट्र विकास की ओर उन्मुख होता है। भारत में, महिलाओं को सशक्त बनाने के लिये सबसे पहले समाज में उनके अधिकारों और मूल्यों को मारने वाले उन सभी राक्षसी सोच को मारना जरुरी है जैसे दहेज प्रथा, अशिक्षा, यौन हिंसा, असमानता, भ्रूण हत्या, महिलाओं के प्रति घरेलू हिंसा, बलात्कार, वैश्यावृति, मानव तस्करी और ऐसे ही दूसरे विषय। लैंगिक भेदभाव राष्ट्र में सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक अंतर ले आता है जो देश को पीछे की ओर ढ़केलता है। भारत के संविधान में उल्लिखित समानता के अधिकार को सुनिश्चित करने के लिए महिलाओं को सशक्त बनाना सबसे प्रभावशाली उपाय है इस तरह की बुराईयों को मिटाने के लिये।

लैंगिक समानता को प्राथमिकता देने से पूरे भारत में महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा मिला है। महिला सशक्तिकरण के उच्च लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये इसे हर एक परिवार में बचपन से प्रचारित व प्रसारित करना चाहिये। ये जरुरी है कि महिलाएँ शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रुप से मजबूत हो। चूंकि एक बेहतर शिक्षा की शुरुआत बचपन से घर पर हो सकती है, महिलाओं के उत्थान के लिये एक स्वस्थ परिवार की जरुरत है जो राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिये आवश्यक है। आज भी कई पिछड़े क्षेत्रों में माता-पिता की अशिक्षा, असुरक्षा और गरीबी की वजह से कम उम्र में विवाह और बच्चे पैदा करने का चलन है। महिलाओं को मजबूत बनाने के लिये महिलाओं के खिलाफ होने वाले दुर्व्यवहार, लैंगिक भेदभाव, सामाजिक अलगाव तथा हिंसा आदि को रोकने के लिये सरकार कई सारे कदम उठा रही है।

महिलाओं की समस्याओं का उचित समाधान करने के लिये महिला आरक्षण बिल-108वाँ संविधान संशोधन का पास होना बहुत जरुरी है ये संसद में महिलाओं की 33% हिस्सेदारी को सुनिश्चित करता है। दूसरे क्षेत्रों में भी महिलाओं को सक्रिय रुप से भागीदार बनाने के लिये कुछ प्रतिशत सीटों को आरक्षित किया गया है।

सरकार को महिलाओं के वास्तविक विकास के लिये पिछड़े ग्रामीण क्षेत्रों में जाना होगा और वहाँ की महिलाओं को सरकार की तरफ से मिलने वाली सुविधाओं और उनके अधिकारों से अवगत कराना होगा जिससे उनका भविष्य बेहतर हो सके। महिला सशक्तिकरण के सपने को सच करने के लिये लड़िकयों के महत्व और उनकी शिक्षा को प्रचारित करने की जरुरत है।

नौकरी

केदार सिंह, केयरटेकर

परिचय

एक ऐसा जरिया जिसे हम अपने कमाने के लिए चुनते हैं, और जिससे हम अपने जीवन की जरूरतों को पूरा करते हैं उसे हम 'काम' कहते हैं। जब कोई बच्चा पैदा होता है तो उसके माता-पिता अपने मन में कल्पना करने लगते हैं कि वह अपने जीवन में क्या काम करेगा या भविष्य में क्या बनेगा? वो यह अनुमान लगाने लगते है कि वह इस दुनिया से क्या सीखेगा और किस प्रकार कितना कमायेगा। नौकरी करने का मतलब केवल अपने दैनिक आधार पर अपने काम को करना और केवल अपने लक्ष्य को पूरा करना नहीं है।

इसका मतलब यह है कि आप जीवन में जो कुछ भी कार्य करें उसे जिम्मेदारी पूर्वक ठीक से करें। खाना बनाना उन लोगों के लिए काम नहीं है जो कि घर में अपने परिवार के लिए खाना बनाते है, लेकिन यह उनके लिए एक काम है जिसके जरिये वो पैसा कमाते हैं। इसी तरह इस दुनिया में ऐसे कई पेशे हैं और आप उन सभी कार्यों में निपुण नहीं हो सकते हैं। आप उनमें से किसी एक में अवश्य निपुण हो सकते हैं और आप उसे एक नौकरी के रूप में चुन सकते हैं।

मुझे किस तरह की नौकरी सबसे ज्यादा पसंद है?

इस दुनिया में सीखने के लिए बहुत कुछ है, लेकिन वास्तव में सब कुछ सीखना हमारे लिए संभव नहीं है पर आप इसका अनुभव अवश्य ले सकते हैं। आप एक ऐसे कार्य करने के बारे में सोचे जो आपको पसंद हो और आपको वह करने की अनुमति मिल सके। यह निश्चित रूप से आपके लिए रोचक होगा और आप इसमें अच्छा प्रदर्शन भी कर सकेंगे। इसी तरह मुझे नई-नई चीजें सीखने और खोजने का बहुत शौख है और मैं एक पेशेवर लेखक के रूप में काम करता हूँ।

यह पेशा मुझे एक ही जगह रहकर अलग-अलग चीजें सीखने में मेरी मदद करता है। यह मुझे किसी विशेष विषय पर शोध करने के लिए प्रेरित करता है जो इसे सर्वश्रेष्ठ बनाता है। अगर मैं एक इंजीनियर या डॉक्टर होता तो मैं कभी भी उसपर खरा नहीं उतरता, क्योंकि उनका कार्य बहुत ही व्यस्त होता है। हलांकि वो भी नई खोज करना पसंद करते हैं पर समय की कमी के कारण उनके लिए जीवन के विभिन्न पहलुओं के बारे में सीखना इतना आसान नहीं होता हैं।

मेरा पेशा कितना दिलचस्प हैं?

मुझे पता है कि मैं किसी को किसी पेशे के लिए मजबूर नहीं कर सकता हूँ, लेकिन मैं उसके अंदर की सुंदरता को तराश सकता हूँ और आपको आपके पेशे का एक दिलचस्प हिस्सा दिखा सकता हूँ। जिस प्रकार एक संगीतकार अपने पसंदीदा वाद्य यंत्र पर हाथ फेरने पर रोमांचित महसूस करता है उसी तरह जब मैं कुछ नया सीखता हूँ, तो उन भावनाओं को अपने शब्दों में पिरोता हूँ तो मुझे बहुत ही रोमांचित महसूस होता है।

मैं एडवर्ड बुलवर लिटन द्वारा लिखित एक प्रसिद्द पंक्ति 'द पेन इज़ पावरफुल देन द स्वार्ड' से अवगत कराना चाहूँगा। इसका मतलब है कि कलम में तलवार से भी ज्यादा ताकत होती है। क्योंकि तलवार का इस्तेमाल केवल किसी को मारने के लिए किया जाता है, और किसी की हत्या किसी भी समस्या का हल नहीं है। जबकि तलवार की अपेक्षा एक कलम में कहने, वकालत करने और लोगों के विचारो को व्यक्त करने की शक्ति होती है।

जिस तरह से एक फिल्म निर्माता की नजर एक फिल्म में एक परफेक्ट शार्ट बनाने के लिए होती है। उसी तरह एक लेखक अपनी रचना को सभ्य और लोकप्रिय बनाने के लिए बहुत सारे विवरणों को जोड़ता है। इसके लिए उसे शोध और सीखने की जरुरत होती है तभी एक लेख या किताब दिलचस्प बन सकता है।

मैं अपने काम में रोज नई-नई चीजों को सिखाता हूँ, और यह वास्तव में दिलचस्प होता है। मान लीजिए मुझे लकड़ी की पेंटिंग पर लिखना है, तो मुझे इसके बारे में सबकुछ खोजने की जरूरत होगी कि यह क्या है? यह कहाँ से शुरू हुआ? दुनिया में कितने और किस हिस्से में लोग इस कला में रूचि रखते हैं? बहुत सारी और भी ऐसी चीजें हैं जो वास्तव में मुझे उसके बारे में अधिक ज्ञान प्राप्त करने में मेरी मदद करता है।

मेरी नौकरी का सबसे अच्छा हिस्सा क्या है?

इस नौकरी में मैं जो महसूस करता हूँ, जो मुझे लगता है, मैं जो देखता हूँ, जो सोचता हूँ, मैं सब कुछ लिखने के लिए पूर्णतया स्वतंत्र हूँ। मुझे अपने विचार व्यक्त करने की स्वतंत्रता है और यह मेरे पेशे के सबसे अच्छे हिस्से में से एक है। इससे दूसरों के लिए लिखने के अलावा आप अपनी शब्दावली और ज्ञान भी बढ़ा सकते हैं।

मैं किसी विशेष पेशे की वकालत नहीं करता लेकिन मैं अपनी नौकरी को कुछ मुख्य कारणों से सही ठहरा रहा हूँ। इसके कई कारण हैं, जिनमें से सीखना कभी भी न खत्म होने वाली प्रक्रिया है और मेरा पेशा मुझे सीखने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह मेरे ज्ञान को बढ़ाता है, हालांकि मैं डॉक्टर नहीं हूँ फिर भी मैं कई बीमारियों और सर्जरी के बारे में जानता हूँ।

मैं एक इंजीनियर भी नहीं हूँ लेकिन मैं अपनी शोध की वजह से कई इंजीनियरिंग के शब्द को जनता हूँ। जब मैं अपने शोध के द्वारा कुछ जानकारी इकट्ठा कर लोगों के बीच खड़ा होता हूँ और अपनी अर्थव्यवस्था या किसी शोध के बारे में गंभीर चर्चा करते हैं, तो ये सब केवल और केवल मेरी नौकरी के कारण ही संभव है।

क्या वैज्ञानिक युग में लेखन व्यवसाय में होना उचित है?

हां बेशक, जिस तरह एक खिलाड़ी को भी कुछ मनोरंजन की जरूरत होती है, उसी तरह या तो आप एक वैज्ञानिक हैं या कोई सलाहकार, आपको अपने लिखने के बारे में बताने और उसके बारे में समझाने की जरूरत है। हालांकि लोगों को लगता है कि यह बहुत ही आसान काम है और इसे कोई भी कर सकता है। अगर आप इस काम में नए है या आप इसे अभी नए जॉब के रूप में शुरू करते है तो यह कार्य थोड़ा मुश्किल अवश्य लगता है, लेकिन अनुभव के द्वारा यह थोड़ा आसान हो जाता है।

अपने काम के प्रति लोगों को आकर्षित करने के लिए और लोगों में प्रकाशित करने के लिए हम अपने काम का वर्णन और उनकी सलाह के लिए हम किसी पेशेवर लेखक के पास जाते हैं। जिस तरह से हम सभी जानते है कि दीवार कैसे बनाई जाती है, लेकिन जब कोई पेशेवर इस काम को करते हैं तो उनके काम में एक अलग फिनिशिंग होती है और वो काम भी काफी आकर्षक होता हैं।

अपने व्यवसाय में दूसरों की मदद करने के अलावा आजकल कुछ प्रसिद्ध ब्लॉगर जैसे- मोज़, कॉपीब्लॉगर, स्मैशिंग मैग्जीन, आदि एक इंजीनियर या डॉक्टर से अधिक कमाते हैं इसलिए यह कहना गलत नहीं होगा कि हर पेशा अपने आप में सर्वश्रेष्ठ होता है। बस आप अपनी रुचि और अपने जुनून को अपनाये लेकिन दूसरों का अनुसरण न करें तो यह निश्चित रूप से आपको एक दिन सफल बनाएगी।

क्या पैसा नौकरी को दिलचस्प बनाती है?

आमतौर पर आजकल छात्र कुछ प्रचलित व्यवसायों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, इनमें से कुछ इसे पसंद करते हैं तो कुछ नापसंद करते हैं। वो या तो प्रवृत्ति का पालन करते हैं या परिवार के दबाव में इस तरह का निर्णय लेते हैं। इस तरह उन्हें अच्छी कमाई करने वाली नौकरी भी मिल जाती है, लेकिन वो अपनी नौकरी इस नौकरी में रूचि न होने की कमी के कारण कभी भी अपना काम करते हुए कभी भी आतंरिक सुख, शांति और खुशी महसूस नहीं करते हैं।

इसलिए पैसे के बजाय आपको अपनी रुचि पर ध्यान केंद्रित करने की सलाह दी जाती है, जब एक बार आप अपनी पसंद जान जाते हैं कि आपको क्या अच्छा लगता हैं, और आपको क्या पसंद हैं, तो आप बस अपनी पसंद के पीछे जाए आप मुझपर पूर्ण विश्वास करें कि कोई भी पेशा छोटा नहीं होता है, बस धैर्य रखें क्योंकि कोई भी एक दिन में ही सफलता और प्रसिद्धि प्राप्त नहीं कर लेता है।

निष्कर्ष

मेरे लिए अपनी नौकरी से प्यार करने के पीछे कई कारण हैं और मैं इससे खुश हूँ। आप जिस भी पेशे से संबंध रखते हैं। उस पेशे में आप अच्छा बनें और अपने कार्य कौशल को चमकाने के लिए कड़ी मेहनत करें। इससे आपको हर जगह मदद मिलती है। आप अधिक से अधिक सीखने की कोशिश करें और पैसे के पीछे न भागे। आपका कार्य कौशल और आपकी मेहनत खुद-ब-खुद पैसे को अपनी ओर आकर्षित कर लेगा।

बच्चे को मोबाइल की लत

मौं. शाकिब, हिंदी टंकक

आजकल ज्यादातर बच्चे मोबाइल फोन की बुरी आदत का शिकार हो गए हैं। दरअसल जाने-अंजाने में बच्चों को मोबाइल की लत लगवाने वाले भी माता-पिता ही होते हैं। बचपन में रोते हुए बच्चे को फोन थमा कर चुप कराना माता-पिता के लिए सबसे आसान विकल्प होता है। धीरे-धीर फोन बच्चों को खुश रखने का जरिया बन जाता है और उन्हें मोबाइल की बुरी लत लग जाती है। अगर आप वाकई बच्चे की मोबाइल फोन की लत बदलना चाहते हैं, तो अपनी रोजाना की आदतों में कुछ सुधार करके बच्चों से मोबाइल की बुरी आदत छुड़वा सकते हैं।

बच्चों में मोबाइल की आदत छुड़ाने के टिप्स: टेक्नोलॉजी के इस दौर में बच्चों का मोबाइल से खास लगाव हो चला है। कोरोना काल के बाद मोबाइल फोन कई बच्चों का बेस्ट फ्रेंड बन गया है। ऐसे में बच्चे अपने दिन का ज़्यादा से ज़्यादा समय मोबाइल के साथ ही बिताना करना पसंद करते हैं, जिसकी वजह से पेरेंट्स भी परेशान नजर आते हैं। क्या आपने कभी सोचा है कि आपकी कुछ गलतियां भी बच्चों की इस बुरी आदत के लिए ज़िम्मेदार हो सकती हैं।

अचानक से ना छीनें फोन

अगर आपके बच्चे को मोबाइल फोन की आदत पड़ चुकी है, तो बच्चों से अचानक फोन छीनने के बजाए उनकी आदत को धीरे-धीरे कम करने की कोशिश करें। इसके लिए आप बच्चों का मोबाइल इस्तेमाल करने का शेड्यूल तैयार कर सकते हैं।

सोशल मीडिया से बनाएं दूरी

बच्चे अक्सर माता-पिता को कॉपी करने की कोशिश करते हैं। ऐसे में सुबह उठने के बाद फोन इस्तेमाल करने से बचें और बच्चों को भी सुबह फोन यूज करने से रोकें। साथ ही बच्चों के सामने फोन में सोशल मीडिया पर रील्स ना देखें। इससे बच्चों की भी सोशल मीडिया और रील्स देखने में दिलचस्पी बढ़ने लगती है। और बच्चों को इसकी आदत बन जाती है। जिसको छुड़वाना लगभग नामुमकिन से हो जाता है।

टीवी शोज दिखाएं

बच्चों से मोबाइल की आदत छुड़वाने के लिए फोन में उनके फेवरेट टीवी शोज या कार्टून लगाने से बचें। बच्चे के पसंदीदा शो को आप टीवी पर लगाकर मोबाइल पर बच्चों की निर्भरता काफी हद तक कम कर सकते हैं।

खाने के समय ना यूज करें फोन

खाना खाते समय बच्चों को फोन बिल्कुल ना इस्तेमाल करने दें। साथ ही खुद भी खाने के दौरान फोन से दूरी बनाए रखें। खाना खाते वक्त टेबल के आस-पास भूलकर भी मोबाइल ना रखें।

फिजकल एक्टिविटी कराएँ

बच्चों को फोन में गेम खिलाने के बजाए, उन्हें इनडोर और आउटडोर गेम खेलने को कहें। बच्चों को मोबाइल से दूर रखने के लिए घर में उनके साथ गेम खेलने की कोशिश करें। साथ ही बच्चों को बाहर दोस्तों के साथ खेलने की भी सलाह दें।

काम में करें व्यस्त

बच्चा जब भी आपसे मोबाइल देने की जिद करे, तो ऐसे में आप किसी बहाने से उसको काम पर लगा सकते हैं। इससे बच्चा व्यस्त हो जाएगा और कुछ देर के लिए मोबाइल को भूल जाएगा. इसके लिए आप बच्चों से आर्ट और क्राफ्ट जैसी कुछ इंटरेस्टिंग चीजें भी करा सकते हैं।

इंटरनेट बंद रखें

मोबाइल की जिद करने पर बच्चों को नेट बंद करके ही फोन दें। क्योंकि इंटरनेट के बिना बच्चे ज़्यादा देर तक फोन में नहीं उलझेंगे और कुछ समय में धीरे-धीरे मोबाइल से दूरी बनाना शुरू कर देंगे।

महिला सशक्तीकरण और महिलाएँ

योगेश भट्ट, लेखाकार

महिला सशक्तीकरण को बेहद आसान शब्दों में परिभाषित किया जा सकता है कि इससे महिलाएँ शक्तिशाली बनती है जिससे वह अपने जीवन से जुड़े सभी फैसले स्वयं ले सकती है और परिवार और समाज में अच्छे से रह सकती है। समाज में उनके वास्तविक अधिकार को प्राप्त करने के लिए उन्हें सक्षम बनाना महिला सशक्तीकरण है।

आज के युग ऐसा युग है जिसमें महिलाओं को संविधान में कई अधिकार दिए गए हैं। आज महिलाएँ इस विकासशील भारत में विकसित बनाने के लिए अपना योगदान देती है परंतु फिर भी उन्हें कई बार अलग-अलग रूपों में प्रताड़ित किया जाता है तथा उनके अधिकारों का हनन किया जाता है। आज हर साल किसी भी परीक्षा में महिलाएँ समान रूप से शामिल होती हैं तथा पुरुषों से अधिक अंक भी लातीं हैं। परंतु कहीं ना कहीं यह भी सच है कि पैतृक सत्ता समाज होने के कारण पुरुषों को ही मान सम्मान दिया जाता है तथा आज भी कई ऐसे प्रांत हैं जहां बेटियों के होने पर निराशा जाहिर की जाती है। आज कई महिलाएँ जैसे किरण बेदी, सुष्मिता सेन,पद्मावती बंदोपाध्याय आदि सशक्त हैं। इन्हीं की तरह हमें भी सशक्तिकरण करना है ताकि वह भी महिला सशक्तिकरण का महत्व समझ पाऐं।

अगर वे अपने मूल अधिकारों के प्रति जागरूक होंगी तभी महिलाएँ इसके लिए लड़ सकेंगी। महिला सशक्तिकरण की दिशा में पहला कदम उनकी राय का समर्थन करने से शुरू होता है। उनका उपहास न करें या उनकी राय को दफन न करें। उनके आत्मविश्वास को बढ़ाएं और उनके आत्म-सम्मान का निर्माण करें। उन्हें अपने सपनों को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करें, मदद के लिए संसाधन प्रदान करें और उनके गुरु बनें। महिलाओं में अपने जीवन को आकार देने की नहीं बल्कि दुनिया को आकार देने की क्षमता है। महिला सशक्तिकरण के साथ शुरू करने के लिए समान अवसर और अपने निर्णय लेने का अधिकार मूल बातें हैं। मदद के लिए संसाधन प्रदान करें और उनके गुरु बनें। महिलाओं में अपने जीवन को आकार देने की नहीं बल्कि दुनिया को आकार देने की क्षमता है। महिला सशक्तिकरण के साथ शुरू करने के लिए समान अवसर और अपने निर्णय लेने का अधिकार मूल बातें हैं। मदद के लिए संसाधन प्रदान करें और उनके गुरु बनें। महिलाओं में अपने जीवन को आकार देने की नहीं बल्कि दुनिया को आकार देने की क्षमता है। महिला सशक्तिकरण के साथ शुरू करने के लिए समान अवसर और अपने निर्णय लेने का अधिकार मूल बातें हैं।

शिक्षा महिला सशक्तिकरण का सबसे बड़ा साधन है और एक ऐसा कारक भी है जो देश के समग्र विकास में मदद करता है। शिक्षा महिलाओं के जीवन में बदलाव ला सकती है। जैसा कि भारत के पहले प्रधान मंत्री ने एक बार उद्धृत किया था "यदि आप एक पुरुष को शिक्षित करते हैं तो आप एक व्यक्ति को शिक्षित करते हैं, हालांकि, यदि आप एक महिला को शिक्षित करते हैं तो आप पूरे परिवार को शिक्षित करते हैं।

भारत के ग्रामीण इलाकों में आज भी महिलाओं को उनके शिक्षा के अधिकार से वंचित किया जा रहा है। शिक्षा बाल विवाह को भी कम करेगी जो अभी भी भारत के कुछ हिस्सों में प्रचलित है और अधिक जनसंख्या को नियंत्रित करने में भी मदद करता है। सरकार ने महिलाओं की शिक्षा के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए वर्षों से कई योजनाएं शुरू की हैं जैसे कि सर्व शिक्षा अभियान, ऑपरेशन ब्लैक-बोर्ड, बेटी पढाओ बेटी बचाओ, और बहुत कुछ। शिक्षा महिलाओं को अच्छे और बुरे की पहचान करने, उनके दृष्टिकोण, सोचने के तरीके और चीजों को संभालने के तरीके को बदलने में मदद करती है। शिक्षा महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने में मदद करती है। अन्य देशों की तुलना में भारतीय महिलाओं की साक्षरता दर सबसे कम है। शिक्षा सभी का मौलिक अधिकार है और किसी को भी शिक्षा के अधिकार से वंचित नहीं किया जाना चाहिए। शिक्षा जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद करती है, घरेलू हिंसा या यौन उत्पीड़न के खिलाफ आवाज उठाने का आत्मविश्वास। बदलाव का हिस्सा बनें और शिक्षा की मदद से एक महिला को सशक्त बनाएं।

कामकाजी महिला का दोहरा दायित्व

मंजु सक्सेना, टेलिफोन ऑपरेटर

आज प्रत्येक वर्गीय स्त्री सुरक्षित है दिन-प्रतिदिन के आर्थिक समस्याओं को पूरा करने के लिए दफ्तरों, घरों में कामकाज आदि जगहों पर जाकर काम करती है। आजकल दुनिया में काफी परिवर्तन आया है पुराने दिन की, तरह महिला अब अशिक्षित नहीं रही है पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर सर्वत्र जगह चल रही है और कामयाब भी हो रही है।

महिला आज एक सफल इंजीनियर, डॉक्टर, शिक्षक, दफ्तरों में काम, घरों में काम करने जाना ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जहाँ महिलाओं ने अपनी काबलियत का प्रमाण न दिया हों। सुबह से शाम तक दफ्तरों में बैठकर कार्य करना फिर परिवार के लिए खाना बनाना, बच्चों पति और घर की छोटी-बड़ी जरूरतों का विशेष ध्यान देना बखूबी करती हैं। पुरूषों के पास दफ्तर से आकर आराम करने का विकल्प होता है लेकिन महिलाओं के लिए ऐसा नहीं है चाहे वह कितनी भी थकी हो उन्हें घर पर अपना कर्तव्य पालन प्रतिदिन करना पड़ता है हालाँकि महिलाएँ अपने-अपने क्षेत्र में बेहतरीन कार्य करती है जिससे समाज और उनके परिवार को उनपर नाज़ होता है।

भले महिलाएँ आज सम्पूर्ण रूप से आत्मनिर्भर हैं दफ्तर के साथ परिवार की हर छोटी बड़ी चीजो का ध्यान रखती है पर वह अपना ध्यान नहीं रख पाती वह अपने जीवन के हर किरदार माँ, बेटी, बहू, बहन बखूबी निभाती है अपने कर्तव्य का पालन करती है।

महिलाओं के नौकरी करने के कारण घर में कई आर्थिक समस्याएं दूर हो गई हैं पर दफ्तरों में काफी भदभाव का सामना भी करना पड़ता है पर वह चुपचाप सहन कर लेती हैं।

महिलाएँ समाज घर की सोच की फिक्र न करते हुए खुद अपने पांव पर खड़े होकर समाज और परिवार के लिए मिसाल कायम करती हैं उनकी सोच आज हर दिशा समाज, देशों में फैला है चाहे वह व्यापार हो, राजनैतिक पद महिलाओं के बगैर समाज की कल्पना करना बेकार है हर क्षेत्र में पुरूषों से कम नहीं । अगर महिलाएँ शिक्षित न हो तो आधा देश अशिक्षित रह जाएगा और अगर महिला शिक्षित है तो परिवार भी शिक्षित रहता है, सोच भी शिक्षित रहती है।

भले आज महिलाएँ हर क्षेत्र में आगे बड़ रही है पर अभी भी महिलाओं को दफ्तर में पुरू, सहकर्मी से प्रोत्साहन और सम्मान प्राप्त नहीं होता जिसकी वजह से वह परेशान रहती है परिवार और कार्य स्थल उनसे उम्मीदें रखता है पर उन्हें इंसान नहीं मशीन समझता है चाहे वह कितनी थकी हो, वह अपने परिवार को महसूस नहीं होने देती।

परिवार के सदस्यों को भी उन्हें समझने की जरूरत है खासकर पुरूषों को कार्यस्थल पर लैंगिक भेदभाव से रहित माहौल होना चाहिए, कार्य विभाजन काम के आंकलन परिणाम पर आधारित हो चाहिए। हमें सभी को अपनी सोच को बदलने की आवश्यकता है महिलाएँ किसी भी क्षेत्र में कार्य कर रही है उनके कार्य को कम आंकने की भावना बदलते हुए उनके साथ सहायता और मजबूती की भावना का भाव रखना चाहिए।

कई परिवार के पुरूष आज भी घर की जिम्मेदारी सिर्फ महिला को ही मानते है इस सोच को बदलने के लिए परिवार के बड़ों को साथ देते हुए ये सोच बदलनी होगी। फिर भी आज की महिलाएं अपनी दोहरी भूमिका निभाती चली जा रही हैं।

स्मार्ट सिटी

संगीता विज, सुपरवाइजर (डब्ल्यू.पी.)

जब भी हम एक स्मार्ट सिटी की बात करते है, तो हम एक पूरे ऐसे शहर की कल्पना कर रहे होते है जहाँ पर सभी प्रकार की बुनियादी जरूरतों के साथ अन्य सभी प्रकार की जरूरतें उपलब्ध कराई जाए। स्मार्ट सिटी अर्थात ऐसे आधुनिक शहर जहाँ रहने वाले लोगों की सभी प्रकार की जरूरतें स्मार्ट तरीके से पूरी की जा सके। इन स्मार्ट सिटी में लोगों के जीवन जीने पर ध्यान दिया जाता है। इसके साथ ही यहाँ पर लोगों को सभी प्रकार के जन सुविधाएँ कम सेवा मूल्य पर आसानी से प्राप्त हो सके। जहाँ पर पर्याप्त मात्रा में बिजली, पानी, भोजन, घर के साथ-साथ आधुनिक स्वास्थ्य, सुरक्षा, शिक्षा, आधुनिक यातायात आदि की सुविधा आसानी से प्राप्त हो सके।

हम सभी जानते है कि जल हमारे जीवन के लिए बहुत ही आवश्यक है। वैसे आप सभी को पता ही होगा पृथ्वी का 70% भाग पानी है लेकिन ये सारा पानी पीने योग्य नही है। यही कारण है कि बहुत से ऐसे शहर है जहाँ पानी की बहुत कमी है। लेकिन स्मार्ट सिटी में लोगों को पानी की समस्या नहीं होगी। क्योंकि लोगों को पर्याप्त मात्रा में नहाने, खाने, कपड़े धोने और साफ सफाई के लिए पानी दिया जायेगा । हम सभी चाहते है कि हमारे घरों में 24 घंटे बिजली आये, लेकिन केवल मुख्य शहरों में ही ऐसा हो पता है। लेकिन स्मार्ट सिटी में पूरे शहर में पूरे समय बिजली दी जाएगी। आप सभी ने शहरों में देखा होगा कि जगह जगह कूड़े कचरे पड़े रहते हैं और कोई भी साफ-सफाई करने वाला नहीं होता है। लेकिन स्मार्ट सिटी में शहरों की सफाई अच्छी तरीके से की जाती है ।

हर कोई चाहता है कि हमें अच्छी शिक्षा और स्वास्थ्य संबंधी सुविधाएँ प्राप्त हो, लेकिन शहरों में इसकी कमी को देखा जाता है और स्मार्ट सिटी में इन सब सुविधाओं पर ध्यान दिया जाता है। यहाँ पर लोगों के लिए यातायात प्रणाली पर भी ध्यान दिया जाता है जिसमें लोगों को ज्यादा ट्रैफिक का सामना न करना पड़े। स्मार्ट सिटी में लोगों की सुरक्षा के लिए जगह-जगह कैमरे लगाये जायेंगे और विशेष रूप से महिलाओं, बच्चों और बुजुर्गों की सुरक्षा के इंतज़ाम किये जायेंगे। इस स्मार्ट सिटी में ग़रीबों के आवास का इंतज़ाम भी किया जायेगा। पूरे शहर का डिजिटलीकरण किया जायेगा, जिससे पूरे शहर को नियंत्रित किया जा सके।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत ने हर क्षेत्र में उन्नति की है और हर स्तर पर सफलता प्राप्त की है। हमारा देश तेजी से विकसित देशों की श्रेणी में भी आता जा रहा है। चन्द विकसित देशों की तरह यहाँ भी ऐसे शहरों का होना आवश्यक हो जाता है, जहाँ रहने वाले तमाम लोगों की सभी जरूरतें स्मार्ट तरीके से पूर्ण की जा सके । जहाँ के लोगों के जीवनयापन के तौर-तरीके इतने सन्तुलित हो कि प्रदूषण की सम्भावना कम-से-कम बने, जहाँ घर बैठे-बैठे इंटरनेट के माध्यम से न केवल क्षणभर में सभी प्रशासनिक सूचनाएँ उपलब्ध हों और आरामदायक जीवन का संचालन सुचारु रूप से चलता रहता है।

हमारे प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी ने स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर लालकिले से अपने पहले भाषण में देश के 100 शहरों को स्मार्ट सिटी बनाने की घोषणा की थी और वर्ष 2014 के बजट में इसके लिए सात हजार करोड़ रुपये से अधिक राशि का प्रावधान भी किया है । प्रधानमन्त्री की इस परियोजना को देखते हुऐ केन्द्रीय शहरी विकास मन्त्रालय ने एक कॉन्सेप्ट नोट में इस परियोजना के लिए 40 लाख या इससे अधिक आबादी बाले 9 सैटेलाइट शहरों, 10 लाख से 40 लाख आबादी वाले 44 शहरों, 5 लाख से 10 लाख आबादी बाले 20 शहरों, सभी राज्यों व केन्द्र शासित प्रदेशों की राजधानियों के अन्तर्गत आने वाले 17 शहरों सहित पर्यटन व धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण 10 शहरों को चुने जाने की बात कही गई है।

प्रधानमन्त्री का विजन बड़े शहरों के नजदीक स्थित छोटे शहरों में आधुनिक सुविधाएँ स्थापित कर उन्हें स्मार्ट सिटीज के रूप में विकसित करने का है । दिल्ली, गुड़गाँव, फरीदाबाद, इलाहाबाद, कानपुर, लखनऊ वाराणसी, देहरादून, हरिद्वार, बोधगया, भोपाल, इन्दौर, कोच्चि, जयपुर व अजमेर को स्मार्ट सिटीज में परिवर्तित करने की योजना है । इस परियोजना में निवेश को लेकर कई देशों ने रुचि भी दिखाई है स्मार्ट सिटीज सामान्य शहरों से कई मायने में अलग है। सामान्य शहरों में रोजगार देने की क्षमता व निवेश के अवसर कम होते हैं, जबकि स्मार्ट सिटीज में कारोबार के बहुत से विकल्प मौजूद रहते है।

सामान्य शहरों में शिक्षा, स्वास्थ्य, मनोरंजन, सुरक्षा, यातायात आदि की सुविधाएँ कम रहती है, वहीं स्मार्ट सिटीज में वाई-फाई इण्टरनेट जैसी अत्याधुनिक तकनीक से लैस विश्वस्तरीय अस्पताल, स्कूल-कॉलेज, गैस पाइप लाइन, 24 घण्टे प्री-पेड बिजली-पानी की सुविधा सहित परिवहन, खेलकूद व

मनोरंजन की भी अति उत्तम व्यवस्था रहती है और पूरा क्षेत्र सीसीटीवी की निगरानी में रहता है ।

सामान्य शहरों के निवासी अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने के दौरान पर्यावरण प्रदूषण जैसे संकट पर ध्यान नहीं देते, तथा बिजली-पानी व अन्य संसाधनों के इस्तेमाल में अत्यधिक लापरवाही बरतते हैं जबकि स्मार्ट सिटीज के लोग सन्तुलित जीवन-शैली को अपनाते हुए पर्यावरण प्रदूषण जैसे संकट पर बहुत अधिक ध्यान देते है और बिजली-पानी की बर्बादी पर ध्यान देने के साथ-ही-साथ अन्य जगहों पर खर्च करने से पहले यह भी देखते हैं कि पहले से मौजूद चीजों का कैसे बेहतर इस्तेमाल किया जा सके ।

स्मार्ट सिटीज की यातायात सुविधा भी सामान्य शहरों से काफी सुविधाजनक होती है । सामान्य शहरों में अधिक आबादी और ट्रैफिक की बढ़ती संख्या के कारण वायु प्रदूषण जैसी समस्या के साथ-साथ ट्रैफिक जाम की समस्या भी तेजी से बढती जा रही है, जबकि स्मार्ट सिटीज में ऐसी समस्याएँ नहीं होती। सामान्य शहरों में जहाँ-तहाँ झुग्गी-झोपड़ियाँ देखी जा सकती हैं, वहीं स्मार्ट सिटीज में यह झुग्गी-झोपड़ियाँ नहीं दिखाई देती।

देश में बड़ी संख्या में स्मार्ट सिटीज स्थापित करने से भारत को विकसित देशों की ओर बढ़ने में मदद मिलेगी और देश में रोजगार के अवसर भी खुलेंगे, पर हमारे देश में इस परियोजना को साकार करने के लिए कई चुनौतियाँ भी हैं, जिनका सामना किए बिना सपनों के शहर बसाना आसान नहीं है निर्माण से जुड़े विशेषज्ञों का कहना है कि भारत जैसे देश में स्मार्ट सिटीज के निर्माण हेतु कानून में परिवर्तन के साथ-साथ तकनीक सम्बद्ध सभी क्षेत्रों में भी काफी परिवर्तन व सुधार लाने की आवश्यकता है । इतना ही नहीं ऊर्जा प्रबन्धन, कचरा प्रबन्धन जैसे विषयों पर भी गम्भीरतापूर्वक कार्य करना आवश्यक होगा। इण्टरनेट के माध्यम से की जाने वाली सूचनाओं के आदान-प्रदान का दुरुपयोग न हो ऐसी व्यवस्था अपनानी होगी। स्मार्ट सिटीज में रहने के लिए देशवासियों को भी हर स्तर पर खुद को स्मार्ट बनाना होगा।

इन सब चुनौतियों का सामना कर और सभी बाधाओं को दूर कर स्मार्ट सिटी परियोजना को पूर्ण करने में भारत पूर्णतः सक्षम है । यदि देश का प्रत्येक नागरिक, सरकार के इस ड्रीम प्रोजेक्ट में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग दे, तो निश्चय ही अगले दो दशकों में देश में 100 से अधिक स्मार्ट सिटीज होगी और भारत विकसित राष्ट्र की श्रेणी में आ जाएगा । दिल्ली को स्मार्ट सिटी बनाने के लिए सौ अरब रुपये निवेश करने की योजना बनाई है । इस परियोजना में भारत को सिंगापुर का सहयोग भी मिल रहा । स्मार्ट सिटीज पर होने वाले खर्च हेतु पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप (पीपीपी) मॉडल को प्राथमिकता दी जा रही है । भौतिक बुनियादी ढाँचे, सामाजिक सेवाएँ और प्रशासन, ये स्मार्ट सिटी के तीन आधारभूत स्तम्भ माने जाते हैं । स्मार्ट सिटी वासियों की छोटी-बड़ी सभी आवश्यकताओं को समुचित रूप से पूर्ण करने के लिए जन-केन्द्रित इन तीनों स्तम्भों का सुदृढ़ होना आवश्यक है । हमारे देश की बढती हुई जनसंख्या को देखते हुए सरकार ने नागरिकों के उच्च जीवनशैली के लिए ही स्मार्ट सिटी मिशन की शुरुआत की है। इस मिशन से हमारे देश का आर्थिक विकास तो होगा ही उसके साथ-साथ हम भी विकसित देशों की ओर धीरे-धीरे कदम बढ़ाएंगे। भारत की गिनती भी उन सभी हाईटेक देशों से की जाएगी। स्मार्ट सिटी मिशन से भारतीयों के जीवन में हमें एक बड़ा बदलाव देखने को मिलेगा। इसलिए स्मार्ट सिटी मिशन को पूरा करने में हमें सरकार को सहयोग देना होगा।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

नवीन कुमार, फैलोस (राजभाषा)

योग की उत्पत्ति प्राचीन समय में योगियों द्वारा भारत में की गई थी। यह शरीर के तीन मुख्य तत्वों शरीर, मस्तिष्क और आत्मा के बीच संपर्क को नियमित करता है। शरीर में रक्त प्रवाह बढ़ाने का योग से अच्छा कोई और तरीका नहीं हो सकता है। योग के सभी आसनों से लाभ प्राप्त करने के लिए सुरक्षित और नियमित अभ्यास की आवश्यकता है। रोज प्रातः उठकर योगाभ्यास करने से कई तरह की बीमारियों से बचा जा सकता है। यह शरीर के प्रतिरोधी प्रणाली को मजबूती प्रदान करने में मदद करता है। यह प्रतिदिन खाई जाने वाली भारी दवाइयों के दुष्प्रभावों को भी कम करता है। अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस की घोषणा 21 जून को भारत की पहल और सुझाव के बाद की गयी थी।

साल 2014 में संयुक्त राष्ट्र महासभा में अपने भाषण के दौरान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने वहाँ बैठे हर देश के प्रतिनिधि को योग का महत्व बताया और 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाने का प्रस्ताव रखा। उनके इस प्रस्ताव पर अमेरिका, कनाडा, चीन सहित लगभग 193 देशों के सदस्यों ने सकारात्मक मोहर लगा दी। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के लिए 21 जून को ही पसंद किया गया। क्योंकि यह दिन साल का सबसे लम्बा दिन है और ज्योतिष विज्ञान के अनुसार आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त करने का यह उचित समय है। पहला अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस राजपथ दिल्ली में श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में विश्व की कई मशहूर हस्तियों और 35,985 लोगों के साथ मनाया गया। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस भारत सहित पूरे विश्व में हर साल एक नए थीम पर बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। विभिन्न जगहों पर योग शिविर, सेमिनार और योग प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं। लोगों को जीवन में योग का महत्व समझाया जाता है। योग शरीर और मन को स्वस्थ रखता है। शरीर में आत्मविश्वास और सकारात्मक ऊर्जा का संचार कर देता है। योग के कारण रोग शरीर में प्रवेश नहीं कर सकते। हमें योग के महत्व को समझते हुए हमारे जीवन में हर

source: pixabay.com

दिन योग दिन बनाना चाहिए। इस वर्ष के योग दिवस की थीम 'मानवता के लिये योग' है। पूरे देश में बड़ी संख्या में आम जन और विभिन्न संस्थानों ने योग कार्यक्रमों में भाग लेकर योग दिवस को बड़े उत्साह के साथ मनाया।

योग के महत्व-

शरीर, मन और आत्मा को नियंत्रित करने में योग मदद करता है। शरीर और मन को शांत करने के लिए यह शारीरिक और मानसिक अनुशासन का एक संतुलन बनाता है। यह तनाव और चिंता का प्रबंधन करने में भी सहायता करता है। योग आसन शक्ति, शरीर में लचीलेपन और आत्मविश्वास विकसित करने के लिए जाना जाता है। योग सत्र में मुख्य रूप से व्यायाम, ध्यान और योग आसन शामिल होते हैं। योग आपके हृदय को स्वस्थ बनाने में मदद करता है। यह आपके शरीर और नसों में रक्त के प्रवाह को बढ़ाकर अधिक कुशलता से काम करता है। योग अस्तित्व में सबसे पारंपरिक शारीरिक विषयों में से एक है। योग व्यक्ति को अनुशासित करता है। योग सभी के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण लाता है। योग हमारे शरीर को स्वस्थ रखता है। "प्राणायाम" एक साँस लेने का व्यायाम है जो योग के अभ्यास के अंतर्गत आता है। योग हमें अपने शरीर को प्रकृति से जोड़ने और इसके एक हिस्से की तरह महसूस करने में मदद करता है। योग भारत की एक प्राचीन संस्कृति है। दुनिया को हमारी प्राचीन कला और उनके फायदों के बारे में अवगत करवाने के लिए भारत के नेतृत्व में पूरे विश्व में 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाता है।

योग का महत्व कोरोना संक्रमण के दौर में बढ़ा

योग के नियमित अभ्यास से शरीर स्वस्थ रहने के साथ ही रोग प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ती है। योग से निरोग होना छोटी बात है। फेफड़े को मजबूत करने के लिए प्राणायाम के अंतर्गत भ्रस्तिका करना और इसके बाद कपालभाति और बाह्य प्राणायाम में अग्निसार प्रभावी है। कोरोना संक्रमण से बचने के लिए विशेष रूप से उज्जाई प्राणायाम लाभकारी है। जो लोग संक्रमित होकर डिप्रेशन का शिकार हो गए हैं, उनके लिए भ्रामरी प्राणायाम भी उपयोगी है। कपालभाति व अनुलोम विलोम करने से दिमाग को मजबूती मिलेगी। रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए ब्रह्मबेला में गुनगुना पानी एक से आधा लीटर सिप कर पिएँ। विशेषज्ञों का कहना है सुबह में फ्रेश होने के बाद 20 मिनट तक तेज व्यायाम करना अच्छा रहता है। इसमें जागिंग, यदि शरीर में ऊर्जा हो तो 12 दंड व आठ बैठक, सूर्य नमस्कार का 12 पोज के अलावा 12 आसनों में शामिल मंडूक आसन जो शुगर स्तर कम करता है, साथ ही गोमुखासन, अर्थ मत्येंद्र आसन, मकर आसन भुजंगासन, नौकासन, पादवृत्त आसन, पवन मुक्त आसन के अलावा सबसे प्रमुख शीर्षासन भी कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि शीर्षासन 40 वर्ष से अधिक के व्यक्ति को या किसी बीमारी से ग्रसित साधक को नहीं करना चाहिए। साथ ही गिलोय का काढ़ा, तुलसी, चिरैता भी लाभकारी है।

राष्ट्रीय नगर कार्य संस्थान द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन-

श्री हितेश वैद्य, निदेशक, राष्ट्रीय नगर कार्य संस्थान नई दिल्ली ने 21 जून, 2022 दिन मंगलवार को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर सिल्वर ओक लॉन, भारतीय पर्यावास केंद्र में एक योगाभ्यास का आयोजन किया। इस अवसर पर संस्थान के कर्मचारियों को योग का प्रशिक्षण देने के लिए निदेशक महोदय द्वारा कुशल प्रशिक्षकों ईशा फाउंडेशन को आमंत्रित किया गया था। आयोजन में संस्थान के सभी कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और योग का अभ्यास किया। योग का शुभारंभ ओम शब्द के उच्चारण से हुआ और प्राणायाम इत्यादि कराया गया। योग के समापन के बाद आयोजन स्थल पर निदेशक महोदय द्वारा संस्थान के सभी कर्मचारियों के लिए जलपान की व्यवस्था की गयी थी।

आयोजन के समापन के बाद श्री हितेश वैद्य निदेशक रा.न.का. सं. ने आयोजन में आये सभी कार्मिकों को संबोधित करते हुए कार्मिकों से कहा कि योग को अपनी दिनचर्या में शामिल करें और निरोग रहें।

उज्जैन नगरी की यात्रा

अभिषेक शुक्ला, डाटा एंट्री ऑपरेटर

उज्जैन अपने मंदिरो के लिए सुप्रसिद्ध है। यह शहर मध्य प्रदेश राज्य में स्थित है। उज्जैन को उज्जैनी, अवन्ति, अवंतिका तथा अवंतिकापुरी भी कहा जाता है।

हमने भी शिप्रा नदी के किनारे बसी उज्जैनी नगरी की यात्रा की जिसको महाकाल की धरती भी कहा जाता है। हमारी यात्रा शुरू हुई उज्जैन जंक्शन के रेलवे स्टेशन से महाकाल के दर्शनों के लिए। हम दिल्ली से रेल द्वारा उज्जैन पहुँचे। जैसे ही यात्री रेल गाडी से उतरे सबने महाकाल का जयकारा लगाया और चारों ओर महाकाल की जय जयकार सुनाई देने लगी। उज्जैन रेलवे स्टेशन से हम अपने होटल की तरफ गए जो की महाकालेश्वर मंदिर से बहुत निकट स्थित था। स्नान और हल्का जल पान करके हम महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग के दर्शन के लिए महाकाल मंदिर की तरफ बढ़े। मंदिर के बाहार दर्शन के लिए बहुत लम्बी कतारे लगी हुई थी और उन कतारों में हर हर महादेव जय महाकाल के जयकारे गूँज रहे थे। कतार में महाकाल के जयकारे लागते हुए हम भी धीरे धीरे आगे बढ़ने लगे। मंदिर के सुन्दर नजारों और दीवारों पर बनी चित्रकलाओं को देखकर मन मंत्रमुग्ध होने लगा और बस ऐसा लग रहा था की हम जल्दी जल्दी महाकाल बाबा के दर्शन के लिए उनके पास पहुँच जाये। काफी देर तक कतार में प्रतीक्षा करने के बाद वह पल आ ही गया जब हम महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग के समक्ष खड़े थे। महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग के दर्शन करके हमारी तो सारी थकान ही दूर हो गयी थी। मन कर रहा था कि ज्योतिर्लिंग को देखते ही रहे। गर्भ गृह के सामने भगवान के प्रिय भक्त नंदी जी की प्रतिमा बहुत ही सुन्दर लग रही थी।

गढ़काली का मंदिर

हर सिद्धि माता मंदिर मुख द्वार

कालभैरव

मंगलनाथ मंदिर

हर सिद्धि माता मंदिर

काल भैरव मूर्ती

हर सिद्धि माता मंदिर दिया स्तंभ

दर्शन के बाद हमने प्रसाद ग्रहण किया और मंदिर के प्रांगण में बने और छोटे छोटे मंदिरो के दर्शन करने लगे जो की बहुत मनमोहक थे।

मनमोहक चित्रकला, महाकाल मंदिर

गढ़काली माता मंदिर मूर्ति

महकलेश्वर ज्योतिर्लिंग के बारे में कहा जाता है कि यह ज्योतिर्लिंग, 12 ज्योतिर्लिंगों में से इकलौता ऐसा ज्योतिर्लिंग है जो दक्षिण मुखी है। इसी कारण तांत्रिक विधाओं में इसका विशेष महत्व है। यह एक स्वयंभू शिवलिंग है अर्थात यह स्वयं इस स्थान पर प्रगट हुआ था। मंदिर के पास रूद्र सागर नामक झील है जिसमे स्नान करने का बहुत महत्व बताया जाता है। महाकाल की भस्म आरती देखने के लिए हम रात को ही आरती की कतार में लग गए और सुबह चार बजे हमे भस्म आरती देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यहाँ सुबह की भस्म आरती, भगवान शिव शंकर को उठाने की ऐसी आरती है जिसमे भगवान का श्रृंगार भस्म से किया जाता है। भस्म आरती में हिस्सा लेने के लिए पुरुषो कों धोती तथा महिलाओं को साड़ी पहनना अनिवार्ये होता है। भस्म आरती का दृश्य बहुत ही मनोरम होता है। महाकालेश्वर के मंदिर की तीसरी मंजिल पर नागचंद्रेश्वर का मंदिर है जो साल में केवल एक बार नाग पंचमी के दिन खुलता है।

मंदिर प्रांगण में थोड़ा वक्त बिताने के बाद हम माता हरसिद्धि देवी के मंदिर में दर्शन करने गए। इस मंदिर के बारे मान्यता है कि भगवान शंकर ने देवी चंडी को हरसिद्धि का नाम दिया था। ऐसा माना जाता है की दक्ष प्रजापति के यज्ञ कुण्ड से जब भगवान शिव माता सती को ले जा रहे थे तब उज्जैन में स्थित माता हरसिद्धि मंदिर के इसी पावन स्थान पर सती देवी की कोहनी गिरी थी इसलिए इस मंदिर को 51 शक्ति पीठों में गिना जाता है। यह मंदिर अत्यंत जागृत माना जाता है। इस मंदिर में श्री यन्त्र स्थापित है जिस से तांत्रिक परम्परा में इस मंदिर का बहुत महत्व है। माता हरसिद्धि राजा विक्रमादित्य की कुल देवी थी। ऐसा माना जाता है की यहाँ से पहले माता समुद्र के बीच एक टापू पर सुशोभित थी। राजा विक्रमादित्य माता हरसिद्धि को अपने साथ उज्जैन लाना चाहते थे इसलिए उन्होनें भेंट स्वरुप अपना सिर माता को चढ़ा दिया था तथा माता की कृपा से उनका सिर वापिस आ जाता। विक्रमादित्य ने 11 बार अपना सिर माता के चरणों में भेंट किया। माता उनकी भक्ति से प्रसन्न हुई तथा राजा के साथ उज्जैन जाना स्वीकार किया। देवी हरसिद्धि के मंदिर में स्थित प्रतिमा अत्यंत मनमोहक तथा प्रसन्न मुद्रा में है। देवी मां के इस मंदिर में 51 फीट ऊंचे स्तंभ पर दीप जलाने का बहुत महत्त्व है। मान्यता है कि यहाँ के खंभे पर दीपक लगाने से हर मनोकामना पूरी होती है। इस मंदिर में राजा विक्रमादित्य द्वारा दीपक स्तंभ स्थापित किए गए थे।

माता हरसिद्धि के दर्शन करने के बाद हम मंगलनाथ मंदिर पहुँचे। कहते है कि भगवान शंकर के अंश से मंगल गृह का जन्म इसी स्थान पर हुआ था। कर्क रेखा इसी मंदिर से हो कर जाती है। मंगल गृह का मनुष्य जीवन पर बहुत असर होता

है। मंगल गृह की शांति के लिए यहाँ विशेष पूजा होती है। यहाँ चावल से मंगल गृह के पिंड का विशेष अभिषेक व पूजन किया जाता है। यह मंदिर अति प्राचीन है। ऐसा कहा जाता है कि यहाँ दर्शन कर श्रद्धालु अपने कष्टों से मुक्ति पाते है तथा मंगलमय भविष्य की कामना करते है। मंदिर की सुंदरता बहुत ही भव्य लगती है।

मंगलनाथ देव के दर्शन करने के बाद हम काल भैरव मंदिर पहुंचे। आठ भैरवो में से एक काल भैरव के रूप में शिव इस प्राचीन मंदिर में शोभायमान है। कहते है कि काल भैरव भगवन शिव का क्रोधित स्वरुप है जो सभी तरह के पापों को नष्ट करने वाला तथा अनिष्ट कारक भयों से अपने भक्त की रक्षा करने वाला है। उज्जैन के भैरव गढ़ नामक क्षेत्र में बना भगवान काल भैरव का ये मंदिर अत्यंत आश्चर्यचकित करने वाला है। इस मंदिर में स्थापित काल भैरव की प्रतिमा को मदिरा का प्रसाद चढ़ाया जाता है और जैसे ही मदिरा का भरा प्याला भगवान काल भैरव के होंठों से लगाया जाता है, देखते ही देखते वह प्याला खाली हो जाता है। यह मंदिर अत्यंत जागृत है। यहाँ श्रद्धालु दूर-दूर से भगवान के दर्शनों के लिए आते है। ऐसा मन जाता है की यहाँ सच्चे दिल से मांगी हुई मन्नत अवश्य पूरी होती है। अनेक राजाओं महाराजाओं ने यहाँ विजयश्री का आशीर्वाद माँगा और भगवान काल भैरव ने उन्हें विजयी होने आशीर्वाद दिया।

ऐसा कहा जाता है की महाकाल के दर्शन कर के यदि कोई काल भैरव के दर्शन न करे तो उसकी उज्जैन की यात्रा अधूरी रह जाती है। काल भैरव के इस मंदिर के स्थापना की कहानी बड़ी दिलचस्प है। एक बार जब ब्रह्मा जी चार पुराणों की रचना के बाद पांचवे पुराण की रचना करने लगे तो भगवान शिव ने उन्हें रोकने का प्रयास किया क्योंकि पांचवे पुराण की रचना उपयुक्त नहीं थी। परन्तु ब्रह्मा जी ने भगवान शिव की बात नहीं मानी जिस से क्रोधित हो कर उनके तीसरे नेत्र से काल भैरव प्रकट हुए और ब्रह्मा जी का पांचवा सिर काट दिया जिस से उन्हें ब्रह्म हत्या का पाप लग गया। भगवान शिव की आराधना करने पर भगवान ने काल भैरव से कहा की ब्रह्म हत्या के पाप से मुक्त होने के लिए उन्हें शिप्रा नदी में स्नान करने को कहा। काल भैरव शिप्रा नदी में स्नान कर के सदा सदा के लिए उज्जैन में बस गए।

काल भैरव मंदिर के बाद हम गड कलिका मंदिर पहुंचे। उज्जैन में हरसिद्धि के बाद दूसरा शक्तिपीठ गढ़कालिका मंदिर को माना गया है। पुराणों में उल्लेख मिलता है कि उज्जैन में शिप्रा

रामघाट शिपरा नदी

नदी के तट के पास स्थित भैरव पर्वत पर सती के होंठ गिरे थे, इसलिए इस जगह को भी शक्तिपीठ के समकक्ष ही माना जाता है। इस देवी मंदिर का पुराणों में भी वर्णन मिलता है। मंदिर के प्रवेश द्वार पर मां के वाहन सिंह की प्रतिमा बनी हुई है। कहा जाता है कि महाकवि कालिदास गढ़ कालिका देवी के उपासक थे। एक बार कालिदास पेड़ की जिस डाल पर बैठे थे उसी को काट रहे थे। इस घटना पर उनकी पत्नी विद्योत्तमा ने उन्हें फटकार लगाई, जिसके बाद कालिदास ने मां गढ़कालिका की उपासना की। वे इतना ज्ञानी हो गए कि उन्होंने कई महाकाव्यों की रचना कर दी और उन्हें महाकवि का दर्जा मिल गया। कालिदास के संबंध में मान्यता है कि जब से वे इस मंदिर में पूजा-अर्चना करने लगे तभी से उनके प्रतिभाशाली व्यक्तित्व का निर्माण होने लगा। उज्जैन में प्रत्येक वर्ष होने वाले कालिदास समारोह के आयोजन के पूर्व मां कालिका की आराधना की जाती है। यह मंदिर सिद्धपीठ है यहां तांत्रिक क्रिया का अपना महत्व है। गढ़कालिका को तंत्र की देवी माना जाता है। कहते है की नवरात्रि पर्व समाप्त होने के बाद दशहरे के दिन मंदिर से प्रसाद के रूप नींबू बाटे जाते हैं। मान्यता है कि घर में ये नींबू रखने से सुख शांति बनी रहती है।

मंगलनाथ मंदिर शिवलिंग

काल भैरव मंदिर के बाद हम शिप्रा नदी के तट पर पहुंचे। भारत एक ऐसा देश है जहाँ नदियों को माँ का दर्जा दिया गया है। शिप्रा नदी भी उन्हीं पवित्र नदियों में से एक है जिसका जल अमृत के सामान माना जाता है। ऐसा कहा जाता है की शिप्रा नदी भगवान विष्णु के शरीर से निकली है तथा इसमें स्नान करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है। कहते है कि शिप्रा नदी में भगवान श्री राम ने अपने पिता माहराज दशरथ का पिंड दान किया था। शिप्रा नदी में सायं की आरती का दृश्य अत्यंत शांति प्रदान करने वाला होता है। हमे भी शिप्रा माँ की आरती के दर्शन करने का अवसर प्राप्त हुआ और यह मन को शांति देने वाला था। पुराणों में शिप्रा नदी का महत्व बताया गया है। राम घाट यहाँ का एक प्रसिद्ध घाट है। जनम-जनम के पापों से मुक्त होने की लालसा मन में लिए श्रद्धालु इस घाट पर स्नान करते है तथा अपने श्रद्धा सुमन यही अर्पण करते है। हमने भी अपने श्रद्धा सुमन यहाँ अर्पण किये और शिप्रा माँ को नमन किया।

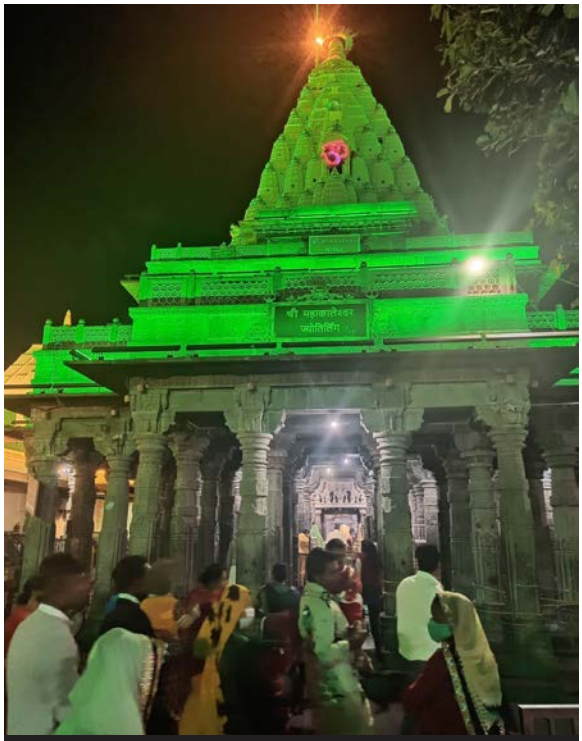

महाकाल मंदिर

उज्जैन नगरी के प्रमुख स्थलों के दर्शन करने के बाद हम ने उज्जैन के बाजारों का दौरा किया जो कि रात में विद्युत बल्बों सजे हुए बहुत ही सुन्दर लग रहे थे। बाजार घूमने के बाद हमने मंदिर के पास ही एक रेस्टोरेंट में रात का भोजन किया और फिर हम अपने होटल की तरफ रवाना हो गए। अगले दिन हम सुबह जल्दी उठ गए क्योंकि उस दिन की हमारी दिल्ली के लिए वापसी की ट्रेन थी। हमने सोचा कि जाने से पहले एक बार फिर से हम महाकाल मंदिर में दर्शन कर आते हैं और हम मंदिर के लिए रवाना हो गए। सुबह के वक्त मंदिर में ज्यादा भीड़ नहीं थी और हमे बहुत ही सुन्दर दर्शन हुए। हम महाकाल बाबा से ये कामना कि जल्द हमें फिर से अपने दर्शनों के लिए उज्जैन नगरी बुलाये। फिर हमने बाहर आकर मंदिर की प्रशाद की दुकान से लड्डू का प्रशाद लिया जो कि शुद्ध देसी घी से बना हुआ था और खाने में बहुत ही स्वादिष्ठ था। महाकालेश्वर मंदिर को प्रणाम करके और जाने की आज्ञा लेके हमने उज्जैन रेलवे स्टेशन के लिए प्रस्थान किया और वहाँ के दृश्यों को अपनी आँखों में संजोये और यादो को अपने साथ लेकर अपने घर के लिए रवाना हो गए। हमारी उज्जैन नगरी की यात्रा बहुत ही यादगार और सुखद रही।

हर हर महादेव।

कश्मीर घाटी की सैर

मनोज कुमार शुक्ला, लेखाकार

हमारा देश भारत एक विशाल भू-भाग का देश हैं। यहाँ की प्रशासनिक व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए इसे 28 राज्य एवं 8 केंद्र शासित प्रदेशों में बाँटा गया है। उनमें कश्मीर भी एक ऐसा राज्य हैं। यह राज्य अपनी प्राकृतिक सुन्दरता के कारण हमेशा से देश-विदेशियों के आकर्षण का केंद्र रहा है। सभी इसकी खूबसूरती को निहारने के लिए लालियत रहते हैं। सभी चाहते है कि अपने जीवनकाल में सौन्दर्यमयी शस्य-श्यामला धरती की सैर की जाए, क्योंकि यह धरा पृथ्वी का स्वर्ग हैं। इसे भारत का स्विटज़रलैड भी कहते हैं।

कल्हण की राजतरंगिणी पुस्तक तथा नीलम पुराण की कथा के अनुसार कशमीर की घाटी कभी बहुत बड़ी झील हुआ करती थी। ऋषि कश्यप ने यहाँ से पानी को निकाला और इसे धरा के मनोरम प्राकृतिक स्थल में बदल दिया । इस तरह कश्मीर की घाटी अपने अस्तित्व में आई। कश्यप ऋषि के नाम पर ही इस धरती का नाम कश्मीर पड़ा।

इस वर्ष मुझे प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण सुंदर बर्फीली वादियों, देवदार तथा चीड़ की वृक्षों से सुसज्जित कश्मीर घाटी को घूमने का सुअवसर प्राप्त हआ। हमने वायुयान द्वारा आने-जाने का कार्यक्रम रखा। मैं दिल्ली से श्रीनगर वायुयान द्वारा पहुँचा। मैं जैसे ही हवाई अड्डे से बाहर आया वैसे ही मीठे-मीठे ठंडी हवा के झोकों ने मेरा मन प्रफुल्लित कर दिया। ऐसा लग रहा था जैसे शीत ऋतु आ गई हो। चारों तरफ ऊँचे-ऊँचे पहाड़, सुन्दर-सुन्दर फूलों से लदे वृक्ष शीतल मंद पवन अपनी अपुपम छटा बिखेर रहे थे। यहाँ हमने गाड़ी किराये पर लेकर कश्मीर के पर्यटन स्थल देखने का कार्यक्रम बनाया।

कश्मीर के पर्यटन स्थलः-

सोनमर्ग- हम सबसे पहले कश्मीर के खूबसूरत स्थल सोनमर्ग की ओर रवाना हो गये। रास्ते में सुन्दर-सुन्दर वादियों, हरे भरे वृक्षो, फूलो से लदी लताओं, स्वच्छ शीतल पवन का आनन्द लेते हुए शाम को सोनमर्ग पहुँचे। पहाड़ों में यह पता नहीं होता कि कब वर्षा हो जाये। जैसे ही हम वहाँ पहुँचे वर्षा होने लगी और सर्द हवाएँ चलने लगी। सोनमर्ग बहुत ही खूबसूरत है, चारों ओर बर्फ से ढके ऊँचे-ऊँचे शिखर ऐसा लग रहा था मानों आकाश को नाप रहे हो। रात्रि में वहीं पर विश्राम कर अगले दिन हम ग्लेशियर देखने घोड़ों पर सवार होकर निकले क्योंकि वहाँ गाड़ी नहीं जा सकती थी। ग्लेशियर तक पहुँचने का रास्ता बहुत ही पत्थरीला था। चारों तरफ जंगल, कहीं-कहीं पानी के स्त्रोत वह रहे थे। घोड़ों पर बैठे हुए डर भी बहुत लग रहा था कि कहीं गिर पड़े तो हडिड्यों का तो चूर्ण बन जायेगा। परन्तु घोड़े बड़े सजे हुए थे। वे हमें ग्लेशियर तक ले गये। वहाँ का दृश्य अप्रतिम था। चारों ओर बड़े-बड़े ग्लेशियर अपना हुस्न बिखेर रहे थे। लोग बर्फ से खेल रहे थे। कुछ लोग बर्फ पर चल रहे थे, कुछ स्लेज गाड़ी पर बैठ आनन्द ले रहे थे। हमने भी स्लेज गाड़ी पर बैठने का आनन्द लिया। वहाँ कँपकवाने वाली सर्दी थी। वहीं हमने गर्म-गर्म चाय का लुत्फ उठा कर वापसी की ।

गुलमर्ग- सोनमर्ग के बाद हम कश्मीर के दूसरे खूबसूरत पर्यटन स्थल गुलमर्ग देखने गये। गुलमर्ग पीर पंजाल रेज में बसा दुनिया के खूबसूरत हिल स्टेशनों में से एक है। इसका मूल नाम गौरीमर्ग था, जिसे 16वीं शताब्दी में युसुफ शाह चक ने बदलकर गुलमर्ग दिया । इसकी सुन्दरता लाजवाब थी। बहुत ही घुमावदार रास्ते, ऊँची-ऊँची पहाड़ियाँ, देवादार और चीड़ के वृक्षों से सजी वादियाँ सुन्दर घास के मैदान, मध्य भारा से निकलती नदियाँ इसकी खूबसूरती से आकर्षित होकर हमारी बालीबुड की बहुत सी फिल्में यहाँ फिल्माई गई है। यहाँ की सुन्दरता को देख लगता है। कि प्रकृति ने इस धरा को फुर्सत में सजाया हो। यहाँ हमने राजा हरिसिंह का महल

शिकारा से डल झील की सैर, श्रीनगर

मंगलेश्वर महादेव मंदिर, पहलगाम

सोनमर्ग में ग्लेशियर

बोटेनिकल गार्डन

ट्यूलिप गार्डन, श्रीनगर

राज हरिसिंह का शस्त्रघार, गुलमर्ग

देखा जहाँ हमने पुराने समय के शस्त्रागार और उस समय के वस्त्रों का अवलोकन किया। यहाँ गन्डोला की व्यवस्था थी जिसके द्वारा ऊपर से गुलमर्ग देखा जा सकता है। रास्ते में आने वाले सभी छोटी बड़ी चीजों को देखते हुए हमने अपना रूख पहलगाम की ओर किया।

पहलगाम- सुंदर सुंदर सेबों के बाग, अखरोट नाशपाती के वृक्षों, लताओं, केसर की क्यारियों से सजे रास्तों से गुजरते हुए हमने पहलगाम में प्रवेश किया। पहलगाम में हम सबसे पहले चन्दनवाड़ी गये। क्या अद्भुत दृश्य था। ऊँचे-ऊँचे ग्लेश्यिर अपनी प्राकृतिक सुन्दरता बिखेर रहे थे। कहीं-कहीं पानी के झरने अपनी कलकल की ध्वनि करते हुए बह रहे थे तो कहीं पहाड़ों से गिरते हुए पानी के झरने जमें हुए थे। यहाँ लोग बर्फ का बहुत आनन्द ले रह थे हमने भी यहाँ फोटोग्राफी कर प्रकृति की सुन्दरता को कैमरे में कैद किया। वास्तव मे पहाड़ों की सुन्दरता देखने लायक थी। अमरनाथ यात्रा का प्रथम पड़ाव स्थल भी यहीं है।

ममलेश्वर महादेव- इसके बाद हम ममलेश्वर महादेव के दर्शन हेतु गये यह भगवान शिव का सदियों पुराना मंदिर है यह मंदिर लकड़ी पर की गई नक्काशी और गेहूँ के एक प्राचीन दाने के लिए प्रसिद्ध है। इसके बाद हम बेताब वैली, अरू वैली की सुन्दरता को निहारते हुए अपना रूख श्रीनगर की ओर किया।

श्रीनगर

- **ट्यूलिप गार्डन -** श्रीनगर पहुँचकर हमने सबसे पहले ट्यूलिप गार्डन देखने का प्रोग्राम बनाया। यह गार्डन श्रीनगर की प्रसिद्ध डल झील के किनारे जबरवन पहाड़ियों के दामन में स्थित है। इस गार्डन में 15 लाख से भी ज्यादा ट्यूलिप है इस गार्डन की खूबसूरती के क्या कहने जहाँ दृष्टि जाती थी वहाँ अलग-अलग क्यारियों में अलग रंगों के ट्यूपलिप के फूल अपनी सुन्दर छटा बिखेर रहे थे। मध्य भाग में लगे फव्वारे और उनके आसपास सुन्दर-सुन्दर फूलों से सजे गमले सभी का मन आकर्षित कर रहे थे।

- जवाहर लाल नेहरू मैमोरियल बोटैनिकल पार्क- सुन्दर-सुन्दर वृक्षों फूलों, छोटी सी झील से सुसज्जित, सुन्दर फाऊण्टेन से सजा यह गार्डन बहुत ही खुबसूरत है। यहाँ इतने सुन्दर वृक्ष थे जो सबका मनमोह रहे थे यहाँ हमने सुन्दर-सुन्दर फूलों के वृक्षों को अपने कैमरे में कैद करते हुए आगे बढ़ चले।

- **निशातबाग-शालीमार बाग :-** सुन्दरता में यह बाग भी किसी से कम नहीं थे। मुगल बादशाह जहाँगीर ने डल झील के किनारे इनका निर्माण करवाया था। इस बाग को बेहद सुन्दर बनाने वाले सुन्दर झरनों से युक्त यह बाग कश्मीर की सुन्दरता को और भी अधिक बढ़ाता है।

- **शंकराचार्य मंदिर -** यह मंदिर गोपाद्री पर्वत पर स्थित शिव का प्राचीन मंदिर है। इसे ज्येएवेश्वर से बना है मंदिर में विशालकाय शिवलिंग है। इस मंदिर की पहाड़ी से हम सम्पूर्ण श्री नगर का अवलोकन कर सकते है। ऊपर से कश्मीर घाटी बहुत सुन्दर दिखती है।

- **डल झील -** डल झील श्री कश्मीर की एक प्रसिद्ध झील है जो काफी बड़ी है। इस झील के तीनों ओर पहाड़ियाँ हैं। इस झील में कश्मीर की अनेकों झीलें मिलती हैं। इस झील का नाम भारत की सबसे सुन्दर झीलों में आता है। यहाँ आकर कोई डल झील देखने ना जाए ऐसा हो ही नहीं सकता। यह झील यहाँ का सबसे आकर्षक स्थल है। उससे बड़ा आकर्षक इस पर बने हाउसबोट है। जिस पर यात्रा किए बिना कश्मीर की यात्रा संपूर्ण नहीं मानी जाती।

- **हाउसबोट-** यह एक तरह का झील पर बने लकड़ी के घर है जिसमें सभी सुविधाएं उपलब्ध है। पर्यटक हाउसबोट में रहकर झील का आनन्द उठाते है। हमने भी एक रात्रि इसी बोट पर गुजारी। यहाँ से डल झील बहुत ही सुन्दर लगती है। रात्रि मे जब चारों ओर लाइटें जलती है तब तो इसका आकर्षण ओर अधिक बढ़ जाता है ऐसा लगता है धरती पर जनन्त उतर आई हो।

- **शिकारा-** हमने शिकारा में बैठ सम्पूर्ण डल झील घूमने का आनन्द लिया शिकारा पर बैठ हमें ऐसा अनुभव हो रहा था जैसे राजघराने से हो। डलझील में पानी में ही खाने-पीने की सभी सुविधाएँ उपलब्ध थी चाहे आप कुल्फी खाओं अथवा मोमोज, ऐसा लग रहा था मानों चलता फिरता बाजार हो। हमने बहुत मस्ती की। अन्त में प्रकृति के सुन्दर दृश्यों को हृदयग्राही करते हुए हम अपने घर की ओर बढ़ चले। यदि मुझे मौका मिला तो एक दोबारा धरती के स्वर्ग को देखने अवश्य जाऊँगा।

स्त्री का विश्वास

प्रविन ग्रोवर, सहायक लेखाकार

एक नगर में ब्राह्मण एवं उसकी पत्नी बहुत ही प्रेम के साथ रहते थे। ब्राह्मण की पत्नी का स्वभाव ब्राह्मण के परिवार वालों से अच्छा नहीं था। परिवार में प्रतिदिन झगड़ा होता रहता था। झगड़ा से परेशान होकर ब्राह्मण ने अपनी पत्नी के साथ कहीं दूर जाकर रहने का निश्चय किया। अपने परिवार को छोड़कर पत्नी के साथ यात्रा पर निकल गया।

यात्रा बहुत लंबी थी। बीच रास्ते में ब्राह्मणी को प्यास लगी है, ब्राह्मण जल लेने गया जलाशय दूर होने के कारण उसे वापस आने में देर लग गई। जब ब्राह्मण उसी स्थान पर पहुंचा तो अपनी पत्नी को मरा हुआ पाया। उसके पास बैठकर विलाप करने लगा, तभी आकाशवाणी हुई "यदि तुम अपने जीवन की आधी प्राण अपनी पत्नी को दे दे तो वह जीवित हो सकती हैं।"

ब्राह्मण को यह स्वीकार था और उसकी पत्नी जीवित हो गई। दोनों ने पुनः यात्रा शुरू कर दी।यात्रा करते हुए वे दोनों एक नगर के द्वार पर पहुंचे। ब्राह्मण ने ब्राह्मणी से कहा "तुम यहां ठहरो मैं भोजन सामग्री लेकर आता हूं।"

यह कहते हुए ब्राह्मण वहां से चला गया। कुछ समय पश्चात उसी स्थान पर एक लंगड़ा व्यक्ति आया। वह व्यक्ति शरीर से हष्ट पुष्ट और दिखने में अत्यधिक सुंदर था। लंगड़ा ब्राह्मणी से हंसकर बोला और ब्राह्मणी भी हंसकर बोली। दोनों में काफी बातचीत हुई एवं दोनों एक दूसरे से प्रेम करने लगे। दोनों ने आगे का जीवन एक साथ व्यतीत करने का निश्चय किया।

कुछ समय पश्चात ब्राह्मण भोजन लेकर वहां पहुंचा तो ब्राह्मणी ने कहा "यह लंगड़ा भी भूखा है, अपने हिस्से में से कुछ भाग इसे भी भोजन का दे दो। ब्राह्मण ने ब्राह्मणी की बात मानकर लंगड़े को भोजन दे दिया। भोजन के पश्चात जब पुन: यात्रा प्रारंभ करने लगे तो ब्राह्मणी ने ब्राह्मण से अनुरोध किया "इस लंगड़े को भी अपने साथ ले लेते हैं। तुम जब भी कहीं चले जाते हो तो मैं अकेली रह जाती हूं। ये साथ रहेगा तो मेरा अकेलापन भी दूर हो जाएगा और रास्ता भी आसानी से कट जाएगा।

ब्राह्मण ने कहा "हमें अपना सामान उठाने में परेशानी हो रही है तो इस लंगड़े का भार कैसे वहन करेंगे।"

ब्राह्मणी – हम इसे अपनी पिटारी में रख लेंगे।ब्राह्मण को ब्राह्मणी की बात माननी पड़ी। ब्राह्मणी और लंगड़े को मौका मिलते ही ब्राह्मण को एक कुएं में धकेल दिया। उन दोनों ने समझा कि ब्राह्मण मर गया है। वे दोनों आगे नगर की ओर चल दिए।

घर के बाहर द्वार पर कर वसूलने के लिए एक चौकी बनी हुई थी। जब कर वसूल करने वालों ने ब्राह्मणी की पिटारी को खोल कर देखा तो उसमें से एक लंगड़ा निकला। यह बात राज दरबार में पहुंच गई। राजा के पूछने पर ब्राह्मणी ने बताया "यह लंगड़ा मेरा पति है। हम अपने परिवार के झगड़ों से परेशान होकर यहां रहने आए हैं।" राजा ने उन दोनों को अपने राज्य में रहने की आज्ञा दे दी।

कुछ दिन बाद एक साधु द्वारा उस ब्राह्मण को कुए से निकाल लिया गया। ब्राह्मण कुए से निकलने के बाद उसी राज्य में गया, जहां ब्राह्मणी और लंगड़ा रहता था। जब ब्राह्मणी ने ब्राह्मण को देखा तो राजा से बोली "यह मेरे पति का पुराना वेरी है। इसका वध करवा दीजिए। राजा ने ब्राह्मण की हत्या करने का आदेश दे दिया।

ब्राह्मण राजा की आज्ञा सुनकर बोला – "राजन! इस औरत ने मेरा कुछ लिया हुआ है। वह मुझे पुनः दिला दीजिए। "राजा ने ब्राह्मणी से पूछा "देवी! तूने जो भी इससे लिया है इसे पुनः दे दे।"

ब्राह्मणी – "महाराज, यह झूठ बोल रहा है। मैंने इसका कुछ नहीं लिया है।"

ब्राह्मण ने याद दिलाया कि "तूमने मेरे प्राणों का आधा हिस्सा लिया हुआ है। सभी देवता इस बात के साक्षी हैं।" ब्राह्मणी देवताओं के डर से प्राणों का वह भाग पुनः देने का वचन दिया। किंतु वचन देने के साथ ही उसकी मृत्यु हो गई।w

खजाने की खोज

केदार सिंह, डाटा एंट्री ऑपरेटर

एक गांव में एक रामलाल नाम का एक किसान अपनी पत्नी और चार लड़को के साथ रहता था। रामलाल खेतों में मेहनत करके अपने परिवार का पेट पालता था। लेकिन उसके चारो लड़के आलसी थे। और वह पूरे-पूरे दिन अपने आवारा दोस्तों के साथ घूमने में मगन रहते थे और जो उनके में आता वह मौज मस्ती के साथ अपने समय को बर्बाद करते रहते थे। उन चारों के बारे में गांव वाले भी बहुत बुरा भला कहते थे। परन्तु रामलाल के चारों बेटों के सर पर जू तक न चलती थी। इसी सब फालतू के कामों और आवारापन की वजह से उनकी गांव को कोई इज्जत भी नहीं करता था। इस बात को लेकर रामलाल अपने बेटों से बहुत दुखी रहता था।

एक दिन रामलाल ने अपनी पत्नी से कहा की अभी तो मै खेतों में काम कर रहा हूँ। लेकिन मेरे बाद इन लड़को का क्या होगा। इन्होने तो कभी मेहनत भी नहीं करी। ये तो कभी खेत में भी नहीं गए।

रामलाल की पत्नी ने कहा की धीरे धीरे ये भी काम करने लगेंगे। समय बीतता गया और रामलाल के लड़के कोई काम नहीं करते थे। एक बार रामलाल बहुत बीमार पड़ गया। वह काफी दिनों तक बीमार ही रहा।

उसने अपनी पत्नी को कहा की वह चारों लड़को को बुला कर लाये। उसकी पत्नी चारों लड़को को बुलाकर लायी। रामलाल ने कहा लगता है की अब मै ज्यादा दिनों तक जिन्दा नहीं रहूँगा। रामलाल को चिंता थी की उसके जाने के बाद उसके बेटों का क्या होगा।

इसलिए उसने कहा बेटों मैने अपने जीवन में जो भी कुछ कमाया है वह खजाना अपने खेतों के निचे दबा रखा है। मेरे बाद तुम उसमे से खजाना निकालकर आपस में बाँट लेना। यह बात सुनकर चारों लड़के खुश हो गए।

कुछ समय बाद रामलाल की मृत्यु हो गयी। रामलाल की मृत्यु के कुछ दिनों बाद उसके लड़के खेत में दबा खजाना निकालने गए। उन्होंने सुबह से लेकर शाम तक सारा खेत खोद दिया। लेकिन उनको कोई भी खजाना नज़र नहीं आया।

लड़के घर आकर अपनी माँ से बोले माँ पिताजी ने हमसे झूठ बोला था। उस खेत में हमें कोई खजाना नहीं मिला। उसकी माँ ने बताया की तुम्हारे पिताजी ने जीवन में यही घर और खेत ही कमाया है। लेकिन अब तुमने खेत खोद ही दिया है तो उसमे बीज बो दो।

इसके बाद लड़को ने बीज बोये और माँ के कहेनुसार उसमे पानी देते गए। कुछ समय बाद फसल पक कर तैयार हो गयी। जिसको बेचकर लड़कों को अच्छा मुनाफा हुआ। जिसे लेकर वह अपनी माँ के पास पहुंचे। माँ ने कहा की तुम्हारी मेहनत ही असली खजाना है यही तुम्हारे पिताजी तुमको समझाना चाहते थे।

सीख: इस कहानी से हमें ये सीख मिलती है। कि आलस्य को त्यागकर मेहनत करना चाहिए। मेहनत ही इंसान की असली दौलत है। जीवन में जितने भी सफल व्यक्ति है उनकी सफलता के पीछे का राज सिर्फ और सिर्फ कड़ी मेहनत ही है। अगर इंसान अपने जीवन में मेहनत करके जीवन की सभी दौलते अपनी मुठ्ठी में कर सकता है।

रिश्तों का घर और हथौड़ी

मौं. शाकिब, हिंदी टंकक

एक छोटे शहर में कमल नाम का एक व्यक्ति रहता था। उसके पास अपना घर नहीं था और वह किराये के मकान में रहता था। कमल अपना नया घर बनाने के लिए बहुत मेहनत करके पैसे जमा कर रहा था।

आखिर उसकी मेहनत रंग लायी ओर 15 साल में कठिन परिश्रम के बाद जो पैसे जमा हुए थे उससे कमल ने एक सुन्दर और नया घर खरीद लिया। अब वह और उसका परिवार अपने नए घर में बहुत खुश थे।

उसके नए घर के आसपास जो पड़ोसी रहते थे, वह काफी अमीर थे। उसके पड़ोसी बहुत महँगे कपड़े पहनते थे, कई नौकर उनके यहाँ 24 घंटे नौकरी करते थे, विलासिता और शौक की हर चीज उनके पास थी।

अपने पड़ोसियों की बेहतरीन जिंदगी देखकर कमल भी अब सोचने लगा था कि उसके पास में कोई भी शौक की चीज नहीं है शौक की चीजों का खरीदकर अपने घर लाने की उसकी बहुत इच्छा होने लगी लेकिन अधिक पैसा न होने के कारण वह कुछ नहीं कर पा रहा था।

एक दिन उसके दरवाजे पर एक साधु आया जो भिक्षा मांग रहा था। उस समय कमल घर पर ही था। उसने साधु को कुछ वस्तुएँ दान में दी तो साधु प्रसन्न होकर बोला "मैं तेरे दान से खुश हूँ। तेरी कोई समस्या हो तो बता।

तभी कमल ने अपनी सभी इच्छाओं को साधु को बता दिया।

विलासिता और शौक की चीजों की इच्छा के बारे में जानकार साधु बोला, "इसके लिए तो तू अपनी मेहनत को और बढ़ा

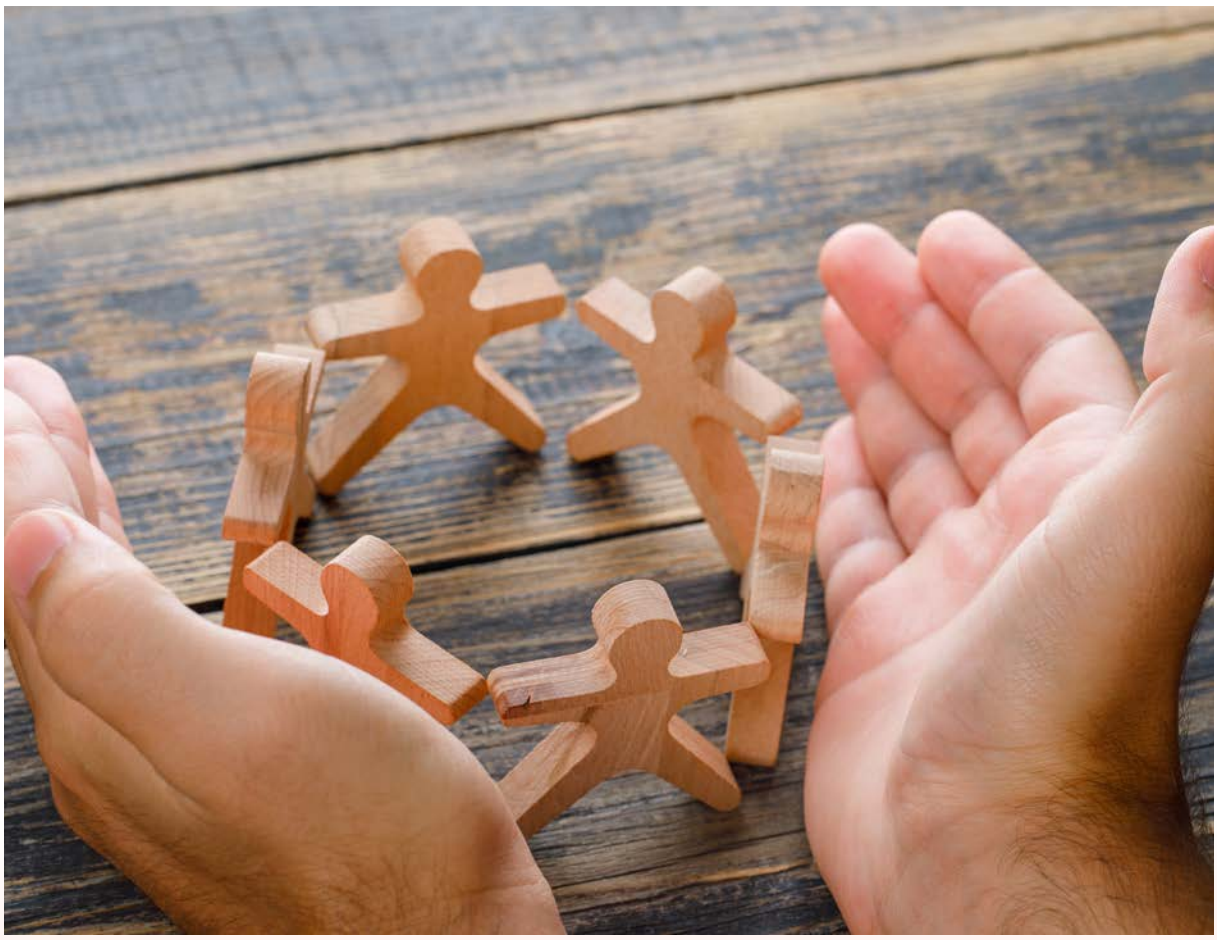

दे तथा अधिक से अधिक पैसों की बचत कर, और उससे जो चाहें खरीद ले।"

लेकिन कमल को तो यही धुन लगी थी कि उसे अपने पड़ोसियों से ज्यादा चीजें बहुत जल्दी चाहिए। वह साधु से जिद करके कोई चमत्कार करने को कहने लगा।

कुछ देर सोचकर एक हथौड़ी देते हुए साधु बोला, "अगर तू यही चाहता है तो यह हथौड़ी ले। साथ ही मैं तुझे एक मंत्र बता रहा हूँ। जब भी तुझे किसी शौक की चीज की जरूरत हो तो अपने घर की किसी भी दीवार पर तेज़ी से एक हथौड़ी मारना और फिर इस मंत्र को बोल देना। तभी हथौड़ी मारने वाली जगह से उस शौक की चीज को खरीदने लायक पैसे निकल आएंगे। लेकिन ध्यान रखना कि इससे तू केवल अपने शौक की चीजों को प्राप्त कर सकता है, अपनी जरूरत की चीजों को नहीं।"

इतना कहकर साधु चला गया। कमल उस हथौड़ी और मंत्र को पाकर बहुत खुश था।

वह तुरंत घर के अंदर गया और अपने मन महँगे कपड़ों के बारे में सोचकर एक दीवार पर बहुत तेज़ी से हथौड़ी मारी और मंत्र पढ़ दिया। तुरंत उस दीवार में से पैसे निकल आये। कमल बहुत खुश हुआ और तुरंत बाजार जाकर महँगे कपड़े खरीद लाया।

अब तो वह हर रोज ऐसा करने लगा। अब वह रोज अपने शौक की किसी चीज के बारे में सोचता और दीवार में हथौड़ी मारकर मंत्र पढ़ देता, तभी तुंरत पैसे निकल आते।

कुछ ही महिनों में कमल के घर अपने पड़ोसियों के जैसी महँगी और शौक की बहुत सी चीजें हो गयीं। अनेकों नौकर उसके यहाँ अब दिन रात काम करते थे तथा उसकी और उसके परिवार की सेवा करते थे। अगल कुछ महीनों में ही कमल अपने पड़ोसियों से शौक की चीजों को खरीदने के मामले में बहुत आगे निकल गया।

हथोड़ी को प्राप्त किये हुए एक साल हो चुका था। एक दिन जब कमल अपने परिवार के साथ अपने घर में बैठा हुआ था और अपनी सभी शौक की वस्तुओं को देख रहा था तभी उसकी नजर अपने घर पर गयी और वह चौंक गया और बोला, "अरे यह क्या हो गया मेरे घर को! सभी तरफ हर दीवार में केवल छेद ही छेद नजर आ रहे हैं। यह इतना बदसूरत कैसे हो गया?"

तभी पास खड़ी उसकी पत्नी बोली, "आप ही तो पिछले एक साल से इन दीवारों में हथौड़ी मारकर छेद कर रहे हो। मैंने आपको बहुत बार मना भी किया था लेकिन आप माने ही नहीं, अब इस घर में हर जगह छेद है।"

लेकिन कमल तो अपने सपनों की दुनियां में खोया हुआ था। वह बोला, "कोई बात नहीं! मैं एक और हथौड़ी मारूँगा और एक नए घर के लायक पैसे निकल आएंगे।"

इतना कहकर कमल पूरे घर में ऐसी जगह की खोजने लगा जहाँ कोई भी छेद न हुआ हो। काफी देर के बाद उसे एक दीवार पर सबसे नीचे केवल एक जगह ऐसी मिली जहाँ कोई छेद न था। कमल ने बिना कुछ ध्यान दिए केवल एक सुंदर घर के बारे में सोचा और तेजी से हथौड़ी मार दी।

लेकिन यह क्या! एक भी पैसा नहीं निकला बल्कि परा घर भरभरा कर नीचे गिर गया और सभी विलासिता की वस्तुएं, उसके नौकर और पूरा परिवार मलबे के नीचे दब गए। लेकिन कमल बच गया क्योंकि उसने मकान को गिरते देख खुद को लोहे की मेज के नीचे छिपा लिया था।

सब कुछ खत्म हो चुका था। कमल चीख चीख कर रो रहा था और उस साधु को बार-बार धोखेबाज कह रहा था क्योकि अबकी बार हथौड़ी मारने पर एक भी पैसा नहीं निकला था।

तभी साधु की कही गई बात एक बार फिर उसके कानों में गूंज गई जो हथोड़ी देते समय कही गयी थी – "ध्यान रखना की इससे तू केवल अपने शौक की चीजों को प्राप्त कर सकता है, अपनी जरूरत की चीजों को नहीं।"

और सच है कि घर उसका शौक नहीं बल्कि जरुरत था जिसको बनाने के लिए उसके 15 सालों तक बहुत मेहनत की थी।

शिक्षा

यदि हम कमल के घर को, अपने द्वारा बहुत मेहनत से बनाये गए घर को प्यारे रिश्तों जैसा माने तो आज की दुनिया में बहुत से लोग अपने इन खुशहाल रिश्तों को जिनमें सच्ची खुशियां छिपी होती हैं, कुछ महँगी और शौक की चोजों को एकत्रित करने के चक्कर में, अपने प्यार और समय की गरमाहट नहीं दे पाते और लगातार उन सुन्दर रिश्तों पर समय नहीं है नाम की हथौड़ी से बार-बार और लगातार प्रहार करते रहते हैं।

और एक दिन ऐसा आता है जब समय न देने की वजह से सभी प्यारे रिश्ते, यहाँ तक कि मजबूत पारिवारिक रिश्ते भी भरभरा कर टूट जाते हैं ओर बचता है तो केवल आपके शौक की चीजों का मलबा जो आपके ही क्या किसी के भी काम का नहीं होता।

रानी लक्ष्मी बाई

योगेश भट्ट, लेखाकार

झांसी की रानी ने अपने जीवन में तमाम संघर्ष के बाद इतिहास के पन्नों में अपना नाम सम्मिलित किया है और उन्होंने अपने राज्य की स्वतंत्रता की लड़ाई में खुद लड़ी और वीरगति को प्राप्त किया । दुनिया के सामने एक अपनी अलग पहचान बनाई। उनके साहस पराक्रम और देशभक्ति को देख कर आज भी नारी शक्ति का हौसला बढ़ जाता हैं।

रानी लक्ष्मी बाई का जन्म 19 नवंबर साल 1828 को उत्तर प्रदेश के वाराणसी के भदैनी नगर में हुआ था। इनका बचपन का नाम मणिकर्णिका तांबे था। जिनके नाम पर एक फिल्म भी रिलीज हुई थी, हालांकि मणिकार्णिका को मनु बाई के नाम से पुकारा जाता था। इनके पिता एक महाराष्ट्र के ब्राह्मण थे, परंतु माता भागीरथी बाई संस्कारी और धर्म में विश्वास रखने वाली एक घरेलू महिला थी।

इसके साथ ही उन्हें तरह-तरह की निशानेबाजी, घेराबंदी, युद्ध की शिक्षा, घुड़सवारी, तीरंदाजी, आत्मरक्षा और अस्त्र शास्त्र की भी शिक्षा प्राप्त थी।

रानी लक्ष्मीबाई का विवाह गंगाधर राव से हुआ था। इसी के साथ विवाह के पश्चात कुछ समय बाद उनके एक पुत्र का जन्म हुआ, लेकिन दुर्भाग्यवश गंगाधर राव को विकराल बीमारी हो गई थी और 21 नवंबर साल 1853 में वह दुनिया छोड़कर चले गए थे। इसीलिए झांसी की रानी को अपना राज्य बचाने के लिए ब्रिटिश शासन से युद्ध करना पड़ा और काफी संघर्ष करने पड़े थे।

इसके अलावा 10 मई 1857 को अंग्रेजो के खिलाफ पूरे देश में एक साथ मिलकर विद्रोह शुरू किया। जब ब्रिटिश सरकार ने रानी लक्ष्मीबाई का आक्रोश और एकता देखी तब उन्होंने महारानी लक्ष्मीबाई को झांसी सौंप दिया था।

झाँसी 1857 के संग्राम का एक प्रमुख केन्द्र बन गया जहाँ हिंसा भड़क उठी। रानी लक्ष्मीबाई ने झाँसी की सुरक्षा को सुदृढ़ करना शुरू कर दिया और एक स्वयंसेवक सेना का गठन प्रारम्भ किया। इस सेना में महिलाओं की भर्ती की गयी और उन्हें युद्ध का प्रशिक्षण दिया गया। साधारण जनता ने भी इस संग्राम में सहयोग दिया। झलकारी बाई जो लक्ष्मीबाई की हमशक्ल थी को उसने अपनी सेना में प्रमुख स्थान दिया।

1857 के सितम्बर तथा अक्टूबर के महीनों में पड़ोसी राज्य ओरछा तथा दतिया के राजाओं ने झाँसी पर आक्रमण कर दिया। रानी ने सफलतापूर्वक इसे विफल कर दिया। 1858 के जनवरी माह में ब्रितानी सेना ने झाँसी की ओर बढ़ना शुरू कर दिया और मार्च के महीने में शहर को घेर लिया। दो हफ़्तों की लड़ाई के बाद ब्रितानी सेना ने शहर पर क़ब्ज़ा कर लिया। परन्तु रानी दामोदर राव के साथ अंग्रेज़ों से बच कर भाग निकलने में सफल हो गयी। रानी झाँसी से भाग कर कालपी पहुँची और तात्या टोपे से मिली।

तात्या टोपे और रानी की संयुक्त सेनाओं ने ग्वालियर के विद्रोही सैनिकों की मदद से ग्वालियर के एक क़िले पर क़ब्ज़ा कर लिया। बाजीराव प्रथम के वंशज अली बहादुर द्वितीय ने भी रानी लक्ष्मीबाई का साथ दिया और रानी लक्ष्मीबाई ने उन्हें राखी भेजी थी इसलिए वह भी इस युद्ध में उनके साथ शामिल हुए। 18 जून 1858 को ग्वालियर के पास कोटा की सराय में ब्रितानी सेना से लड़ते-लड़ते रानी लक्ष्मीबाई की मृत्यु हो गई। लड़ाई की रिपोर्ट में ब्रितानी जनरल ह्यूरोज़ ने टिप्पणी की कि रानी लक्ष्मीबाई अपनी सुन्दरता, चालाकी और दृढ़ता के लिये उल्लेखनीय तो थी ही, विद्रोही नेताओं में सबसे अधिक ख़तरनाक भी थी

17 जून 1858 में रानी लक्ष्मीबाई ने अपने जीवन की अंतिम लड़ाई किंग्स रॉयल आयरिश के खिलाफ लड़ी। इसके पश्चात वह बुरी तरह से घायल हो गई और कोटा के सराय के पास वीरगति को प्राप्त हो गई।

मंदिर का पुजारी

अभिषेक शुक्ला, डाटा एंट्री ऑपरेटर

एक बार की बात है कि एक समृद्ध व्यापारी जो सदैव अपने गुरू से परामर्श करके कुछ न कुछ सुकर्म किया करता था गुरू से बोला- गुरूदेव, धनोपार्जन हेतु मैं अपना गाँव पीछे छोड़ आया हूँ, पर हर समय मुझे लगता रहता है कि वहाँ पर एक ऐसा देवालय बनाया जाये जिसमें देवपूजन के साथ भोजन की भी व्यवस्था हो, अच्छे संस्कारों से लोगों को सुसंस्कृत किया जाये, अशरण को शरण मिले, वस्त्रहीन को वस्त्र, बच्चे अपने धर्म के वास्तविक स्वरूप से अवगत हो सके, रोगियों को दवा और चिकित्सा मिले। सुनते ही गुरू प्रसन्नता से बोले- केवल गाँव में ही क्यों, तुम एक ऐसा मंदिर अपने इस नगर में भी बनवाओ। व्यापारी को सुझाव पसन्द आया और उसने दो मंदिर, एक अपने गाँव में दूसरा अपने नगर में, जहाँ वह अपने परिवार के साथ रहता था, बनवा दिए। दोनों देवालय शीघ्र ही लोगों की श्रद्धा के केंद्र बन गये। लेकिन कुछ ही दिन बीते थे कि व्यापारी ने देखा नगर के लोग गाँव के मंदिर में आने लगे हैं, जबकि वहाँ पहुँचने का रास्ता काफी कठिन है। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि ऐसा क्यों हो रहा है?

कुछ भारी मन से वह गुरू जी के पास गया और सारा वृतांत कह सुनाया। गुरू जी ने कुछ विचार किया और फिर उसे परामर्श दिया कि वह गाँव के मंदिर के पुजारी को नगर के मंदिर में सेवा के लिए बुला ले। उसने ऐसा ही किया नगर के पुजारी को गाँव के मंदिर में और गाँव के पुजारी को नगर में सेवा पर नियुक्त किया। कुछ दिन ही बीते वह यह देख स्तब्ध रह गया कि अब गाँव के लोग नगर के मंदिर में आने लगे हैं। अब तो उसे बड़ी हैरानी होने लगी। बिना एक क्षण की देरी किए वह गुरूजी के पास जाकर हाथ जोड़ कर कहने लगा – आपकी आज्ञानुसार मैंने दोनों पुजारियों का स्थानान्तरण किया लेकिन समस्या तो पहले से भी गम्भीर हो चली है कि अब तो मेरे गाँव के परिचित और परिजन कष्ट सहकर और किराया-भाड़ा खर्च करके नगर के देवालय, में आने लगे हैं मुझसे यह नहीं देखा जाता।

व्यापारी की बात सुनते ही गुरू जी सारी बात समझ गये और बोले- हैरानी और परेशानी छोड़ो। दरअसल जो गाँव वाले पुजारी है, उनका स्वभाव ही है जो लोग उसी देवालय में आना चाहते हैं जहाँ वे होते हैं। उनका लोगों से निःस्वार्थ प्रेम, उनके दुःख से दुखी होना, उनके सुख में प्रसन्न होना उनसे मित्रता का व्यवहार करना ही लोगों को उनकी ओर खिंचे चले आते हैं। अब सारी बात व्यापारी के समझ में आ चुकी थी।

शिक्षा- मित्रों हमें भी यह बात अच्छी से समझनी चाहिए कि हमारा व्यक्तित्व हमारे बाहरी रंगरूप से नहीं हमारे व्यवहार से निर्धारित होता है। हम चाहे जिस भी कार्यक्षेत्र से जुड़े हों, हमारी सफलता में हमारे व्यवहार का बहुत बड़ा योगदान होता है। हमें यह बोध होना चाहिए कि हम इस धरती पर अपने लिए ही नहीं आए हैं, हमें अपने सुख-दुःख को जरूर बाँटना चाहिए, उनसे मित्रतापूर्ण व्यवहार करना चाहिए ताकि हम जहाँ उपस्थित हो वहाँ पर स्वतः ही एक अच्छा वातावरण बना रहे और सकारात्मकता की तरंगों से हमारा जीवन सागर लहराता रहे।

जीवन के संघर्ष

आरती पठानिया, लेखाकार

एक बार की बात है। एक छोटा सा परिवार था। वह परिवार बहुत ही दयनीय स्थिति से गुजर रहा था। परिवार हर समय संघर्ष कर रहा था। एक समस्या के हल होने पर दूसरी समस्या पीछे पड़ जाती थी। इन संघर्षों से थककर परिवार के एक छोटे बच्चे ने अपने पिता से शिकायत की, अब मैं जिंदगी के इन थपेड़ों से थक चुका हूं। हर रोज के संघर्ष से तंग आ चुका हूं। मुझे अपना भविष्य अंधकार में दिखाई दे रहा है।

उसका पिता एक पेशेवर रसोइया था। वो लड़के को रसोई घर में ले आया। उसने पानी से तीन घड़े भरे और तीनो को चूल्हे पर रख दिया। जब तीनो बर्तन में पानी उबलने लगा, तो उसने एक बर्तन में आलू रखे, दूसरे बर्तन में अंडे और तीसरे बर्तन में कॉफी बीन्स। तीनो बर्तन को उबालने दिया। बेटा बेसब्री से इंतजार कर रहा था, सोच रहा था कि उसके पापा क्या कर रहे है। 20 मिनट के बाद वह बर्नर बंद कर दिया। उसने आलू को बर्तन से बाहर निकाला और एक कटोरे में रखा। उसने अंडों को बाहर निकाला और उन्हें एक कटोरे में रखा। फिर उसने कॉफी को बाहर निकाला और एक कप में रखा।

लड़के की ओर मुड़कर उसने पूछा, बेटा, तुम क्या देख रहे हो? आलू, अंडे और कॉफी, उसने झट से जवाब दिया। करीब से देखो और आलू को छुओ। लड़के ने छुआ और कहा कि आलू नरम हो गए हैं। फिर उसने लड़के को एक अंडा लेने और उसे तोड़ने के लिए कहा। खोल को तोड़ने के बाद, उसने कठोर उबले हुए अंडे को देखा। अंत में, उसने लड़के को कॉफ़ी पीने के लिए कहा। इसकी मस्त सुगंध उसके चेहरे पर मुस्कान ले आई।

पिताजी, इसका क्या मतलब है? लड़के ने पूछा। फिर पिता ने समझाया कि आलू, अंडे और कॉफी बीन्स इन तीनों को एक ही प्रतिकूलता यानी उबलते पानी का सामना करना पड़ा। और हर एक ने अलग तरह से प्रतिक्रिया दी। आलू मजबूत, कठोर था, लेकिन उबलते पानी में, यह नरम और कमजोर हो गया। अंडा नाजुक था, जिसके अंदरूनी भाग की रक्षा एक पतला बाहरी आवरण कर रहा था। उस उबले पानी में अंडे के अंदर का हिस्सा सख्त हो गया। इसी प्रकार, कॉफी बीन्स भी अलग थे। उबलते पानी के संपर्क में आने के बाद, इन्होंने पानी को बदल दिया और जबरदस्त कॉफी बनायी।

उसने अपने बेटे से पूछा, तुम किस तरह के हो। जब प्रतिकूलता तुम्हारे दरवाजे पर दस्तक देती है, तो तुम कैसे प्रतिक्रिया देते हो? क्या तुम एक आलू हो या एक अंडा या फिर कॉफी बीन्स हो? जीवन में अलग अलग तरह के सघंर्ष आते है उन सबको किस तरह से अपने जीवन में लेना है ये आपको सोचना है जीवन एक संघर्ष है।

जीवन में हर रोज नई नई चीजें हमारे आस-पास होती हैं, लेकिन केवल एक चीज जो वास्तव में मायने रखती है, वह यह है कि आप इस पर प्रतिक्रिया कैसे करते हैं और इनसे क्या फायदा उठाते हैं। जीवन के सभी बदलाव को अपनाये और आने वाले उन सभी संघर्षों का सकारात्मकता के साथ सामना करे।

आगे बढ़ने से ही रास्ता मिलता है

नवीन कुमार, फैलोस (राजभाषा)

एक स्कूल में उन्नति नाम की एक लड़की थी। पढ़ाई में होशियार थी और दिमाग इतनी तेज था कि हर सवाल का तुरंत जवाब देती थी। लेकिन उसके घर की हालत उतनी ठीक नहीं थी। उसके माता-पिता मजदूरी करते थे। उन्नति के माता-पिता उसे प्यार से लाडो कहते थे। उन्नति अपने घर की हालत और अपने माता-पिता के संघर्षों को अच्छे से महसूस करती थी। छोटी लड़की और उसके बड़े-बड़े सपने थे। उन्नति बड़ी होकर कलेक्टर बनना चाहती थी ताकि वो अपने माता-पिता, स्कूल और गाँव का नाम ऊँचा कर सके। उन्नति का स्कूल दसवीं तक ही था। ग्यारहवीं और बारहवीं की पढ़ाई के लिए 10 किलोमीटर दूर जाना पड़ता था। कई माँ-बाप तो आगे की पढ़ाई के लिए दूर होने के कारण भेजते भी नहीं थे और कई लोग तो अपनी बेटियों की शादी करा देते थे। उन्नति जब दसवीं में थी तब उसके मन में भी डर सताने लगा कि क्या आगे की पढ़ाई के लिए उसके माता-पिता उसे घर से दूर भेजेंगे या फिर शादी करा देंगे। वो इस बारे में किसी से कुछ नहीं कहती परंतु एक डर उसके अंदर बना हुआ था। उन्नति के स्कूल में एक टीचर थे जिनका नाम था नीतेश कुमार। उन्हें मालूम था कि गरीबी क्या होती है। वो अपने स्कूल के बच्चों का हमेशा हौसला बढ़ाते थे और बच्चे उनकी हर बात मानते थे। उन्नति के मन का डर दिन व दिन बढ़ता ही जा रहा था। माता-पिता, घर की हालत देखकर वो और भी डर जाती है। कहते है भगवान किसी न किसी रूप में धरती पर आते हैं और इस बार उन्होंने उन्नति के डर को दूर करने के लिए स्कूल टीचर के रूप में नीतेश कुमार को भेज दिया। उन्नति दसवीं में अपने स्कूल एवं जिले में प्रथम स्थान प्राप्त करती है परंतु वो खुश नहीं होती क्योंकि उसके अंदर का डर उसे रोकता है। क्या होगा आगे की पढ़ाई कर पायेगी या नहीं, अपने इस डर और आँखों में आँसू को लेकर अपने माता-पिता से पूछती है, "क्या मैं आगे की पढ़ाई के लिए दूर जा सकती हूँ।" उन्नति के पिता कहते हैं, "देख लाडो जब तक स्कूल गाँव में था तब तक ठीक था लेकिन अब इतनी दूर नहीं भेज सकते। अब तुम बड़ी हो गई हो। कहीं कोई ऊँच-नींच हो गयी तो तेरे साथ शादी कौन करेगा और हम इस गाँव में किसी को मुँह नहीं दिखा पाएँगे। आगे की पढ़ाई का खर्च भी शायद नहीं उठा पाएँगे। हमारे हालात से तुम भलीभांति परिचित हो।" तभी स्कूल टीचर नीतेश कुमार वहाँ आते हैं और उन्नति के माता-पिता से कहते हैं, "आपकी बेटी पढ़ाई में बहुत होशियार है और उसने दसवीं में अपने जिले में प्रथम स्थान पाया है। आप लोगों को उसे प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि वो बारहवीं में पूरे प्रदेश में प्रथम आये।" उन्नति के पिता बोले, "लेकिन हम इसकी पढ़ाई का खर्च नहीं उठा सकते क्योंकि हम गरीब हैं।" नीतेश कुमार बोले, "मुझे पूर्ण विश्वास है वो ऐसा कर सकती है। आगे की पढ़ाई की चिंता आप मत कीजिये उसकी पढ़ाई का खर्च मैं उठाऊँगा क्योंकि मेरा इस दुनिया में कोई नहीं है और मैं गरीबी, लाचारी, कठिनाईयों से अच्छी तरह परिचित हूँ। मैं इन सभी को महत्व नहीं देता क्योंकि जो इंसान इन चीजों के बारे में ही सोचता रहता है वो जिंदगी भर फकीर ही रहता है। इन चीजों का मेरे जीवन में कोई स्थान नहीं है। मुझे इतना पता है "कर्म करो" बाकी भगवान के ऊपर छोड़ दो।" टीचर की बात सुनकर उन्नति के अंदर का डर चला जाता है और आँखों में खुशी के आँसू उमड़ पड़ते हैं। उसके माता-पिता भी बहुत भावुक हो जाते हैं और उनके आगे हाथ जोड़कर अपनी सोच पर माफी माँगते हैं और कहते हैं, "हम दोनों और ज्यादा मेहनत करेंगे जिससे हम अपनी लाडो को आगे की पढ़ाई करा सकें। आपसे जरूरत होगी तो आपको याद भी करेंगे।" उन्नति ने बारहवीं की पढ़ाई शुरू कर दी। देखते ही देखते उन्नति बारहवीं में पूरे प्रदेश में प्रथम स्थान प्राप्त करती है। राज्य की सरकार उसके आगे की पढ़ाई का खर्च उठाने की घोषणा करती है। अब उन्नति पीछे मुड़कर नहीं देखती और बहुत मेहनत करती जाती है। कुछ सालों बाद उन्नति कलेक्टर बन जाती है। इन्हीं सालों में उसके टीचर का कहीं ट्रांसफर हो जाता है, अब वह उसके गाँव में नहीं पढ़ाते। लेकिन टीचर की सीख को वो हमेशा याद करती रहती है और सोचती है कि आज जो कुछ भी बनी है उन्हीं की प्रेरणा के कारण बनी है। यदि वो उस दिन उसके माता-पिता को नहीं समझाते तो आज वो इस मुकाम पर नहीं पहुँच पाती। उन्नति अपने टीचर को हमेशा याद करती रहती है और सोचती है कि वो उसे किसी दिन मिल जायें। एक दिन जब वह दौरे पर निकलती है। वह एक गाँव में जाती है और वहाँ स्कूल देखकर उसके सामने रूक जाती है। तभी अचानक उसके कानों में बरसों पुरानी आवाज सुनाई देती है। बच्चों का हौसला बढ़ाने वाली बातें ऐसी बातें जो किसी को भी प्रेरित कर दें। वो धीमे-धीमे अंदर जाती है और अचानक चौंक जाती है। उसके मुँह से निकलता है, "अरे सससस सर..... आप।" वहाँ अपने टीचर को देखकर ऐसे खुश होती है जैसे मानो उसने समुद्र में मोती ढूँढ लिया हो। अब वो बूढ़े हो चुके होते हैं, पहचान पाना मुश्किल था। उन्होंने उन्नति को नहीं पहचाना लेकिन उन्नति पहचान लेती है और उनके पास जाकर उनके चरण छूकर आशीर्वाद लेती है। उनसे कहती है, "कहाँ-कहाँ नहीं ढूँढा सर आपको मुझे मालूम था आप किसी न किसी स्कूल में मुझे जरूर मिलेंगे, मेरे जैसे और बच्चों का

सही मार्गदर्शन देते हुए।" यह कहती हुई वह दुबारा टीचर के चरणों को छूती है। टीचर उन्नति को देखकर बोले, "बेटी, मैंने आपको पहचाना नहीं, बेटी कौन हैं आप और आँखों में यह आँसू किसलिए? जुबान लड़खड़ाते हुए उन्नति बोली, "सर... सर मैं आपकी स्टूडेंट उन्नति जिसे आपने हमेशा प्रेरित किया मेरे माता-पिता को समझाया मुझे आगे की पढ़ाई पूरी कराने के लिए और आज मैं जो कुछ भी हूँ आपके कारण हूँ... सर मैं आज उस मुकाम पर पहुँच गई हूँ जहाँ मैं पहुँचना चाहती थी..... सर मैं...मैं कलेक्टर बन गई हूँ और आपको मैंने न जाने कहाँ-कहाँ नहीं ढूँढा और आज मुझे आप मिल गए। मेरा जीवन धन्य हो गया आपसे मिलकर।" टीचर की आँखों में भी आँसू आ जाते हैं, वह उन्नति को देखकर बहुत खुश होते हैं और कहते हैं, "आज तुम जैसा विद्यार्थी पाकर मैं भी धन्य हो गया।" वह उसे ढेर सारे आशीर्वाद देते हैं। दोनों की आखों में ढेर सारे आँसू होते हैं।

"आप कैसी भी परिस्थिति में हों, कहीं भी रहते हों यदि आप अपने लक्ष्य को फोकस करते हैं तो अवश्य ही आप सफल होंगे"

आप की जरूरत

पूनम मल्होत्रा, हिंदी अनुवादक

एक व्यक्ति था। उसके गुरु एक सन्यासी थे। वह व्यक्ति दुनिया दारी से ऊब सा गया था। वह अपने गुरु की तरह ही दुनियादारी छोड़कर सन्यासी बना चाहता था। उसने अपने परिवार को यह बात बताई तो सभी ने मना कर दिय। यह कहते हुए की हम सब आपसे बहुत प्यार करते है। फिर उसने अपने गुरु को यह बात बताई परंतु साथ ही कहा कि उनका घर-परिवार बच्चे और पत्नी उसे सन्यास लेने नहीं दे रहे हैं क्योंकि वह मुझसे बेहद प्यार करते हैं।

गुरु ने कहा "यह किसी सूरत में प्यार नहीं है"। गुरु ने उसे बहुत समझाया पर वह व्यक्ति नहीं मान रहा था। फिर गुरु ने कहा, "अच्छा ठीक है"। गुरु जी उस व्यक्ति को मठ में ले गए।

इसके बाद गुरु ने उसे योग विद्या सिखाई जिससे वह अपनी सांसे रोक कर मुरदे जैसी अवस्था में घंटो तक रह सकता था। यह सब सिखाने के बाद गुरु ने उसे एक योजना बताई और उसे घर भेज दिया।

दूसरे दिन वह व्यक्ति अपने घर पर मुर्दा पाया गया। परिवार के सारे लोग इकट्ठे हो गए। सभी रो रहे थे। विलाप कर रहे थे। वही उसकी पत्नी सबसे ज्यादा दुखी हो रही थी। पूरे घर में कोहराम मच गया था। सभी की आंखे नम थी। वह व्यक्ति मुर्दा अवस्था में था, मगर योग अभ्यास से आसपास के माहौल को महसूस कर सकता था और सुन सकता था।

उसे बड़ा सुकून मिला कि उसका परिवार उसे कितना प्यार करते हैं, अंतत: उसने संन्यास का इरादा त्यागने का फैसला कर लिया। कुछ ही देर बाद उस व्यक्ति के गुरु वहाँ पहुंचे। गुरु ने सभी को शांत किया। और अपने शिष्य के पड़े शव को देखा। कुछ देर शव को देखने के बाद उसके परिवार वालो को कहा इस शव में जान फुका जा सकता है। इस व्यक्ति को मैं अपनी विद्या से जिंदा कर सकता हूँ। यह बात सुनकर घर के सभी लोग बहुत खुश हो गए। सभी को एक उम्मीद की किरण नजर आ रही थी।

फिर सभी ने उस सन्यासी से कहा "तो आप यह काम जल्द से जल्द करिये"। इस पर उस सन्यासी ने कहा "एक समस्या है, इस कार्य लिए परिवार के किसी अन्य सदस्य को अपनी प्राण त्यागना होगा। यह सुन कर सभी लोगों की सांसे रुकी

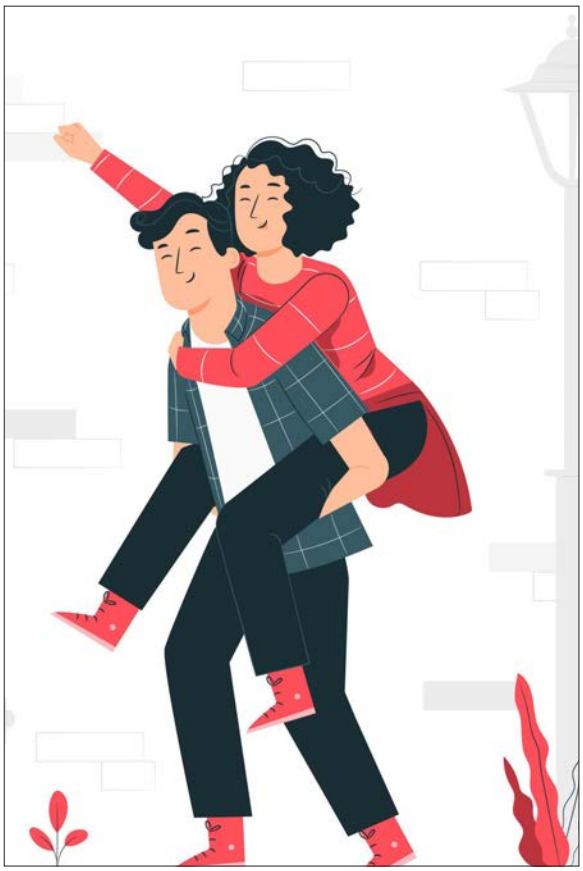

की रुकी रह गई। सभी ने एक दूसरे को देखा। सन्यासी ने परिवार के सभी सदस्यों से एक एक कर पूछा पर किसी ने भी हां नहीं कहा।

सभी ने अपनी जान की जरूरत बताई और अपनी जिम्दारी भी। सन्यासी ने फिर उस व्यक्ति के पत्नी से कहा, अगर यह नहीं रहे तो तुम कैसे जियोगी। उसकी पत्नी ने तुरंत जवाब दिया मैं इनके बगैर भी जी लूँगी।गुरु ने उस व्यक्ति के बच्चों से भी यही सवाल किया। उनका भी जवाब न ही था। फिर यही सवाल उस व्यक्ति के माता-पिता से किया। उनका भी जवाब एक ही था। इसके बाद गुरु उस व्यक्ति के शव के पास आए और बोले हे व्यक्ति तुम उठ खड़े हो जाओ। वह व्यक्ति उठ कर बैठ गया। फिर उसके गुरु वहाँ से जाने लगे। उसने अपने गुरु को रोका और गुरु से कहा, "मैं भी आपके साथ चलता हूँ"। अब उस व्यक्ति को समझ में आ गया था कि उसकी जरूरत उसके घर में कितनी है। अब वह एक पल भी अपने घर में रहना नहीं चाहता था।

ताबूत

मनोज शुक्ला, लेखाकार

एक दिन कार्मिक जब ऑफिस पहुंचे तो उन्हें गेट पर एक बड़ा सा नोटिस लगा दिखा "इस कंपनी में जो व्यक्ति आपको आगे बढ़ने से रोक रहा था कल उसकी मृत्यु हो गयी। हम आपको उसे आखिरी बार देखने का मौका दे रहे हैं, कृपया बारी-बारी से मीटिंग हॉल में जाएं और उसे देखने का कष्ट करें"।

जो भी नोटिस पढ़ता उसे पहले तो दुःख होता लेकिन फिर जिज्ञासा हो जाती की आखिर वो कौन था जो उसे आगे बढ़ने से रोक रहा था और वो हॉल की तरफ चल देता । देखते - देखते हॉल के बाहर काफी भीड़ इकठ्ठा हो गयी, गार्ड ने सभी को रोक रखा था और उन्हें एक - एक करके अन्दर जाने दे रहा था।

सबने देखा की अन्दर जाने वाला व्यक्ति काफी गंभीर हो कर बाहर निकलता मानो उसके किसी करीबी व्यक्ति की मृत्यु हुई हो। इस बार अन्दर जाने की बारी एक पुराने कर्मचारी की थी। उसे सब जानते थे, सबको पता था कि उसे हर एक चीज से शिकायत रहती है, कंपनी से, सहकर्मियों से, वेतन से हर एक चीज से, पर आज वो थोडा खुश लग रहा था। उसे लगा कि चलो जिसकी वजह से उसके जीवन में इतनी तकलीफे थीं वो गुजर गया। अपनी बारी आते ही वो तेजी से ताबूत के पास पहुंचा और बड़ी जिज्ञासा से उचक कर अन्दर झाँकने लगा। पर ये क्या अन्दर तो एक बड़ा सा आइना रखा हुआ था।

यह देख वह क्रोधित हो उठा और जोर से चिल्लाने के हुआ कि तभी उसे आईने के बगल में एक सन्देश लिखा दिखा - "इस दुनिया में केवल एक ही व्यक्ति है जो आपको आगे बढ़ने से रोक सकता है और वो आप खुद हैं। इस पूरे संसार में आप वो अकेले व्यक्ति हैं जो अपनी ज़िन्दगी में क्रांति ला सकता है।

आपकी ज़िन्दगी तब नहीं बदलती जब आपका बॉस बदलता है, जब आपके दोस्त बदलते हैं, जब आपके पार्टनर बदलते हैं, या जब आपकी कंपनी बदलती है। ज़िन्दगी तब बदलती है जब आप बदलते है, जब आप इस बात को समझते हैं कि अपनी ज़िंदगी के लिए सिर्फ और सिर्फ आप जिम्मेदार हैं। सबसे अच्छा रिश्ता जो आप बना सकते हैं वो खुद से बनाया रिश्ता है। खुद को देखिये, समझिये, कठिनाइयों से घबराइए नहीं उन्हें पीछे छोडिये, विजेता बनिए, खुद का विकास करिए और अपनी उस वास्तविकता का निर्माण करिए जिसका करना चाहते हैं।

शिक्षा: दुनिया एक आईने की तरह है। वो इंसान को उसके सशक्त विचारों का प्रतिबिम्ब प्रदान करती है। ताबूत में पड़ा आइना दरअसल आपको ये बताता है की जहाँ आप अपने विचारों की शक्ति से अपनी दुनिया बदल सकते हैं, वहां आप जीवित होकर भी एक मृत के समान जी रहे हैं। इसी वक़्त दहन कर दीजिये उस पुराने 'मैं' को और एक नए 'मैं' का सृजन कीजिये।

कंजूस सेठ

संगीता विज, सुपरवाइजर (डब्ल्यू.पी.)

एक बार धनिचंद नाम का एक सेठ था। वह बहुत कंजूस था। उसके पास कोई भी नौकर ज्यादा दिन तक नहीं टिकता था क्योंकि वह काम पर रखने से पहले नौकर के सामने तीन शर्त रख देता था। जिसको कोई भी पूरी नहीं कर पाता था। एक दिन मदन नाम का एक लड़का सेठ के पास नौकरी मांगने आया। वह सेठ से बोला वह बहुत दूर से आया है इसलिए उसको कुछ दे दे। सेठ बोला ठीक है मै तुमको नौकरी पर तो रख लूंगा लेकिन मेरी तीन शर्त है। मदन ने शर्त पूछी। सेठ बोला की तुमको दिन में या रात में जब भी में कोई काम बोलू तुमको वह करना पड़ेगा। दूसरी शर्त तुमको दिन में केवल एक बार ही भोजन मिलेगा। तीसरी शर्त यदि तुम खुद नौकरी छोड़ कर जाते हो तो तुमको मुझे एक साल का पैसा देना होगा।

मदन सेठ की सारी शर्त मान गया। सेठ बहुत कंजूस था। वह मदन को गोदाम से भारी भारी बोरियाँ लाने को कहता और दिन में केवल एक बार ही सूखा भोजन देता था। जिससे वह दिन प्रतिदिन कमजोर होता जा रहा था। कुछ दिन तक ऐसा ही चलता रहा। एक दिन सेठ की बीवी ने उसको भोजन में बहुत कम रोटी दी। मदन ने बोला इतना काम करने के बाद इतना कम भोजन तो सेठ ने बोला तू काम ही कितना करता है। मदन कुछ दिन बाद सेठ से नौकरी छोड़ने को बोला। सेठ ने उसको शर्त याद दिलाई। मदन ने अपनी माँ के कंगन बेचकर सेठ को पैसे दिए और गांव लौट आया।

एक दिन गांव में मदन को उसका दोस्त रमेश मिल गया। रमेश ने मदन से परेशानी का कारण पूछा तो मदन ने सारी बात रमेश को बता दी। रमेश ने सारी बात सुनकर सेठ का पता पूछा और मदन को चिंता न करने को कहा। रमेश उस सेठ के पास गया और उससे काम माँगा। सेठ ने उसको वहीं तीन शर्त बताई। रमेश बोला सेठ जी मै तो आपकी तीन शर्त मानने के लिए तैयार हूँ लेकिन आपको भी मेरी एक शर्त को मानना होगा। यदि आप मुझको नौकरी से निकालते है तो आपको मुझे एक साल की पगार देनी होगी।

सेठ ने सोचा ऐसी नौबत नहीं आएगी और उसकी बात मान गया। रमेश कुछ दिन तक काम करता रहा। एक दिन सेठ रमेश को बोला जाकर गोदाम से एक बोरी लेकर आओ फिर उसमे ताला लगा देना। उसने सेठ को सबक सिखाने की सोची उसने बोरी निकालने के बाद गोदाम का ताला बंद नहीं किया जिससे चोर उसकी सारी बोरी लेकर चले गए। सेठ ने अगले दिन रमेश से पूछा तो रमेश बोला उसने तो ताला लगाया था शायद चोर ताला भी तोड़ कर ले गए।

एक दिन सेठानी ने रमेश को बाजार से लकड़ी का गठर लाने को कहा। लकड़ी लाने के बाद रमेश ने पूछा यह लकड़ी का गठर कहाँ पर रखू। सेठानी ने गुस्से में बोला मेरे सिर पर रख दे। रमेश ने ऐसा ही किया लकड़ी का गठर सेठानी के सिर पर रख दिया। जिससे सेठानी चिल्लाई। सेठ ने रमेश को नौकरी से जाने को कहा। रमेश ने सेठ को शर्त याद दिलाई। सेठ उसको पैसे देने लगा तब रमेश ने सेठ को सारी बात बता दी की वह अपने दोस्त मदन का बदला लेने के लिए वहाँ आया है।

उसने सेठ से मदन के पैसे लौटाने को कहा। सेठ ने रमेश को मदन के पैसे लौटा दिए। रमेश ने गांव आकर पैसे मदन को दिए। जिससे मदन बहुत खुश हो गया और वहीं रह कर अपना काम कर खुशी खुशी अपना जीवन व्यतीत करने लगा।

अंधविश्वास पर कहानी

शिवाली पुहानी, लेखाकार

एक गरीब व्यक्ति बहुत परेशान था दिन रात मजदूरी करता था बहुत थक चूका था लेकिन उसके जीवन से यह कठोर परिश्रम रुक ही नही रहा था इसके लिए वो एक महात्मा के पास गया उसने महात्मा से बोला हे महात्मा मुझे कोई रास्ता दिखाये ताकि मेरा बोझ कम हो सके. महात्मा को उस पर दया आ गई उन्होंने उसे एक गधा दिया कहा तू इससे अपना काम करवा सकता हैं. गरीब मजदुर बहुत खुश हुआ हैं उसने सोचा कि अब उसका बोझ गधा उठायेगा इससे उसे राहत मिलेगी और वो अधिक काम भी ले सकेगा. मजदूर गधा साथ में ले गया लेकिन रास्ते में वो गधा मर गया. मजदूर को बहुत दुःख हुआ उसने उसी जगह उस गधे की कब्र बनाई पूरी विधि के साथ उसका अंतिम संस्कार किया. उसकी कब्र के पास आँख बंद कर मजदूर अपनी किस्मत के बारे में सोच दुखी हो रहा था. इतने में एक व्यक्ति वहाँ से गुजरा उसे लगा जरुर यह कोई दिव्य स्थान हैं तब ही यह आदमी यहाँ इस तरह ध्यान की मुद्रा में बैठा हैं उसने आकर उस स्थान पर मस्तक टेका और कुछ रूपये चढ़ा कर चला गया उसे देख कईयों ने यही किया. देखते ही देखते धन इक्कट्ठा हो गया. मजदूर वो धन लेकर महात्मा के पास गया और सारी बात विस्तार से कहकर बैठ गया. तब महात्मा मुस्कुराये उन्होंने उसके मजदूर के सिर पर हाथ रखते हुये कहा कि तू दुखी क्यूँ होता हैं वो गधा जीते जी तुझे जो ना दे सका वो मरकर दे रहा हैं. जब मनुष्य में अंधश्रद्धा इतना व्यापक रूप ले चुकी हैं तो उसमे तेरा क्या दोष ? तू बस इस धन का सही कार्य में उपयोग कर और तेरे शरण में आये लोगो को इस अंधविश्वास से पहचान करा. उन्हें खुद पर भरोसा रखने की सलाह दे. इस रास्ते पर भी तू अपना सैयम बना और लोगो को सही ज्ञान दे. बस व्यर्थ के आडम्बर और चमत्कार में मत पड़ना.

इस कहानी के यही शिक्षा मिलती हैं कि मनुष्य को कुछ भी देख कर उसका कुछ भी मतलन नहीं निकालना चाहिये बल्कि वास्तविक्ता को समझना चाहिये. इसके साथ ही यह कहानी उन साधुओं को भी शिक्षा देती हैं जिन पर कई लोग

विश्वास करते हैं उनका दायित्व हैं कि वे इस विश्वास का गलत फायदा ना उठाये और मनुष्य को सही राह दिखाये.

अंधविश्वास आज एक अभिशाप हैं जो देश की जड़ो को कमजोर कर रहा हैं और कहीं ना कही मनुष्य को कर्मठ बनाने के बजाय भाग्यवादी बना रहा हैं. इसे समझने एवम आस-पास के लोगो को समझाने की जरूरत हैं.

अंधविश्वास का उपाय

खुद पर भरोसा करें :
इसका एक मात्र उपाय हैं अपने आप पर भरोसा. कड़ी मेहनत लगन और संकल्प से अपने पथ पर चलने वालों को मंजिल मिलती ही हैं. इसके लिए कोई टोटका काम नहीं आता. मेहनत ही वो आखरी टोटका हैं जो आपको आपकी मंजिल तक पहुँचा सकता हैं.

डर को दूर करें : डर जिसके कारण ही अन्धविश्वास जन्म लेता हैं मनुष्य को सबसे पहले अपने डर का सही कारण तलाशना चाहिये और उस कारण का एक बेहतर उपाय खोजना चाहिये. डर जब ही महसूस होता हैं जब मनुष्य किसी न किसी बात को लेकर अपने अंदर कमी महसूस करता हैं. अगर मनुष्य उस कमी को पूरा कर दे तो खुद ही डर खत्म हो जाता हैं और आत्मविश्वास पनप जाता हैं. ऐसे स्थान पर अन्धविश्वास का कोई सांया नहीं होता.

कर्मठ बने : मनुष्य अगर कर्मशील हैं तो उसमे अंधविश्वास की कोई जगह नहीं होती. कई बार हम जो चाहते हैं वो हमें नहीं मिलता और हम उसे पाने के लिए कई तरह के अलग रास्ते अपनाते हैं जबकि शायद उस चीज को पाने के लिए जो काबिलियत होनी चाहिये वो हममे नहीं हैं और हम उसी बात को सही वक्त पर स्वीकार नहीं करते और कहीं न कहीं टोटके, तंत्र मंत्र और कई अवैज्ञानिक तरीकों का शिकार हो जाते हैं.मनुष्य को सदैव अपने कर्म पर विश्वास करना चाहिये और उस रास्ते पर मिलने वाली सफलता एवम असफलता से सीखना चाहिये.

सच्चाई का सहजता से स्वीकार करें : कई बार हमें सफलता मिलती हैं कई बार असफलता हाथ आती हैं. हम निराश हो जाते हैं जबकि हमें उस एक बिंदु पर खुद को परखने की जरुरत हैं कि क्या वास्तव में हम जिस राह पर हैं हम उसके लायक हैं या नहीं. अगर हैं तो हमें गलतियों से सीख कर आगे बढ़ना चाहिए और अगर आपको जवाब मिलता हैं कि नहीं हम लायक नहीं हैं तो उसे सहर्षता से स्वीकार करना चाहिये और अपने लिए नया और अपनी काबिलियत के मुताबिक रास्ता ढूंढना चाहिए.

यह सभी उपर लिखे वे सब उपाय हैं जो मनुष्य को किसी भी बात के अन्धविश्वासी होने से बचाते हैं. और इन्ही उपाय से मनुष्य में आत्म विश्वास बढ़ता हैं.

अंधविश्वास पर दोहे

मूरति धरि धंधा रखा, पाहन का जगदीश
मोल लिया बोलै नहीं, खोटा विसवा बीस

अर्थात :

यह कबीर दास जी का दोहा हैं जो बहुत विस्तार को अपने अंदर समाये हुये हैं वे कहते हैं आज लोग ईश्वर की मूर्ति को खरीद उसका धंधा करते हैं वो पत्थर की मूरत को भगवान कह कर खुद पैसा कमाते हैं जिस ईश्वर को वो मोल लेते हैं उसे खुद कुछ नहीं मिलता लेकिन उसके नाम पर एक खोटा बिना काम का व्यक्ति महान बन जाता हैं.

विस्तार यही हैं ईश्वर की आस्था मन एवम सत्कर्म से जाहिर होती हैं उसके लिए धार्मिक आडम्बर व्यर्थ हैं.

भेष फकीरी जे करै, मन नहिं आये हाथ।
दिल फकीरी जे हो रहे, साहेब तिनके साथ।

अर्थात :

महान कवी संत मलूक ने कहा हैं फ़क़ीर के कपड़े पहने,भगवा धारण करने से उस मनुष्य का मन, चरित्र निर्मल अर्थात साधू का नहीं हो जाता,उसके उपर ईश्वर का हाथ नहीं आ जाता हैं. जिसके मन में फकीराना भाव होते हैं ,जो मन से निश्छल होता हैं, ईश्वर उसी के साथ होता हैं।

माँ तू है आधार जीवन का

पूनम मल्होत्रा, हिंदी अनुवादक

माँ तू है आधार जीवन का, माँ तू है आधार जीवन का।
तू प्रतीक है प्यार की मैया ,तू संगीत जीवन का।
तू है रूप धरा की मैया, तू है रूप नारी शक्ति का।
जिसकी नहीं कोई परिभाषा , तू ही निराशा में है आशा।

तेरे डांट में प्यार ही प्यार है,यह है अपनेपन की परिभाषा।
तू सृजन है तू बलिदान है, तू स्नेह और प्यार की मूरत ।
तू प्रकृति की अमर धरोहर, तेरी भोली भाली सूरत।
तू निर्मल नदिया की धारा, तू शीतल ममता की छाया।

तू अखंड प्रज्वलित ज्वाला है, तूने जीवन जन्नत बनाया।
तू अनमोल है मोती जैसे, तू है चेतना की ज्योति।
जब स्पर्श बदन पर करती, पल में सब पीड़ा हर लेती।
तेरे आंचल में सुख पाया, मानो जग सारा हो समाया।
तुम बिन सूनी बगिया मैया, तुम बिन सारा जग है पराया।
बिन बोले सब समझ लेती हो, अपनी बांहों में भरती हो।
तेरा प्यार तनिक ना बिसरे,हिया बीच सदा रहती हो।
ब्रह्म वेला से ही मैया तेरी , दिनचर्या जब शुरू हो जाती।

पेट भरन को सूत काटती, सूत बेच रूपैया पाती।
रोटी खातिर चक्की चलाती, अपने पीठ पर हमें झुलाती।
उफ तक नहीं करती है माँ, झूलो बेटी, झूलो बेटा,
थक कर चूर होकर भी मीठ्ठी मीठ्ठी बातें करती।
फिर आसन बासन मांज, रसोई सबके लिए बनाती।
माँ जब तेरी याद सताये , अश्रु से अंखिया सदा भर जाती।
व्यथित हिया गुहार लगावे, माँ तू अब फिर लौट के आजा।
दर्द तुझे न होने दूँगी, माँ करूँगी तेरी सेवा आजा।

तुम हो जग में सबसे महान, तुझ पर सदा है सबको नाज।
कोटि कोटि नमन चरणो में, तेरे लिए है सदा सम्मान।
तेरे लिए है सदा सम्मान ।

माँ के चरणों में कोटि – कोटि नमन ।

नारी तेरे रूप अनेक

श्री प्रविन ग्रोवर, सहायक लेखाकार

नारी तेरे रूप अनेक, सभी युगों
और कालों में है तेरी शक्ति का उल्लेख ।
ना पुरुषों के जैसी तू है ना पुरुषों से तू कम है।।

स्नेह,प्रेम करुणा का सागर शक्ति और ममता का गागर ।
तुझमें सिमटे कितने गम है।।
गर कथा तेरी रोचक है तो तेरी व्यथा से आंखे नम है।

मिट-मिट हर बार संवरती है।।
खुद की ही साख बचाने को हर बार तू खुद से लड़ती है।
आंखों में जितनी शर्म लिए हर कार्य में उतनी ही दृढ़ता।।

नारी का सम्मान करो ना आंकों उनकी क्षमता।
खासतौर पर पुरुषों को क्यों बार बार कहना पड़ता।।

हे नारी तुझे ना बतलाया कोई तुझको ना सिखलाया।
पुरुषों को तूने जो मान दिया हालात कभी भी कैसे हों।।

तुम पुरुषों का सम्मान करो नारी का धर्म बताकर ये ।
नारी का कर्म भी मान लिया औरत सृष्टि की जननी है ।।

श्रृष्टि की तू ही निर्माता हर रूप में देखा है तुझको ।
हर युग की कथनी करनी है युगों युगों से नारी को ।।

बलिदान बताकर रखा है तू कोमल है कमजोर नहीं ।
पर तेरा ही तुझ पर जोर नहीं तू अबला और नादान नहीं ।।

कोई दबी हुई पहचान नहीं है तेरी अपनी अमिटछाप ।
अब कभी ना करना तू विलाप चुना है वर्ष का एक दिन ।।

नारी को सम्मान दिलाने का अभियान चलाकर रखा है ।
बैनर और भाषण एक दिन का जलसा और तोहफा एक दिन का ।।

हम शोर मचाकर बता रहे हम भीड़ जमाकर जता रहे ।
ये नारी तेरा एक दिन का सम्मान बचाकर रखा है ।।

मैं नारी हूं है गर्व मुझे ना चाहिए कोई पर्व मुझे ।
संकल्प करो कुछ ऐसा कि अब सम्मान मिले हर नारी को,
बंदिश और जुल्म से मुक्त हो वो अपनी वो खुद अधिकारी हो।

धीरज छूटो जाये

केदार सिंह, केयरटेकर

रूखी-सूखी यहाँ इतने साल खाई
चार की जगह दो रोटी ही पाई
कुछ दिन और अधपेट रह लेते
अगर यह महसूस न होता
कि जिनसे भरपेट भोजन की आस थी
वे तो थाली में छेद कर रहे हैं।

कितनी ही रातें ठिठुरती बिताई
चदरिया ही शाल, चदरिया ही रजाई कहलाई
कुछ समय और ठंड सह लेते
अगर यह अहसास न होता कि जिनसे तन ठकने की आशा थी
वे चदरिया को तार-तार करने में लगे हैं

झोपड़ी से न ठंड रूकी न बारिश
न लू के थपेड़े न आंधी की धूल
कुछ महीने और मौसम की मार खा लेते
यदि यह पता न चलता कि जिनसे मकान की उम्मीद लगाये हैं
वे झोंपड़ियों को तोड़ने पर तुले हैं

मजदूर की झोंपड़ी को
सेठ की हवेली ने हमेशा ही चिढ़ाया
इस अपमान को कुछ देर और पी जाते
यदि यह नजर न आता
कि जिनका यह खाई पाटने का वादा था
वे उस और चौड़ा करने मे मग्न हैं।

जंगल कितने ही कटे बगीचे भी उजड़ते रहे
इन बर्बाद वीरानों में दिन कुछ और बिता लेते
अगर यह ने प्रकट होता कि
जिनसे हरियाली की उम्मीद थी
वे रेगिस्तान फैलाये जाते हैं।

नशे और जुए की लत ने कितने घर बर्बाद किए
इस भूल को कुछ दिन और हम यों ही भुला देते
जो ये खबर न मिलती
कि जिनका नव-संस्कृति का दावा था
वे केसिनो खुलवाना चाहते हैं।

कितनी बार लुटा ये बदनसीब मुल्क
कभी अंग्रेजी से कभी चंगेजों से
इस लूट को कुछ रोज और
हम बर्दाश्त ही कर जाते जो यह रहस्य न खुलता
कि जिन पर लूट रोकने का दारोमदार है
उनके लिये भ्रष्टाचार ही नया शिष्टाचार है।

बदल सको तो चलो

मौ. शाकिब, हिंदी टंकक

एक सफर में धूप तो बहुत होगी तप सको तो चलो,
भीड़ तो बहुत होगी नई राह बना सको तो चलो।

माना कि मंजिल दूर है एक कदम बढ़ा सको तो चलो,
मुश्किल होगा सफर, भरोसा है खुद पर तो चलो।

हर पल हर दिन रंग बदल रही जिंदगी,
तुम अपना कोई नया रंग बना सको तो चलो।

राह में साथ नहीं मिलेगा अकेले चल सको तो चलो,
जिंदगी के कुछ मीठे लम्हे बुन सको तो चलो।

महफूज रास्तों की तलाश छोड़ दो धूप में तप सको तो चलो,
छोटी-छोटी खुशियों में जिंदगी ढूंढ सको तो चलो।

यही है ज़िन्दगी कुछ ख़्वाब चन्द उम्मीदें,
इन्हीं खिलौनों से तुम भी बहल सको तो चलो।

तुम ढूंढ रहे हो अंधेरो में रोशनी ,खुद रोशन कर सको तो चलो,
कहा रोक पायेगा रास्ता कोई जुनून बचा है तो चलो।

जलाकर खुद को रोशनी फैला सको तो चलो,
गम सह कर खुशियां बांट सको तो चलो।

खुद पर हंसकर दूसरों को हंसा सको तो चलो,
दूसरों को बदलने की चाह छोड़ कर, खुद बदल सको तो चलो।

जीवन

योगेश भट्ट, लेखाकार

कैसे गुजारनी है जिंदगी कैसे जीवन बसर करना है।
बेरहम धक्के सब कुछ सिखा देते हैं।।
चाहे कितनी मर्जी ऐशो आराम में गुजरी हो किसी की जिंदगी।
पर तकलीफ के चंद लम्हे ही जालिम जिंदगी की हकीकत बता देते है ।।

गरीब होना सबसे बड़ा अभिशाप है जमीन पर।
ना चाहते हुए भी जो जहर पिला देते है।।
चंद झटके नुकसान के ढाते है सितम बहुत।
जो विशालकाय हाथियों के पैरों को भी हिला देते है ।।

कुछ लम्हे हसीन अगर जिंदगी को मिल जाए।
तो वे बड़े से बड़े गम को भुला देते है।।
मिल जाए अगर मन मांगी दुआ यहां किसी को।
फिर तो सपने, हकीकत में अपनी गोदी में सुला लेते है ।।

अचानक आया हुआ रूपया पैसा, धन दौलत ऐशो आराम।
गरीब से गरीब इंसान पर भी एक अजब सा नशा चढ़ा देते है।।
जब यही गरीब अंधे होते है उसी दौलत की चकाचौंध में।
फिर तो अपने ही अपनों को एक एक पैसे की खातिर यहां
रूला देते है ।।

अचानक आई हुई कोई मजबूरी आफत।
पहाड़ जैसे दिल वाले इंसानो की भी सांसे फुला देती है।।
और आता है जब कभी ऊपरवाला अपनी पर।।
तो अच्छे भले स्वस्थ इंसान को भी जमीन से उठा देते है ।।

चंद छोटे छोटे लम्हों से बनी है सबकी जिंदगी।
कुछ पल इंसान को हंसा देते है और अगले ही कुछ पल रूला
भी देते है।।
जो ईमानदारी से निभाता है अपना मनुष्य होने का धर्म।
सिर्फ उसी को तकदीर के देवता अच्छा सिला देते है ।।

जीवन की उलझनें

अभिषेक शुक्ला, डाटा एंट्री ऑपरेटर

जीवन में उलझनें तो कई हैं
जीवन में उलझनें तो कई है।।
पर उनमें कुछ बाते भी है।
जो सिखाती पाठ हमें।।
वक्त आता ऐसा एक समय में।
कोई होता साथ नहीं आपके।।
हमदर्द बनने आते तो कई।
होता नहीं पर असली हमदर्द कोई।।

रह जाते अकेले तुम भीड़ में।
देते दोष दूसरों को अपने दुख का।।
हो असली गुनहगार तुम खुद अपने।
क्यों देते दोष दूसरों को अपनी खुशी का।।

और दुःख का कारण बनने का।
अधिकार उन्हें तुम्हारी खुशी।।
और दुःख का कारण बनने क्यों दें।
रखिये खुद को सर्वप्रथम।।

रखिये अपने विचार भी।
हो बेझिझख जियों जिंदगी।।
देखने का नजरिया बदलिये।
रहेंगे खुश सदा आप ।।

रखिये अपने पास हक अपना।
खुश रहिये उत्सव मनाते रहिये।।
जीवन में उलझनें तो कई हैं।
जीवन में उलझनें तो कई है।।

घर

आरती पठानिया

घर चाहे जैसा भी हो घर घर होना चाहिए
घर के हर कौने में एक एहसास होना चाहिए
खुलकर हंसने का माहौल होना चाहिए
सूरज कितना भी दूर हो उसको घर आने का रास्ता देना चाहिए
छत पर चढ़कर तारो को छूने की चाह होनी चाहिए
घर चाहे जैसा भी हो घर घर होना चाहिए

चाँद को छूने की कोशिश करनी चाहिए
बारिश में भीग कर जिंदगी की मस्ती लेनी चाहिए
कभी जिंदगी की भागदौड़ से दूर अपनी भी खोज लेनी चाहिए
जिंदगी को अपनी नजर से भी देखना चाहिए
घर चाहे जैसा भी हो घर घर होना चाहिए

कभी हो फुरसत तो पंतग को आसमान में चढ़ाना चाहिए
घर के सामने एक पेड़ होना चाहिए
जिस पर बेठे पक्षियों की चहचहाट होनी चाहिए
उनकी मधुर चहचहाट से सारा घर चहकना चाहिए
उम्र का हर दौर खुशनुमा होना चाहिए
घर के हर कौने में मधुरता का एहसास होना चाहिए
घर चाहे जैसा भी हो घर घर होना चाहिए

जीवन और शतरंज

दिनेश कुमार, मैसेंजर

जीवन और शतरंज में ।
आता नहीं है ठहराव कहीं भी।।
हारे हुए सिपाही के न रहते हुए भी।

चलते रहते हैं ये अनवरत ही।।
कौन किसे कब मात देगा, ये कहना मुश्किल है।
मगर ये सच है कि बैठे हैं घातिये हर ओर घात लगाकर।।

हर कदम पर सतर्क रहते लड़ना होगा।
यह नियम है, भावनाओं के आवेश में।।
मुश्किल हो जाता है, खेल और भी।

एक हल्की सी चूक पर समर्थ होते हुए भी।।
बजीर पिट जाता है मात्र प्यादे से ही।
होता है आकंलन सही और गलत का।।

खेल की समाप्ति पर हार –जीत ।
यश-अपयश और चलते है दौर मंथन के भी।।
चौकोर शतरंज की विसात पर मरे हुए प्यादे

हाथी, घोड़े पुनः खड़े हो जाते हैं ।।
बाजी ख़त्म होने पर नए खेल के लिए।
किन्तु जीवन-शतरंज की विसात पर।।

नहीं लौटता है कोई भी एक बार चले जाने के बाद।
रह जाती है शेष मात्र स्मृतियाँ ही जीवन और शतरंज में
अंतर है मात्र इतना सा ही।।

मैं हूँ सरकारी नौकरी का बाउंडरी मैन..!!

नवीन कुमार, फैलोस (राजभाषा)

इंटरमीडिएट के बाद मैंने एक,
सरकारी नौकरी का सपना देखा,

कहने को तो मैं प्रतियोगी छात्र हूँ,
पर किस्मत से कॉन्ट्रेक्ट के रोजगार पर हूँ,
मेरी किस्मत ना तो अच्छी थी ना ही बुरी,
नंबर न इतने खराब आते थे कि तैयारी छोड़ दूँ,
ना इतने अच्छे आते थे की नौकरी लग जाये।

ये 1, 2 नंबर से किस्मत 7 साल से मज़े ले रही थी,
दोस्तो के नौकरी पत्र देखकर अच्छा तो लगता था,
पर दिल ही दिल जो चुभन होती थी,
वो बयाँ भी ना कर सकता था।

हर साल पिछले कटऑफ से ज्यादा नंबर लाता था,
भर्ती प्रक्रिया के सभी चरणों को पास कर लेता था,
पर फाइनल मेरिट में ये दशमलव के नंबर ही कम रह जाते थे,
और सरकारी नौकरी फिर सालों दूर चली जाती थी।

दोष भी किसको देता,
घटती वेकैंसी को,
जनसंख्या वृद्धि को,
वेटिंग लिस्ट की कमी को,
5 साल लंबी भर्ती प्रक्रिया को,
या चीटिंग माफिया को,
ये कोचिंग वाले भी तो कम नहीं हैं।

थक भी नहीं सकता था,
रुक भी नहीं सकता था,
न ही कोई साहस देने वाला था,

ना ही बिजनेस करने के पैसे थे,
बार-बार सोचता था कि
सरकारी नौकरी मिलेगी भी या नहीं।
दिल पत्थर सा हो गया था,
या मन ही तानों से पथरा गया था,
कोई भी अनपढ़ घर आकर ज्ञान देकर जाता था,
चाहे रिश्तेदार हो या दोस्त हो,
शायद उनको पता ही नहीं चलता था,
अपने गुणगान के बखान में,
और लोगों की भीड़ में मेरी बेइज्जती करने में,

हर कोई मेरे जज्बातों से खेलता था।
खैर समझना तो घरवालों ने भी छोड़ दिया था,
और छोड़ें भी क्यों नहीं,
हर बार दशमलव से रह जाता था,
पता है कटऑफ नहीं फुल मार्क्स लाने थे,
पर पढ़ाई मैं भी तो पूरे मार्क्स के लिए करता था।

हँसती मौज करती पार्टी करती दुनियाँ के बीच,
सरकारी नौकरी के परीक्षा चरणों में उलझा रहता था,
कोई मेरे जैसा प्रतियोगी छात्र मिलता,
तो उससे भी परीक्षा से संबंधित बातें ही होती थी,
अब तो कोई शौक भी नहीं है,
कोई रिश्तेदार या परिवार तानो के अलावा बात नहीं करता,
और करे भी क्यों, जब सरकारी नौकरी नहीं है तो।

खैर जिंदगी एक जंग है,
हार मानना कभी सीखा ही नहीं मैंने,
फिर 2022 का वो दिन आया,
जब सरकारी नौकरी की सूची में अपना रोल नं. पाया।

स्मार्ट सिटी और महिला

मंजु सक्सैना, टेलिफोन ऑपरेटर

आज नहीं मैं अबला नारी
आधुनिक जगत की हूँ आधुनिक नारी
कमजोर भी हूँ और शक्ति भी हूँ
पर नहीं मैं अबला नारी
दया भी मुझमें ज्वाला भी मुझमें

पर नहीं मै अबला नारी
था वक्त जब मैं कुचली गई. अपमानित हुई
पर अब नहीं मैं अबला नारी
बेड़ियाँ तोड़ उड़ जाऊंगी, जो कैद किया तो
अब नहीं मैं अबला नारी

अपनी सोच के चश्में हटाकर
जान जाएगा मुझमें भी अभिमान है
हाँ नहीं मैं अब अबला नारी
जाने क्यू ये आंख नम हो जाती है
क्या ये गम के हैं या खुशी के

मन कहता है नहीं ये अभिमान है
अब नहीं तू अबला नारी
सीमा से हिमालय तक
छूना है उन उँचाईयों को
दूर तलक मुझे जाना है
सबको मुझसे आशा है
उन आशाओं को निभाना है
पुरूष प्रधान जगत में
अपना लोहा मनवाना है
अब नहीं मैं अबला नारी
किया जो आदर सम्मान मेरा
जी जाऊँगी, बस जाऊँगी
तेरा घर आबाद करूगी
अब नहीं मैं अबला नारी
आधुनिक देश की हूँ मैं नारी

खामोश

मनोज शुक्ला, लेखाकार

खामोशी किसी के लिए सुकून।
तो किसी के लिए शोर हो सकती है।।
खामोशी आपके अन्दर के शोर को ।
अपनाने के बाद वाली परिस्थिति है ।।

उस परिस्थिति को अपनाने के बाद।
उसे जीतने वाली परिस्थिति।।
खामोशी किसी के लिए सुकून।
तो किसी के लिए शोर हो सकती है।।

यो तो चुप रहकर कुछ कर दिखाना है।
ये तो बिना किसी को जताए कुछ करना है।।
वो भी ऐसी परिस्थितियों में जब ।
कोई भी आपके साथ न हो ।।

केवल आप अकेले हो।
खामोशी खुद से बात करने का।।
किसी भी परिस्थिति का हल।

निकालना खुद से बात करके।।

जब लगता है आप टूट चुके हो।
कोई आपको समझने वाला नहीं है।।
उस समय जब आप चुप हो जाते हो।
वो ही तो खामोशी है।।

खामोशी किसी के लिए सुकून हो सकती है।
तो किसी के लिए शोरगुल हो सकती है।।

काश ज़िंदगी एक किताब होती

संगीता विज, सुपरवाइजर (डब्ल्यू.पी.)

काश, जिंदगी सचमुच किताब होती
पढ़ सकता मैं कि आगे क्या होगा?
क्या पाऊँगा मैं और क्या दिल खोयेगा?
कब थोड़ी खुशी मिलेगी, कब दिल रोयेगा?
काश जिदंगी सचमुच किताब होती

फाड़ सकता मैं उन लम्हों को
जिन्होंने मुझे रुलाया है..
जोड़ता कुछ पन्ने
जिनकी यादों ने मुझे हँसाया है...
खोया और कितना पाया है?
हिसाब तो लगा पाता कितना
काश जिदंगी सचमुच किताब होती

वक्त से आँखें चुराकर पीछे चला जाता..
टूटे सपनों को फिर से अरमानों से सजाता
कुछ पल के लिये मैं भी मुस्कुराता,
काश, जिदंगी सचमुच किताब होती।

जिदंगी के वह लम्हे
जो हम कभी भुल नहीं पायेगें
काश उन लम्हों को में
अपनी किताब में संजोग कर रखता
न जाने जिदंगी की कब शाम हो जाये
वो तो पता चला पाता
और बाकी बची जिदंगी को अच्छे से जी पाता
काश, जिदंगी सचमुच किताब होती।

हमारी कोखजाई

अदिति चड्ढा, लेखाकार

पढ़ी लिखी तो क्या हुआ, हो तो तुम लड़की
जॉब कर ली तो क्या हुआ, हो तो तुम लड़की।

रात का अँधेरा है तुम्हारे लिए खतरनाक,
तुमसे ही ऊंची नीची होती खानदान की नाक।
मत भूलो, न समाज बदला है न ही हमलोग,
बेटियाँ आज भी है बाप के कंधो का बोझ।
आज भी रात को बाहर निकलने से पहले पड़ता हमें है सोचना,
बाप के चेहरे पर उड़ती है हवाई और माँ का सौ बार पूछना।

बेटा जवान तो बाप का सहारा
बेटी जवान तो बाप 'बेचारा'।

लड़की ज्यादा पढ़ लिख ली तो अच्छा रिश्ता कहाँ से आएगा,
लड़का जितना पढ़े , दहेज़ से उतना घर भर जाएगा।

कहीं कभी कोई लड़की छिड़ी तो "दोषी" लड़की ही होगी,
ज़रूर कपड़े "तंग" होंगे या रात में निकली होगी।

उसके कपड़े नहीं तुम्हारी मानसिकता "तंग" है,
अपने अधिकारों की खातिर लड़नी हमें अब जंग है।
आशाओं की किरण दिखी है, सवेरा होना बाकी है,
नयी सुबह की एक किरण, अँधेरा चीरने को काफी है।

बहुत हुआ सम्मान,
अब होगी आरपार की लड़ाई।
बराबरी का हक तुम हमें भीख में क्या दोगे,
पूरी क़ायनात है "हमारी कोखजाई"।

श्रद्धांजलि

श्रीमती इंदु सेनन (28 मई, 1960 – 27 मई, 2022)

श्रीमती इंदु सेनन ने दिनाँक 01.08.1983 को ई.पंच ऑपरेटर के पद पर कार्यग्रहण किया। तथा दिनांक 31.05.2020 को सेवानिवृत्त होना था लेकिन स्वस्थ्य संबंधित कारणों के चलते श्रीमती इंदु सेनन को दिनाँक 31.08.2019 को कनिष्ठ प्रणाली विश्लेषक के पद से वी.आर.एस. लेना पड़ा। श्रीमती इंदु सेनन का दिनाँक 27.06.2022 को स्वर्गवास हो गया।

इंदु सेनन जीवन परिचय

श्रीमती इंदु सेनन का जन्म 28 मई, 1960 को दिल्ली में आश्रम जिले में एक मध्यम वर्गीय परिवार में स्वः श्री राजेन्द्र प्रसाद बरहपुरिया जी के घर हुआ था। इनकी माता का नाम श्रीमती बिमला बरहपुरिया है। इनके पति का नाम श्री राजकुमार चंद्र सेनन है। इन्होंने अपनी प्राथमिक से लेकर स्नातक तक की शिक्षा दिल्ली में ही की। इन्होंने अपने कार्यस्थल के काव्य तथा अन्य प्रतियोगिताओं में कई बार पुरस्कार हासिल किए हैं। इन्हें स्केचिंग, बागवानी तथा कुकिंग में भी रूचि थी। इन्होंने कविताएँ लिखना कुछ वर्ष पहले ही आरंभ किया था। श्रीमती इंदु सेनन "अनोखी" के नाम से कविताएँ लिखती थीं।

हम श्रीमती इंदु सेनन जी की कविताओं के संग्रह से एक कविता श्रद्धांजलिस्वरूप प्रकाशित कर रहे हैं।

सन्तुष्टि

इंदु सेनन 'अनोखी'

तीन हिस्से जी लिया है
एक हिस्सा अभी बाकी है
सुब कुछ पाया जीवन मे
कुछ खास अभी भी बाकी है

जितना पाया खुश हूँ उससे
जितना चाहा मिला मुझे
फिर भी जीवन के कोने में
कुछ तो खाली खाली है
ढूंढा उसको यहाँ वहाँ
अंदर बाहर जहाँ तहाँ
उसका अंश न दिखता मुझको
धैर्य को छूता वो कहां
रिश्तों के दरवाजे पर झांका
दोस्तो के दिल में भी ताका
जाने किस कोने में बैठा
संतुष्टि का वो पैमाना

थक हार कर क्षितिज में भी
हर रंग में डूब कर भी
जाने कितने रंगों में
दिल भटक गया इंद्रधनुष में भी

फिर भी वही अरमान जगा है
दिल में एक तूफान उठा है
हरदम खोजूँ उस पल को
जिसके बिन कुछ अधूरा सा है
ढूंढा उसे संगीत में भी
कला में और नृत्य में भी
किताबों और शिक्षा में
बागवानी के सन्तोष में भी
वो तो कहीं खो गया है
जीवन के चौथे भाग में छुपा है
तीन भाग तो आये हिस्से
चौथे का द्वार अभी खुला है
जी भर जियूंगी इस भाग को
हरदम परखूंगी इसके साथ को

जाने न दूँगी दूर खुद से
प्यार करूँगी इसकी हर सांस को
देखते देखते समय निकल गया
कब सब्र का गुल खिल गया
मेरे अन्तर्मन से ही मेरा कलम
कुछ तो लिखने में खास हुआ

लिखना मुझको भाने लगा
जो खालीपन था अंदर
उनको हर अल्फ़ाज़ से
धीरे धीरे पाटने लगा

जो मैं ढूंढ रही थी बाहर
वही घुला था दिल के अंदर
मेरे कलम के पदचिन्हों से ही
सन्तुष्टि का ये दस्तक
दिल के मेरे द्वार खड़ा

सेवानिवृत्त कार्मिक

श्रीमती मीरा भगचंदानी – सहायक
श्रीमती मीरा भगचंदानी ने दिनाँक 01.01.1982 को एल.डी.सी. के पद पर कार्यग्रहण किया एवं दिनाँक 31.01.2022 को सहायक के पद से सेवानिवृत्त हुए। संस्थान की ओर से उनके उज्जवल भविष्य एवं उत्तम स्वास्थ्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

श्री नवीन माथुर, कार्यकारी अधिकारी (कार्यवाहक)
श्री नवीन माथुर, ने दिनाँक 01.11.1984 को अनुसंधान विश्लेषक के पद पर कार्यग्रहण किया एवं दिनांक 31.03.2022 को कार्यकारी अधिकारी (कार्यवाहक) के पद से सेवानिवृत्त हुए। संस्थान की ओर से उनके उज्जवल भविष्य एवं उत्तम स्वास्थ्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

श्रीमती संगीता विज – सुपरवाइज़र (डब्ल्यु.पी.)
श्रीमती संगीता विज ने दिनाँक 01.08.1983 को ई.पंच ऑपरेटर के पद पर कार्यग्रहण किया एवं दिनाँक 31.03.2022 को सुपरवाइज़र (डब्ल्यु.पी.) के पद से सेवानिवृत्त हुए। संस्थान की ओर से उनके उज्जवल भविष्य एवं उत्तम स्वास्थ्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

श्रीमती मंजु सक्सेना – टेलिफोन ऑपरेटर
श्रीमती मंजु सक्सेना ने दिनाँक 01.02.1984 को टेलिफान ऑपरेटर के पद पर कार्यग्रहण किया एवं दिनाँक 30.04.2022 को टेलिफान ऑपरेटर के पद से सेवानिवृत्त हुए। संस्थान की ओर से उनके उज्जवल भविष्य एवं उत्तम स्वास्थ्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

श्री राजकुमार, चौकीदार
श्री राजकुमार, ने दिनाँक 01.08.1982 को चपरासी के पद पर कार्यग्रहण किया एवं दिनांक 30.04.2022 को एम.टी.एस. के पद से सेवानिवृत्त हुए। संस्थान की ओर से उनके उज्जवल भविष्य एवं उत्तम स्वास्थ्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

राष्ट्रीय नगर कार्य संस्थान में वर्ष 2020-21 के दौरान सेवानिवृत्त हुए समस्त कार्मिकों के स्वस्थ एवं उज्जवल भविष्य की कामना करते है।

कार्मिको की सेवानिवृति के अवसर पर आयोजन

पत्रिका हेतु योगदान

संवाद गृहपत्रिका का लक्ष्य शहरीकरण, नगरीय एवं कार्यालय के अन्य विषयों पर जानकारी और कार्मिकों में विचारों का आदान-प्रदान बढ़ाना है। इस पत्रिका को गौरवपूर्ण बनाने के उद्देश्य से आप सब का सहयोग एवं योगदान अपेक्षित है। प्रकाशित रचना के रचनाकार को प्रति रचना 750/- रुपये की प्रोत्साहन राशि प्रदान की जाएगी। सभी कार्मिकों से यह भी अनुरोध है कि पत्रिका के अनुरूप निम्नलिखित विषयों पर अपने लेख एवं विचार इत्यादि निःसंकोच भेजें:

- शहरीकरण, नगर संबंधित विषय
- सरकारी नीतियों, शोध पर जानकारी, संदेश टिप्पणी
- ताजा विषयों समाचार क्लिपिंग आदि
- राष्ट्रवाद, देश के सामाजिक, आर्थिक, राष्ट्रीय एकता
- कोई प्रेरणा वर्धक या जन-सेहत एवं दार्शनिक विषय
- कार्यालय या सरकारी नियमों संबंधी जानकारी
- सेवानिवृत्त/कार्यालय छोड़ने वाले कार्मिकों के लिए संदेश
- नई प्रौद्योगिकी संबंधित कोई जानकारी
- रोजाना जीवन की महत्वपूर्ण जानकारी
- कोई अन्य कविता, निबंध इत्यादि
- शहरी प्रबंधन में श्रेष्ठ कार्य (केस अध्ययन)

किसी विशिष्ट व्यक्तित्व का साक्षात्कार तथा आगामी अंक हेतु आप अपनी प्रविष्टियाँ pmalhotra@niua.org पर भेज सकते हैं।

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3)

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के तहत निम्नलिखित दस्तावेजों को हिंदी एवं अंग्रेजी (द्विभाषी रूप) में किया जाना अनिवार्य है:- संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचनाएँ, प्रशासनिक एवं अन्य प्रतिवेदन, प्रेस विज्ञप्तियाँ, संसद के सदनों के समक्ष रखे जाने वाले प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन, संविदाएँ, करार, अनुज्ञप्तियाँ (लाइसेंस), अनुज्ञा पत्र (परमिट), निविदा सूचनाएँ, निविदा फॉर्म

नोट: राजभाषा नियम 1976 के नियम 6 के अनुसार, "यह सुनिश्चित करना ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्तियों का दायित्व होगा कि ऐसे दस्तावेज हिंदी और अंग्रेजी दोनों में तैयार किए जाएँ, निष्पादित एवं जारी किए जाएँ।"

प्रगित आज की गतिविधि है और आने वाले कल का आश्वासन।
जो अपने जीवन में कठिनाईयों से टकराते हैं वहीं विकास के पथ पर आगे बढ़ पाते हैं।
टिकाऊ विकास की अवधारणा सतत विकास

रा न का स

रा.न.का.सं. का 46वां वर्ष

रा न का स

राष्ट्रीय नगर कार्य संस्थान

प्रथम तल, कोर 4बी भारत पयार्वास केंद्र, लोधी रोड नई दिल्ली□110003
(टेलीफोन) 24617517, 24617543, 24617595, 24617769
(ईमेल) niua@niua.org □ (वेबसाइट) www.niua.in